A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 15 सितंबर, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 18, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

04 - कर्मचारियों और नियोक्ताओं के पक्ष में अदालत का फैसला

05 - घटित होते इतिहास का आईना

06 - धैर्य, परिश्रम, सतत प्रयास मंत्र को सफलता का आधार बना डाला हर्षिता दवे ने...

07 - संपादित होने वाले कार्यों की मानिटरिंग व्यवस्था क्रियान्वित...

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

प्रहलाद की 'परिक्रमा' आत्मान्वेषण का पराक्रम

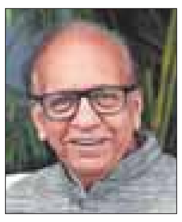

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

एक किताब के रूप में 'परिक्रमा कृपा-सार ' अक्षर-विहान की ऐसी भाव-भूमि है, जहां मध्य प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल राजनीति की खुरदरी और खुश्क जमीन पर अध्यात्म के नितांत बिरले अनुभवों की अनुभूतियों मे सराबोर नजर आते हैं। नर्मदा खंड सेवा संस्थान मगरौन की ओर से तैयार इस पुस्तक 'परिक्रमा कृपा-सार' का विमोचन रविवार,14 नवम्बर,2025 को इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आरएसएस के संघ-प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने किया। परिक्रमा एवं पद-यात्राएं भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रही हैं। आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए परिक्रमा और पदयात्रा का चलन विभिन्न परम्पराओं में सहज प्रवृत्ति माना जाता है। परिक्रमा का यही संस्कार प्रहलाद पटेल में भी परिलक्षित होता है। उत्तर भारत में चार-धाम यात्राओं की कहानियां इस संस्कार का बीज हैं।

प्रहलाद पटेल कदाचित मध्य प्रदेश के मात्र ऐसे नेता होंगे, जिन्होंने दो बार नर्मदा की पैदल-परिक्रमा की है। प्रहलाद पटेल ने पहली बार 1994-1996 के दरम्यान अपने परम पूज्य गुरू देव बाबा श्रीजी के सानिध्य में की थी। दूसरी परिक्रमा उन्होने 2005 में अपनी पत्नी और साथियों के साथ सम्पन्न की थी। यह पुस्तक उनके पहली यात्रा के दरम्यान लिख गए लेखों का संकलन है। ये लेख उन्होनें जबलपुर में बाबा श्रीजी के चातुर्मास के दौरान लिखे थे। लेकिन प्रहलाद पटेल के यात्रा-वृतांत महज दो नर्मदा परिक्रमाओं तक सीमित नहीं है। उनकी जिंदगी में अलग-अलग मौकों पर की गई यात्राओं का विवरण उनकी वैचारिक-यात्रा में नए आयाम जोड़ता महसूस होता है।

नर्मदा परिक्रमा से जुड़े तीस साल पुराने लेखों का यह संकलन एक राजनेता के रूप में प्रहलाद पटेल की आध्यात्मिक अवधारणाओं का ऐसा लेखा-जोखा है, जो उनके राजनीतिक-रोड मैप को ज्यादातर बदरंग सियासी-राहों से अलग रेखांकित करता है। उनका रोड मैप हरा-भरा और भावुक तकाजों का दस्तावेज है, जिसकी कहानी दिलचस्प है। प्रहलाद पटेल का राजनीतिक जीवन दशकों पुराना है। वो कहते हैं कि 'मैने इस पुस्तक को 30 साल तक छपने नहीं दिया,क्योंकि मेरा भाव था कि मैं नर्मदा को बेचना नही चाहता। लेकिन उम्र के 65 साल के इस मुकाम पर यह भाव बना कि संस्मरणों को प्रकाशित किया जाना चाहिए।'

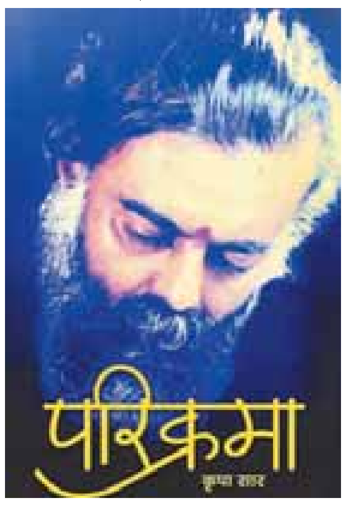

बहरहाल, इस निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए। क्योंकि यह किताब मौजूदा राजनेताओं और राजनीति को इस बात के लिए उत्प्रेरित करती है कि नदी और जल-संवर्धन के दिशा में हमारी प्राथमिकताएं क्या और कैसी होनी चाहिए? वैसे भी प्रहलाद पटेल की राजनीति का डीएनए देशज है और उसमें माटी की सौंधी खुशबू महसूस होती रहती है। वो कहते हैं कि मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने जब 'जल गंगा संवर्धन अभियान' की शुरूआत की थी तो उन्होने अलग तरीके से इस अभियान में योगदान देने का संकल्प लिया था।

प्रहलाद पटेल का कहना है कि मध्य प्रदेश को नदियों का मायका कहा जाता है। नदियों के मायके में नदियों के उद्गम स्थलों की दशा को समझा और परखा जाना चाहिए। इस विचार के साथ उन्होंने रायसेन जिले के ग्राम झिरी में बेतना नदी के उद्गम स्थल से इस अभियान की शुरूआत की थी। प्रहलाद पटेल अभी तक 108 नदियों के उदगम् स्थलों का पवित्र जल एकत्रित कर चुके हैं। नदियों के उदगम् स्थलों पर जल-संग्रह महज एक पौराणिक कर्म-काण्ड ही नही है, बल्कि इन नदियों के उद्गम स्थलों के बदमिजाज हालातों से रूबरू होने का एक उपक्रम है, जो हमारी सरकार और उनके कर्ताधर्ताओं को सजग, सतर्क और संवेदनशील बनाने के लिए जरूरी है। नदियों के मायके मध्य प्रदेश में कई नदियों के उदगम् स्थलों के हालात चिंतनीय हैं। उनकी ओर अतिरिक्त ध्यान देने की जरूरत है।

भारत में धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पद-यात्राओं और परिक्रमाओं का इतिहास काफी पुराना है। महात्मा गांधी के दांडी मार्च जैसे अपवादों के अलावा राजनीति में पद-यात्राओं की प्रभावशीलता की मियाद ज्यादा नहीं रही है, लेकिन धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक यात्राओं की उपलब्धियों की प्रभावशीलता समाज में चिरकाल तक महसूस होती रही है। त्रेता युग में राम के वन-गमन की कहानी चिर-अमर है, जबकि अगस्त्य मुनि द्वारा विंध्याचल पर्वत को पार करके उत्तर और दक्षिण भारत को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने का महात्म्य हमारे ग्रंथों का स्थायी भाव है। केरल में जन्मे आदि-गुरू शंकराचार्य के भारत-भ्रमण के दरम्यान चार धाम की स्थापना ने सनातन धर्म में नई ऊर्जा जोड़ने का काम किया था।

राम, अगस्त्य मुनि और शंकराचार्य और महात्मा गांधी की पद-यात्राओं की तथा-कथाओं के तारतम्य में 'परिक्रमा' पुस्तक मे प्रहलाद पटेल का खुद से यह सवाल मौजूं है कि 'पदयात्राओं से हमे क्या मिला' ? प्रहलाद पटेल की 176 पेज की किताब 'परिक्रमा सेवा-सार' में इस सवाल के जवाब उनके गुरू श्रीश्रीबाबाश्री की आध्यात्मिक दीक्षाओं की भाव-भूमि परअलग-अलग तरीके से रेखांकित है। सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति का त्रिगुणात्मक रूपांकन है,जो समस्त सृष्टि में मौजूद है। जीवन के सार-तत्व के रूप में तन्मयता, तरलता और तात्विकता जैसे गुणों की मीमांसा की गहरी द्रष्टि देती महसूस होती है।

प्रहलाद पटेल का यह यात्रा-वृत्तांत गोलाकार है, जो निसर्ग को एड्रेस करता है और घूम-फिर कर अपने ही भीतर अपनी ही तफ्तीश करने लगता है। प्रहलाद पटेल ने नर्मदा की दो परिक्रमाओं के अलावा भी राजनीतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक उद्देश्यों से की गई कोई डेढ़-दो दर्जन पद-यात्राओं का विवरण भी इसमे दिया है। प्रहलाद पटेल कहते हैं कि नर्मदा परिक्रमा का उपक्रम महज आत्मावलोकन से आगे आत्मान्वेषण का अभियान था, लेकिन बाबा का स्पष्ट मत था कि अपनी तलाश के साथ ही मां रेवा से मिलने वाले हर नाले और नदी के उद्गम को भी खंगालना है कि गंदगी कहां से आ रही है?

प्रहलाद पटेल लिखते हैं कि देश के गन्दे नालों के उद्गम पर पहुंचकर इस लेखनी के माध्यम से कह पा रहा हूं कि यह परिक्रमा प्रारम्भ है, अनवरत है। दुर्भाग्य यह है कि जिनको इस गंदगी को समाप्त करने का कर्म निभाना है,वो तट पर बैठ कर भ्रान्ति अथवा गंदगी बढ़ा रहे हैं और समाज में अविश्वास फैला रहे है कि 'गंदगी दूर नही हो सकती'। बाबा का कहना था कि हर गंदे नाले के उद्गम तक पहुंच कर ही समस्या का निदान ढूंढा जा सकेगा। मौजूदा पीढ़ी के लिए यह सीख महत्वपूर्ण है कि गंदगी के स्रोत ही पवित्रता का उदगम हैं, धर्म और कर्म का पहला सोपान है, जो अनवरत चलता रहता है और यही परिक्रमा है।

संघ प्रमुख मोहन भागवत बोले

दुनिया में संघर्ष की वजह स्वार्थ और अहंकार

भोपाल/इंदौर (नप्र)। इंदौर में संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत रविवार को नर्मदा खंड सेवा संस्थान के कार्यक्रम में शामिल हुए। यहां उन्होंने मंत्री प्रहलाद पटेल की लिखी पुस्तक 'कृपा सार' का विमोचन किया। सीएम डॉ. मोहन यादव और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि मुझे बताया गया कि पुस्तक में नर्मदा परिक्रमा के अनुभव का वर्णन है। इसे मैंने मान्य कर लिया है क्योंकि नर्मदा परिक्रमा बहुत बड़ी श्रद्धा का विषय है। हमारा देश श्रद्धा का देश है। यहां कर्मवीर भी हैं और तर्कवीर भी हैं।

तर्क और शास्त्रार्थ में हमारा देश कहीं भी पीछे नहीं है। लेकिन, हम लोग जानते हैं कि श्रद्धा और विश्वास से जीवन चलता है। जिन्हें जड़वादी कहा जाता है वे भी आजकल इसको मानते हैं। दुनिया श्रद्धा और विश्वास पर चलती है। आज दुनिया में संघर्ष इसलिए है, क्योंकि सभी के मन में अहम है, जिसमें केवल यह सोच है कि मैं ही आगे बढ़ूं और दूसरा कोई आगे ना बढे, इसलिए सभी आपस में भिड़े हुए हैं। भागवत ने कहा कि निजी स्वार्थ और अहंकार दुनिया में संघर्ष और टकराव की जड़ हैं।संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत नर्मदा खंड सेवा संस्थान के कार्यक्रम में शामिल हुए।

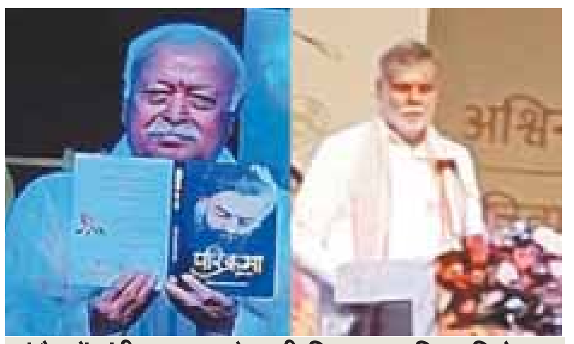

इंदौर में मंत्री प्रहलाद पटेल की किताब का किया विमोचन, कहा-दुनिया श्रद्धा और विश्वास पर चलती है

श्रद्धा और विश्वास को हमारे यहां भवानी-शंकर नाम दिया- भागवत ने कहा- हमारे यहां जो श्रद्धा है। यह कहीं सुनने से नहीं आई है। यह काल्पनिक श्रद्धा नहीं है। जो कोई प्रयास करेगा वो उसे ले सकेगा। ऐसा हम सुनते हैं कि वैज्ञानिक बुद्धि से चलो। लेकिन, वैज्ञानिक बुद्धि क्या है यानी प्रत्यक्ष प्रमाण चाहिए। लेकिन, आज ऐसा कहने वाले लोगों के पास प्रत्यक्ष प्रमाण होगा ऐसा नहीं है।

लेकिन, हमारे भारत की जो श्रद्धा है उस श्रद्धा के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण साझा करने वाले लोग हैं। आपको वो प्रमाण लेना है तो प्रयास और प्रयोग करने होंगे। इसलिए श्रद्धा और विश्वास की भावना को हमारे यहां साकार रूप दिया है। उनको भवानी और शंकर रूप दिया है। भगवान अपने अंदर हैं। बिना श्रद्धा और विश्वास के उसके दर्शन नहीं कर सकते हैं।

पहले दर्जी काटते थे गला और जेब, अब पूरी दुनिया कर रही- संघ प्रमुख ने कहा कि गला काटने का काम, जेब काटने का काम पहले दर्जी करते थे, अब पूरी दुनिया कर रही है। बाज और कबूतर की कहानी सिखाती है कि ज्ञान और कर्म दोनों जरूरी हैं। सिर्फ ज्ञानी होकर निष्क्रिय रहना गड़बड़ी करता है।

राजनीति में भी परिक्रमा करनी पड़ती: स्वामी ईश्वरनंद

स्वामी ईश्वरनंद ने नर्मदा परिक्रमा को लेकर कहा कि परिक्रमा में जल, वायु, अग्नि, आकाश और यहां तक कि शरीर का खून भी शामिल होकर एक दिव्य अनुभव प्रदान करता है। परिक्रमा केवल यात्रा नहीं, बल्कि जीवन और प्रकृति के साथ आत्मिक जुड़ाव का प्रतीक है। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि राजनीति में ऊपर उठने के लिए भी परिक्रमा करनी पड़ती है।

कार्यक्रम में सीएम डॉ. मोहन यादव, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल और भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा भी मौजूद रहे।

कार्यक्रम में ये भी रहे मौजूद

डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल, मंत्रीगण राकेश शुक्ला, चैतन्य काश्यप, कैलाश विजयवर्गीय, तुलसीराम सिलावट, विश्वास सारंग, मेयर पुष्यमित्र भार्गव, विधायक गोलू शुक्ला सहित कई अन्य जनप्रतिनिधि और शहीद परिवार पहले ही मौजूद हैं। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल और पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

सुप्रभात

बहुत गहरा हो जख्म तो
निशान नहीं छोड़ता।
वो बदलने की कोशिश में तो है
पर पहचान नहीं छोड़ता।
मुझे बता देता गर मुझसे शिकायत थी।
इस तरह कह के मुझको मेरी जान,
नहीं छोड़ता।
दिल भी एक घायल परिंदे की तरह,
फड़फड़ाता है पर उड़ान नहीं छोड़ता।
बस गए शहर में बच्चे उसके,
वो बूढ़ा अपने गाँव का
मकान नहीं छोड़ता।
वसीयत में जमीन का
टुकड़ा बच्चों के नाम।
पर अपने हिस्से का
आसमान नहीं छोड़ता।
गरीबी, बीमारी, भूख
कुचल देती है गुरूर।
वरना यूहीं कोई ईमान नहीं छोड़ता।
मंजिल करीब थी तो उसने हाथ छोड़ा,
जलने से पहले तो दुश्मन भी
शमशान नहीं छोड़ता।

- कुमार अंशुमान

मेरे लिए तो मेरी जनता ही भगवान हैः पीएम मोदी

असम में 19 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट की शुरुआत की

गुवाहाटी (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी के असम दौरे का रविवार को दूसरा दिन था। उन्होंने नुमालीगढ़ में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा- हम विदेश से बिजली और ईंधन आयात करते हैं और बदले में उन्हें लाखों रुपए देते हैं। इससे वहां रोजगार और आमदनी बढ़ती है। इसे बदलना जरूरी है। भारत का आत्मनिर्भर बनना जरूरी है। प्रधानमंत्री ने इससे पहले दरांग में जनसभा की। इसमें उन्होंने कहा- जब भारत सरकार ने भूपेन हजारिका को भारत रत्न दिया था, उस दिन कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा था- मोदी, नाचने-गाने वालों को भारत रत्न दे रहा है। पीएम बोले- मैं भगवान शिव का भक्त हूं, सारा जहर निगल लेता हूं, मुझे कितनी भी गालियां दें। लेकिन जब बेशर्मी के साथ किसी और का अपमान होता है, तो मुझसे रहा नहीं जाता है। मेरे लिए तो मेरी जनता ही भगवान है। मेरी आत्मा की आवाज वहां नहीं निकलेगी तो कहां निकलेगी। प्रधानमंत्री ने दरांग में 6300 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का उद्घाटन किया। इनमें दरांग मेडिकल कॉलेज-अस्पताल, जीएनएम स्कूल और बीएससी नर्सिंग कॉलेज शामिल हैं। इसके अलावा पीएम ने नुमालीगढ़ में 5,000 करोड़ रुपए का बांस आधारित एथेनॉल प्लांट का उद्घाटन भी किया। इससे पहले पीएम मोदी शनिवार को गुवाहाटी पहुंचे और लोकगायक भूपेन हजारिका की विशेष श्रद्धांजलि सभा में शामिल हुए।

कांग्रेस की सरकार बांस काटने पर जेल में डाल देती थी

प्रधानमंत्री ने कहा- आज यहां बांस से एथेनॉल बनाने की शुरुआत हुई है, इसका फायदा हमारे किसानों को होगा। आज हम बांस से एथेनॉल बनाने जा रहे हैं। लेकिन वो दिन भी भूलना नहीं है, जब कांग्रेस बांस काटने पर जेल में डाल देती थी।

कांग्रेस ने असम को अलगाव, हिंसा और विवाद दिए

प्रधानमंत्री ने कहा- हमारी सरकार असम की पुरानी पहचान को संरक्षित करते हुए आधुनिक पहचान से जोड़ रही है। कांग्रेस ने असम और दूसरे नॉर्थ ईस्ट राज्यों को अलगाव, हिंसा, विवाद दिए। भाजपा असम को विकास और विरासत से समृद्ध बना रही है। मोदी ने कहा- हमारी सरकार ने असमिया भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया। मुझे खुशी है कि यहां कि सरकार नई एजुकेशन पॉलिसी को भी तेजी से लागू कर रही है। कांग्रेस ने असम के महान सपूतों को भी कभी सम्मान नहीं दिया। प्रधानमंत्री ने आगे कहा- इस धरती पर वीर लाचित बरफुकन जैसे योद्धा हुए।

मध्यप्रदेश के हर नगरीय निकायों में बन रहे हैं गीता भवन

भगवान श्रीकृष्ण की लीला स्थलों पर हम बना रहे हैं श्रीकृष्ण पाथेय तीर्थ : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। हमारे पूर्वजों ने लोकतंत्र रूपी पौधे की जड़ों को इतनी खूबसूरती से सींचा है कि अब यह विशाल वटवृक्ष बन चुका है। भगवान श्रीकृष्ण सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक व्यवस्था के पक्षधर थे। उन्होंने अपने राजकाज में लोकतांत्रिक मूल्यों और सभी के विचारों को महत्व दिया। हमारी सरकार भगवान श्रीकृष्ण के बताए मार्ग पर ही चल रही है। उनके विचार हमारे लिए अमूल्य पूंजी और हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार भगवान श्रीकृष्ण की स्मृतियों को चिरस्थाई बनाने के लिए मध्यप्रदेश एवं देश में उनकी लीला स्थलों को चिन्हित कर श्रीकृष्ण पाथेय विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। श्रीकृष्ण के लीला स्थलों को तीर्थ के रूप में विकसित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को पटना (बिहार) में भगवान श्रीकृष्ण के विचारों का जन समरस 'सांस्कृतिक सम्मेलन' को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने यहां अखिल भारतीय यादव महासभा अहीर की बिहार इकाई द्वारा आयोजित नियमित समाज सुधार श्रृंखला में भी सहभागिता की और समाज सुधार की दिशा में अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सांस्कृतिक सम्मेलन में कहा कि भगवान श्रीकृष्ण यदुकुल के महान गौरव हैं। वे योगीराज थे। सभी ललित कलाओं में निपुण थे। उन्होंने मात्र 11 साल की उम्र में कंस जैसे शक्तिशाली एवं आततायी राजा से युद्ध कर तत्समय लोकतंत्र के मूल्यों की रक्षा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्व को गीता का ज्ञान देने वाले भगवान श्रीकृष्ण के सम्मान में हमारी सरकार मध्यप्रदेश के हर नगरीय निकायों में गीता भवनों का निर्माण करने जा रही है। भगवान श्रीकृष्ण के गुरु सांदीपनि के नाम पर हम मध्यप्रदेश में 300 से अधिक स्थानों पर सांदीपनि विद्यालयों की स्थापना कर गुरुकुल शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पाटलिपुत्र (पटना) और अवन्तिका (उज्जैन) देश के सबसे पुराने नगर हैं। कभी पाटलिपुत्र में सम्राट, तो अन्वतिका (उज्जैन) में युवराज विराजते थे। बौद्ध धर्म के विचारों का प्रवाह बिहार से ही पूरे विश्व में फैला। इस मायने में बिहार ने पूरे विश्व को शांति, अहिंसा और सामाजिक सद्भावना की दिशा दी है। उन्होंने कहा कि भारत की मूल पहचान हमारी समृद्ध संस्कृति है। यदि आप विदेश में भारत का नाम लिए बगैर सिर्फ इतना कह दें कि आप राम-कृष्ण-बुद्ध की धरती से आएं हैं, तो भी विदेशी यह समझ जाएंगे कि हम भारतीय हैं। यही हमारी मूल पहचान है। उन्होंने कहा कि भगवान गोपाल श्रीकृष्ण की इस पावन धरती पर हम अपनी संस्कृति, अपने मूल्यों और अपने विचारों पर दृढ़ता से आगे बढ़ें, यही हमारा संकल्प होना चाहिए।

बिहार के चौथे एयरपोर्ट का आज पीएम करेंगे उद्घाटन

● कोलकाता के बाद पूर्णिया पूर्वी भारत का सबसे बड़ा एयरपोर्ट

पूर्णिया (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 सितंबर को पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन करेंगे। कोलकाता के बाद ये पूर्वी भारत का और बिहार का सबसे बड़ा एयरपोर्ट है। इसका रनवे 2800 मीटर लंबा है, जिससे बड़े विमानों के टेकऑफ और लैंड करने में भी परेशानी नहीं होगी। पूर्णिया एयरपोर्ट में 4 हजार स्क्वायर मीटर में बना टर्मिनल भवन सभी हाईटेक सुविधाओं से लैस है। एयरपोर्ट और टर्मिनल का डिजाइन हाईटेक तरीके से बना है। एयरपोर्ट के टर्मिनल बनाने में इस बात का ध्यान रखा गया है कि आने वाले 40 सालों तक इसकी यूटिलिटी बनी रहे।

46 करोड़ की लागत से बनी टर्मिनल बिल्डिंग

पूर्णिया एयरपोर्ट की घोषणा साल 2015 में हुई थी। पीएम नरेंद्र मोदी ने 2 नवंबर 2015 को शहर के रंगभूमि मैदान में विधानसभा चुनाव के दौरान एक सभा को संबोधित करते पूर्णिया एयरपोर्ट बनवाने की घोषणा की थी। एयरपोर्ट के लिए 69 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया गया है। एयरपोर्ट पूर्व सैन्य हवाई अड्डा है, जिस पर तात्कालिक रूप से हवाई सेवा शुरू हो रही है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 15 सितंबर 2025

"जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।"
चाणक्य नीति

● नक्सलियों से मुक्त होने के बाद सरकार का बड़ा फैसला

अब करेंगुट्टा पहाड़ी पर बनेगा जंगल वारफेयर कॉलेज

देश भर के सुरक्षा बलों को मिलेगा यहां पर विशेष प्रशिक्षण

नई दिल्ली/बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले की करेंगुट्टा पहाड़ी, जो कभी नक्सलियों का सबसे सुरक्षित गढ़ मानी जाती थी, इसी पहाड़ी पर जल्द ही देश का दूसरा जंगल वारफेयर कॉलेज स्थापित किया जाएगा। इस कॉलेज में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, छत्तीसगढ़ पुलिस, डीआरजी, कोबरा और अन्य सशस्त्र बलों को विशेष प्रशिक्षण मिलेगा। इसका निर्माण केंद्र सरकार करेगी, जबकि एप्रोच रोड और अन्य बुनियादी सुविधाएं राज्य सरकार उपलब्ध कराएगी। प्रदेश में इससे पहले साल 2004 में कांकेर में काउंटर टेररिज्म एंड जंगल वारफेयर कॉलेज खोला गया था। करेंगुट्टा पहाड़ी पर बनने वाला यह नया केंद्र नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई को और मजबूत करेगा। यह वही इलाका है जिसे इसी वर्ष सुरक्षा बलों ने नक्सलियों के कब्जे से मुक्त कराया है। ऑपरेशन के दौरान 21 दिन तक चली कार्रवाई में 31 नक्सली ढेर हुए।

नक्सलियों की झूठी विचारधारा अब दम तोड़ रही

हाल ही में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने यहां चलाए गए ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट में शामिल जवानों से मुलाकात कर उन्हें सम्मानित किया। इस मौके पर पूरे देश ने सुरक्षा बलों के साहस और पराक्रम को सलाम किया। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने स्पष्ट कहा कि, नक्सलियों की झूठी विचारधारा अब दम तोड़ रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ विश्वास, विकास और शांति की नई सुबह की ओर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि मार्च 2026 तक 'नक्सलमुक्त भारत' का संकल्प साकार होगा।

नेपाल हिंसा में मारे गए लोग शहीद कहलाएंगे

● पीड़ितों को 10 लाख का मुआवजा भी देगी नेपाल की सरकार

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल की अंतरिम प्रधानमंत्री सुशीला कार्की ने कार्यभार संभालने के बाद कहा कि जेन-जेड आंदोलन में मारे गए लोगों को शहीद घोषित किया जाएगा। पीड़ितों के परिजनों को 10-10 लाख नेपाली रुपए का मुआवजा भी दिया जाएगा। हिंसा में 51 लोगों की मौत हुई थी, जिसमें 1 भारतीय महिला भी थी। कार्की ने भ्रष्टाचार को खत्म करने का भी संकल्प लिया। उन्होंने कहा, नेपाल में पहली बार 27 घंटे तक लगातार आंदोलन हुआ। कार्की बोलीं, मैं 6 महीने से ज्यादा समय तक सत्ता में नहीं रहूंगी और नवनिर्वाचित संसद को अधिकार सौंप दूंगी। 12 सितंबर को पीएम पद संभालने के बाद कार्की को नेपाल में 5 मार्च 2026 को आम चुनाव कराने की जिम्मेदारी दी गई थी। हिंसा के बाद नेपाल के तीन पूर्व पीएम ओली, देउबा और पुष्प कमल दहल प्रचंड बेघर हो गए हैं।

ताइवान पर कब्जे के लिए युद्ध की तैयारी कर रहा चीन

● ताइपे मिनिस्टर ने अमेरिका में किया दावा, ट्रंप से गुहार

वॉशिंगटन (एजेंसी)। चीनी आर्मी ताइवान पर कब्जा करने के लिए युद्ध की तैयारी कर रही है। चीन की ओर से ताइवान पर हमला किया जा सकता है। चीन का अगर ताइवान पर कब्जा होता है तो इसका डोमिनो प्रभाव होगा। यानी इसका असर ताइवान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आगे तक जाएगा। इससे अमेरिका की सुरक्षा को भी खतरा होगा। यह बातें ताइवान के शीर्ष नेता चिउ चुई-चेंग ने शुक्रवार को वॉशिंगटन में कही हैं। रॉयटर्स के मुताबिक, ताइवान मेनलैंड मामलों की परिषद के प्रमुख चिउ चुई-चेंग ने वॉशिंगटन स्थित हेरिटेज फाउंडेशन को बताया कि चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी की ताइवान पर नजर है। ताइवान पर कब्जे के साथ चीन का उद्देश्य एशिया-प्रशांत क्षेत्र से अमेरिकी प्रभाव को खत्म करना और अमेरिका की वैश्विक नेता की हैसियत कम करना है।

हैदराबाद के स्कूल में ड्रग फैक्ट्री का खुलासा

● डायरेक्टर सहित 3 गिरफ्तार दो फ्लोर पर क्लास चलती थी, एक पर रैकेट

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के हैदराबाद में पुलिस ने शनिवार को एक प्राइवेट स्कूल के अंदर ड्रग्स फैक्ट्री का खुलासा किया। मेधा स्कूल नाम के स्कूल के डायरेक्टर मालेला जया प्रकाश गौड़ सहित 3 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों ने स्कूल के क्लास रूम और रस्ट्रिकटेड एरिया को अल्प्राजोलम का प्रोडक्शन फैक्ट्री बना दिया था। अल्प्राजोलम का इस्तेमाल ताड़ी बनाने में किया जाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नवजात बछिया का किया नामकरण

मुख्यमंत्री निवास की गौशाला में हुआ बछिया का जन्म, कमला के नाम से जानी जाएगी बछिया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री निवास स्थित गौशाला में हाल ही में गाय ने एक प्यारी सी बछिया को जन्म दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस बछिया का जन्म होने पर अत्यंत हर्ष व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि गौसेवा और पशुधन संवर्धन के लिए हमारी सरकार ने अनेक प्रयास प्रारंभ किए हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार को महालक्ष्मी व्रत पूजन के दिन साक्षात् लक्ष्मी के रूप में मुख्यमंत्री निवास में जन्मी नवजात बछिया का स्वागत सत्कार किया। मुख्यमंत्री ने नवजात बछिया का नामकरण भी कर दिया। अब यह बछिया मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए 'कमला' नाम से जानी जाएगी। 'कमला' पहली ऐसी बछिया है, जिसका जन्म मुख्यमंत्री निवास की गौशाला में ही हुआ है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रतिदिन की तरह रविवार की सुबह गौशाला पहुंचकर यहां मौजूद सभी गायों को रोटी खिलाई। सभी गायों के साथ 'कमला' को भी तिलक लगाकर निवास में उसका स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने 'कमला' को गोद मे लेकर दुलार किया और मुख्यमंत्री निवास में पदस्थ सभी अधिकारी-कर्मचारियों को मिष्ठान्न खिलाकर कमला के आगमन पर अपनी आत्मीय खुशी जाहिर की।

'लव जिहाद' का चौंकाने वाला मामला

मेरे भाई से प्यार करो... हिंदू लड़की को फोन कर दबाव डाल रही थी मुस्लिम युवती

बड़वानी (नप्र)। बड़वानी जिले के पलसू में लव जिहाद का मामला सामने आया है। एक मुस्लिम युवती एक नाबालिग हिंदू युवती को फोन कर अपने भाई से प्यार करने और उससे बात करने का दबाव बना रही थी। जिसको लेकर हिंदू संगठनों ने थाने में जमकर हंगामा किया और कार्रवाई की मांग की।

संगठन ने पुलिस पर आरोपी का साथ देकर समझौते के लिए दबाव बनाने का भी आरोप लगाया। हंगामे के बाद पुलिस ने रविवार की तड़के नौ लोगों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर चार को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने एहतियात के तौर पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया है।

10वीं की छात्रा की शिकायत पर मामला दर्ज- बड़वानी के एएसपी धीरज बब्बर ने बताया कि 15 वर्षीय कक्षा 10 की छात्रा की शिकायत पर आमीन, आवेश, शोएब समेत सात बालिग और दो नाबालिग लोगों के खिलाफ धार्मिक स्वतंत्रता अध्यादेश, पॉक्सो और बीएनएस की धाराएं 78, 351(2) और 3(5) के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। इस मामले में मुख्य आरोपी (नाबालिग) समेत चार को गिरफ्तार कर लिया गया है।

रात को फोन कर दबाव बना रही थी लड़की- उन्होंने बताया कि 12 सितंबर की रात पीड़िता को कई बार फोन किए जाने के बाद उसने एक बार फोन उठाया। इसमें एक लड़की ने उसके भाई (नाबालिग आरोपी) से बात करने के लिए दबाव डाला। इस पर पीड़िता ने अपने पिता को जानकारी दी थी। उन्होंने बताया कि एहतियात के तौर पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात रखा गया है।

आरोपियों ने लड़की के घर जाकर दी धमकी- एफआईआर के मुताबिक उसने यह भी बताया कि मुख्य आरोपी और उसके अन्य दोस्त उसका पीछा कर उससे प्यार करने और शादी करने के लिए भी दबाव बना रहे थे। शोएब और शमशु ने समझौता करने का दबाव डाला और नहीं किए जाने पर धमकाया। 13 तारीख की सुबह भी राजा और रमजान ने वहां जाकर उन्हें एक पुलिसकर्मी के रिश्तेदार होने का हवाला देते हुए धमकाया था।

हिंदू संगठनों ने लगाया गंभीर आरोप- इस मामले में कार्रवाई नहीं होने का आरोप लगाते हुए हिंदू संगठनों ने शनिवार रात पलसूद थाने का घेराव कर लिया। हिंदू समाज के नेता हुकुमचंद राठौर ने आरोप लगाया कि बात की रिकॉर्डिंग के साथ पुलिस को शिकायत किए जाने के 24 घंटे बात भी कार्रवाई नहीं हुई और पुलिस की ओर से समझौते का दबाव बनाया गया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में इस तरह लव जिहाद का रैकेट काम कर रहा है।

भतीजी पर आया फूफा का दिल, नाबालिग का अपहरण कर महीने भर तक ठिकाने बदलकर किया रेप

जबलपुर (नप्र)। एक कलयुगी फूफा की करतूत सामने आई है। छिंदवाड़ा के रहने वाले एक व्यक्ति का दिल पनागर में रहने वाली अपनी भतीजी पर आ गया। उसने मौका देखकर नाबालिग भतीजी का अपहरण कर लिया। फूफा ने भतीजी से जबरन रेप किया और उसे लेकर अलग-अलग ठिकाने बदलता रहा। करीब एक महीने बाद पुलिस ने दुष्कर्मी फूफा को सिवनी से गिरफ्तार कर लिया है। जबलपुर जिले के पनागर थाना प्रभारी विपिन ताम्रकार ने बताया कि थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव में रहने वाली नाबालिग बच्ची संदिग्ध परिस्थितियों में घर से गायब हो गई थी। परिजनों ने उसके गायब होने की रिपोर्ट थाने में दर्ज करवाई थी। परिजनों ने छिंदवाड़ा के रहने वाले एक रिश्तेदार पर शक जताया था, जो वर्तमान में माढोताल क्षेत्र में रहता है और बच्ची का फूफा है उस पर शक जताया था। परिजन का आरोप था कि वही बच्ची को अपहरण कर ले गया होगा।

पुलिस ने पड़ताल की तो फूफा गायब था- पुलिस ने मढोताल में पड़ताल की तो सच में बच्ची का फूफा भी गायब था। पुलिस ने उसकी लोकेशन ट्रेस करने का काम शुरु किया था, लेकिन वह लगातार ठिकाने बदल रहा था। इस कारण महीने भर तक पुलिस को छकाता रहा। पुलिस ने छिंदवाड़ा, बालाघाट, सिवनी के ठिकानों पर दबिश दी, लेकिन हर बार आरोपी पुलिस के चंगुल से निकल जाता था।

लंदन में अवैध-अप्रवासी मुद्दे पर जमकर प्रदर्शन

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में अवैध अप्रवासियों की बढ़ती आबादी के खिलाफ शनिवार को लंदन में प्रदर्शन हुआ। इसमें 1 लाख से ज्यादा लोग शामिल हुए। इस प्रोटेस्ट को 'यूनाइट द किंगडम' नाम दिया गया, जिसे एंटी-इमिग्रेशन नेता टॉमी रॉबिन्सन ने लीड किया। इसे देश की सबसे बड़ी दक्षिणपंथी रैली माना जा रहा है। इस प्रदर्शन में टेस्ला मालिक इलॉन मस्क वीडियो के जरिए शामिल हुए। मीडिया चैनल 'द इंडिपेंडेंट' के मुताबिक उन्होंने टॉमी रॉबिन्सन से बात की। मस्क ने कहा, हिंसा तुम्हारे पास आ रही है। या तो लड़ो या मरो। मस्क ने ब्रिटेन में संसद भंग करने की मांग की। उन्होंने कहा, सरकार बदलनी होगी। वही, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर उस वक्त फुटबॉल

● 1 लाख लोग जुटे, मस्क भी जुड़े, कहा-लड़ो या मरो

मैच देख रहे थे। वे अपने बेटे के साथ लंदन के एमिरेट्स स्टेडियम में थे, जब शहर में हिंसा हो रही थी। इस प्रदर्शन का मकसद ब्रिटेन में अवैध अप्रवासन (इलीगल इमीग्रेशन) के खिलाफ आवाज उठाना था।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को इंदौर में आयोजित कार्यक्रम में श्री मोहन भागवत का अंग वस्त्र से स्वागत और सम्मान किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का रविवार को पटना प्रवास के दौरान पूर्व राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद एवं उनके पुत्र विधायक श्री संजीव श्रीवास्तव के निवास पर स्वागत किया गया।

दुर्गा पूजा के लिए 10 हजार नहीं देने पर बिजनेसमैन को पीटा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल दुर्गा पूजा के आयोजन के लिए 10 हजार रुपये का चंदा नहीं देने पर मारपीट की घटना सामने आई है। बिजनेसमैन को पीटने का आरोप टीएमसी के कार्यकर्ताओं पर लगा है। इस घटना के तूल पकड़ने के बाद राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का बड़ा रुख सामने आया है। ममता बनर्जी ने पुलिस को आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा है। दुर्गापूजा बंगाल का सबसे बड़ा फेस्टीवल है। इस साल दुर्गापूजा की शुरुआत 28 सितंबर से होनी है। ऐसे में अभी दुर्गापूजा की तैयारियों के लिए 13 दिन बचे हैं। दुर्गा पूजा का पर्व 2 अक्टूबर तक चलेगा। कोलकाता में दुर्गा पूजा के लिए बेहद खास तैयारियां की जाती हैं। पुलिस ने बताया कि शुक्रवार को गोबरा गोरोस्थान रोड स्थित एक स्थानीय क्लब द्वारा दुर्गा पूजा के लिए मांगे गए 10,000 रुपये के चंदे का भुगतान करने से इनकार करने पर एक व्यवसायी को कथित तौर पर टीएमसी के उपद्रवियों ने बेरहमी से पीटा और घायल कर दिया।

राफेल के साथ एक और बड़ी डील की ओर भारत

भारत में बनेगा पांचवीं पीढ़ी का एसयू 57 ई स्टील्थ विमान

मॉस्को/नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना ने इस हफ्ते फ्रांस से 114 राफेल फाइटर जेट खरीदने का प्रस्ताव रक्षा मंत्रालय को भेजा है। इस बीच रिपोर्ट है कि भारत की नजर रूस के पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान एसयू-57 पर भी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक रूस की एक टीम जल्द ही हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के नासिक प्लांट का दौरा करने वाली है। इस दौरे का मकसद इस बात की पड़ताल करना है कि क्या नासिक प्लांट में एसयू-57 स्टील्थ फाइटर जेट का प्रोडक्शन शुरू हो पाएगा। रूस ने भारत को एसयू-57 स्टील्थ फाइटर जेट की सौ फीसदी टेक्नोलॉजी के साथ साथ सोर्स कोड ट्रांसफर करने का भी ऑफर दे रखा है। रूसी ऑफर में कहा गया है कि अगर भारत तैयार होता है कि जो एचएएल के जिस प्लांट में एसयू-30 एमकेआई का प्रोडक्शन होता है, उसी प्लांट में एसयू-57 का भी प्रोडक्शन शुरू हो सकता है। ऐसी रिपोर्ट है कि भारत सरकार भारतीय वायुसेना की तत्काल जरूरतों को देखते हुए 40 से 60 एसयू-57 स्टील्थ फाइटर जेट का सौदा रूस से कर सकती है।

नासिक प्लांट में बनेगा एसयू-57 फाइटर जेट!

इकोनॉमिक टाइम्स की एक सितंबर की रिपोर्ट में कहा गया है कि रूस, भारत में एसयू-57 स्टील्थ फाइटर जेट का प्रोडक्शन शुरू करने के लिए निवेश की जरूरत को लेकर स्टडी कर रहा है। नासिक का यह संयंत्र भारत की एयरोस्पेस इंडस्ट्री की रीढ़ माना जाता है। यह 2004 से अब तक रूस से लाइसेंस लेकर 220 से ज्यादा एसयू-30 एमकेआई मल्टीरोल फाइटर जेट बना चुका है।

पंजाब के 2300 गांवों में सफाई महाअभियान शुरू

बाढ़ की आपदा के बाद सीएम भगवंत मान ने किया था ऐलान

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में बाढ़ की बड़ी आपदा के बाद अब राज्य सरकार महा सफाई अभियान शुरू किया है। राज्य के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इस महाअभियान का ऐलान किया था। इसके तहत 14 सितंबर से लेकर 23 सितंबर बाढ़ प्रभावित 2300 गांवों में सफाई के लिए विशेष अभियान चलेगा। इसकी औपचारिक शुरुआत रविवार को हुई। अभियान में सफाई के साथ सरकार की तरफ से लोगों को जरूरी राहत भी पहुंचाने का प्रावधान किया गया है। सरकार के अनुसार बाढ़ में आई गंदगी को साफ करके शहरों और गांवों को स्वच्छ किया जाएगा।

रवीन्द्र भवन में 'भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान' शुरु

प्रदेश के विश्वविद्यालयों में 'एक भारतीय भाषा' पढ़ाई जाएगी : मंत्री परमार

भोपाल। 'भाषाएं तोड़ती नहीं, बल्कि जोड़ती हैं। इस संदेश के साथ राजधानी में रवीन्द्र भवन के अंजनी सभागार में दो दिनी 'भारतीय मातृभषा अनुष्ठान' का शुभारंभ हुआ। वीर भारत न्यास और माधवराव सप्रे संग्रहालय के साझा आयोजन की शुरुआत प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार ने की। शुभारंभ सत्र की अध्यक्षता गुजरात साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री विष्णु पंडया ने की। शुभारंभ सत्र के तत्काल बाद विभिन्न भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच अंतरसंबंध पर विमर्श हुआ तथा दूसरे सत्र में 'भारतीय भाषा एवं प्रौद्योगिकी' विषय पर व्याख्यान हुआ।

इस अवसर पर अपने संबोधन में मुख्य अतिथि इंदरसिंह परमार ने कहा कि भाषाएं आपस में एक दूसरे को जोड़ती हैं यह संदेश मध्यप्रदेश की धरती से देश ही नहीं दुनिया में इस अनुष्ठान के माध्यम से जायेगा। उन्होंने जानकारी दी कि मध्यप्रदेश के सभी सरकारी विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाएं पढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी। इसके पीछे सरकार की मंशा यह है कि इससे भाषायी सौहार्द्र तो पैदा हो ही साथ ही हमारे प्रदेश के विद्यार्थी जब दूसरे प्रदेशों में जायें तो उस प्रदेश की भाषा के बल पर आसानी से अपना कौशल विकसित कर लें। मंत्री ने कहा कि आने वाले समय में यह व्यवस्था निजि विवि में भी किये जाने का विचार है।

'हिंदी' में हो रही तकनीकी विषयों की पढ़ाई मुख्य अतिथि परमार ने कहा कि मप्र ही वह राज्य जहां से इस मिथक को तोड़ा गया कि चिकित्सा और तकनीक जैसे विषयों की पढ़ाई 'हिंदी' में नहीं हो सकती। हमने इस दुरुह कार्य को भी कर दिखाया। आज प्रदेश में इन विषयों की पढ़ाई हिंदी में ही हो रही है।

मुख्य अतिथि ने आगे कहा कि देश में नई शिक्षा नीति लागू की गई है। यह शिक्षा नीति ज्ञान आधारित शिक्षा है। भारतीय दर्शन श्रेष्ठ

दर्शन है लेकिन पिछले कुछ सालों में इस सच को छिपाया गया। अब समय आ गया है कि नई शिक्षा नीति के माध्यम से हम इस दर्शन से बच्चों को परिचित कराएंगे। नई पीढ़ी जब इस दर्शन को जान जाएगी तो इसमें कुछ संशय नहीं कि भारत अपना पुराना गौरव पुनः प्राप्त कर लेगा।

सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है भाषा

अध्यक्षीय उद्बोधन में पद्मश्री विष्णु पण्डया ने कहा कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, यह एक-दूसरे से जुडने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि भाषाओं को राष्ट्र के साथ जोडना होगा तभी एकात्मकता का भाव पैदा होगा। उन्होंने कहा कि जब एक स्थान के भाषा-भाषी दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं तो वे अपने साथ वहां की भाषा भी लेकर जाते हैं। इसका सबसे सशक्त उदाहरण मीराबाई हैं। वे राजस्थान से चलकर द्वारका तक पहुंची। उनकी रचनाओं का अवलोकन करें तो उसमें इस बीच पड़ने वाली भाषाओं के शब्द सहजता से पाये जाते हैं। उनकी पूरी यात्रा भाषाओं के समन्वय का ही प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि मप्र और भोपाल से मेरा रिश्ता बहुत ही गहरा रिश्ता है। इसकी वजह यह भी है कि गुजरात हिंदी प्रेमी राज्य है। हम इतिहास उठाकर देखें तो हिंदी के लिए जिन्होंने कार्य किया वे सभी गुजरात से आते हैं। इस श्रंखला में स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम प्रमुख है। श्री पण्डया ने हिंदी के क्षेत्र में प्रदेश सरकार और सप्रे संग्रहालय द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सरहाना भी की। सत्र में विशेष रूप से उपस्थित हिंदी विद्वान डॉ. सूर्यप्रकाश दीक्षित ने कहा कि भारतीय भाषाओं के बीच सौहार्द्र का भाव जगाना होगा। इसमें इस तरह के आयोजन कारगर हो सकते हैं। उन्होंने कहा अंग्रेजों ने भाषा को बांट दिया था आज भी भाषाएं राज्यों तक ही सीमित हो गई हैं। उन्होंने सभी भाषाओं को मिलाकर एक भारतीय भाषा बनाने का सुझाव देते हुए हिंदी भाषी प्रांतों से पर्याप्त उदारता का भाव रखने का आग्रह भी किया।

इसके पूर्व वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने कहा कि आज भारत में करीब सात हजार से ज्यादा भाषाएं और बोलियां हैं, इनकी संख्या तेजी से विलुप्त होती जा रही है। यह भाषाएं और बोलियां किस तरह से पुर्नजीवित हों यही इस मातृभषा अनुष्ठान का उद्येश्य है। साथ ही इस आयोजन के पीछे यह मंशा भी है कि हम सभी हमारी भाषाओं और बोलियों की शक्ति को पहचानें और इसे समृद्ध करने में आगे आयें। श्री तिवारी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हम हमारी बोलियों और भाषाओं की शक्ति ग्रहण कर ही विश्व गुरु बन सकते हैं। संस्कृति संचालक एनपी नामदेव ने कहा कि प्रदेश सरकार के प्रयास हैं कि हिंदी का महत्व देश-दुनिया में स्थापित हो। इस अनुष्ठान में आने वाले सत्रों में ऐसे ही विषयों पर चर्चा होगी। आरंभ में सप्रे संग्रहालय के संस्थापक निदेशक पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने आयोजन की रूपरेखा रखते हुए कहा कि अपनी भाषा पर अभिमान सब भाषाओं का सम्मान है इस उद्घोष के साथ यह अनुष्ठान हो रहा है। इसका आने वाले समय में देश भर में विस्तार किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सप्रे संग्रहालय और वीर भारत न्यास की इस पहल को हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,वर्धा जैसी हिंदी के क्षेत्र में कार्य करने वाली अखिल भारतीय संस्थाओं की सराहना मिली है। उन्होंने कहा कि सभी भारतीय भाषाएं सांस्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षिक दृष्टि से समृद्ध हैं। इन सभी को पर्याप्त सम्मान देते हुए आपस में सौहार्द्र का भाव पैदा होना चाहिए। इससे हर भाषा-भाषी का गौरव बढ़ेगा और राष्ट्र का गौरव भी बढ़ेगा। इसके तत्काल बाद हुए विमर्श के सत्र में कन्नड़,मलयालम,तेलुगु,बांग्ला और तमिल भाषाएं तथा हिंदी के अंतरसंबंध पर चर्चा हुई। चर्चा में डॉ. उषारानी राव कन्नड़, डॉ. के.वनजा मलयाली,डॉ. पी. मणिक्यांबा, तमिल तथा कृपाशंकर चौबे ने बांग्ला भाषा और हिंदी भाषा के बीच समानता पर वक्तव्य दिये। सभी वक्ताओं की राय थी कि हिंदी और अन्य भाषाओं के शब्दों में बहुत हद तक समानता है। इन सबको जोडने में अनुवाद महती भूमिका निभा सकता है। इसके पहले पूर्व रंग में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के समूह द्वारा कविता यात्रा की सांगीतिक प्रस्तुति दी गई। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामवल्लभ आचार्य द्वारा रचित हिंदी गीत की प्रस्तुति भी हुई। अंत में पूरे सत्र का समाहार साहित्यकार डॉ. प्रभुदयाल मिश्र ने दिया। इस सत्र का संचालन पत्रकार अजय बोकिल ने किया।

प्रदर्शनियां भी लगाई गई

कार्यक्रम स्थल पर भाषा और भारत का वैभव झलकाती प्रदर्शनियां भी संजोई गईं। जिसमें वीर भारत न्यास द्वारा तैयार की गयी भारतीय भाषा आलोक- कालजयी साहित्यकारों की छवियाँ, स्वराज संस्थान संचालनालय की कलम के सिपाही, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की सदी साक्षी है प्रदर्शनियां शामिल हैं।

भाषा की सहयोगी हैं विज्ञान और तकनीक

दूसरे सत्र में भारतीय भाषा एवं प्रौद्योगिकी विषय पर आचार्य डॉ. शिवशंकर मिश्र की अध्यक्षता में वक्तव्य हुए। इसमें हिंदी एवं प्रौद्योगिकी विषय पर टैगोर विवि के कुलपति डॉ. संतोष चौबे ने कहा कि यह भ्रम फैलाये गये कि हिंदी में तकनीक के क्षेत्र में काम नहीं हो सकता, लेकिन ऐसा नहीं बल्कि विज्ञान और तकनीक भाषा की सहयोगी हैं। सूचना तकनीक का विभिन्न चरणों में विकास हुआ है। इसमें ऑडियो के बाद वीडियो और फिर शब्द आये। आज तकनीक साधनों से काम आसान हुआ है। नाटक और सिनेमा की भाषा पर अभिनेता राजीव वर्मा ने कहा कि नाटक और सिनेमा की भाषा दैहिक ही है। एक अभिनेता अपने अभिनय से ही बहुत कुछ कह जाता है। नृत्य और संगीत की भाषा पर कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने सारगर्भित और प्रभावी उद्बोधन दिया। जनजातीय एवं घुमंतु भाषा-संचार पर लोककला मर्मज्ञ डॉ. धर्मेन्द्र पारे ने वक्तव्य दिया। इस सत्र का संचालन डॉ. जवाहर कर्नावट ने किया।

आज दिये जाएंगे राष्ट्रीय अलंकरण

मातृभषा अनुष्ठान के दूसरे दिन दो सत्रों में चर्चाएं होंगी। इसके बाद शाम 6 बजे से राष्ट्रीय अलंकरण समारोह होगा। इस सत्र में विज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में हिन्दी में योगदान देने वाली विभूतियों को अलंकृत किया जाएगा। सत्र के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेन्द्र सिंह लोधी करेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री को महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा आयोजित विक्रमोत्सव 2025 को एशिया के शासकीय समारोह की विशेष श्रेणी में गोल्ड अवार्ड WOW अवार्ड एशिया की टीम द्वारा प्रदान किया जाएगा।

रेप के केस में वकील गिरफ्तार, भेजा जेल

कोर्ट से लेटर मिलने के बाद कार्रवाई, नाबालिग ने गवाही के दौरान लगाए थे दुष्कर्म के आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल की अशोका गार्डन पुलिस ने रेप के आरोप में वकील यावर खान को गिरफ्तार किया है। शनिवार की रात को उसे हिरासत में लिया गया था। रविवार को पुलिस ने कोर्ट में यावर खान को पेश किया जहां से उसे रिमांड पर जेल भेज दिया गया। टीआई अनुराग लाल ने बताया कि आरोपी यावर को मेडिकल के लिए भेजा गया है। जिसके बाद उसे कोर्ट में पेश किया जाएगा। बीते 24 अगस्त को पॉक्सो कोर्ट में रेप और देह व्यापार के मामले में गवाही के दौरान पीड़िता ने भोपाल कोर्ट के अधिवक्ता वकील यावर खान का नाम दुष्कर्म के आरोपियों के साथ लिया था। पीड़िता के कथन के आधार पर 11 सितंबर को कोर्ट ने केस में उचित कार्रवाई को लेकर अशोका गार्डन पुलिस को लेटर लिखा था। इसी लेटर के साथ पीड़िता के बयानों की कॉपी को भी संलग्न किया गया था। लेटर पर संज्ञान लेते हुए अशोका गार्डन पुलिस ने शनिवार की देर रात वकील यावर खान को हिरासत में लिया।

ऑफिस और घर बुलाकर रेप के आरोप लगाए थे-फिलहाल उनसे पूछताछ जारी है। बता दें कि पीड़िता ने बयान में कहा था कि आरोपियों के वकील यावर खान ने भी ऑफिस और बिट्टन मार्केट स्थित मकान में बुलाकर उसके साथ कई बार ज्यादती की।

कोर्ट में ही की थी पहचान-पीड़िता ने अपने बयान में बताया कि वह यह बात कोर्ट में पहली बार इसलिए बता रही है कि इससे पहले उसे वकील का नाम याद नहीं था। कोर्ट में बयान के दौरान किसी अन्य वकील ने जब आरोपी के वकील का नाम लिया, तब उसे यावर खान का नाम याद आया। कोर्ट ने पीड़िता के बयान दर्ज कर लिए हैं। मामला 9 दिसंबर 2023 का है।

कुख्यात रेडियो परिवार का वकील रहा है-शहर के कुख्यात अपराधी और नशे की तस्करी करने वाले रईस रेडियो, उसके बेटे यासीन उर्फ मजिस्ट्रेट और मुन्ना उर्फ मजिस्ट्रेट के केसों में भी यावर की ओर से पैरवी की जाती थी। इन सभी अपराधियों पर भोपाल के अलग-अलग थानों में 100 से अधिक केस दर्ज हैं। जिसमें रईस के खिलाफ 70 केस बेटे यासीन पर 27 केस और मुन्ना पर 15 केस दर्ज हैं।

भोपाल में हुई बारिश, आज 8 जिलों में अलर्ट

इंदौर, जबलपुर संभाग में भी गिरेगा पानी; एमपी में नया सिस्टम, अगले 3 दिन तेज बारिश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का नया सिस्टम एक्टिव हो गया है। एक मानसून टर्फ प्रदेश के बीच में से गुजर रही है। इसके चलते इंदौर, भोपाल, जबलपुर और नर्मदापुरम संभाग में असर देखने को मिलेगा। भोपाल में बारिश हो रही थी।8 जिलों में तेज बारिश होने का अलर्ट है।

मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि प्रदेश में शनिवार को मानसून टर्फ की एक्टीविटी देखने को मिली। वहीं अन्य सिस्टम भी एक्टिव है। इसके चलते शनिवार को कई जिलों में बारिश हुई। अगले 24 घंटे के दौरान भी तेज बारिश होने के आसार है।

एमपी में अब तक 41.9 इंच बारिश हुई- बता दें कि प्रदेश में अब तक औसत 41.9 इंच बारिश हो चुकी है, जो कोटे से 11 प्रतिशत अधिक है। 30 से ज्यादा जिलों में सामान्य बारिश का कोटा फुल हो चुका है। मालवा-निमाड़ यानी, इंदौर-उज्जैन संभाग में हाल बुरे हैं। 15 में से 5 जिले-खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा, शाजापुर और बड़वानी में 27 इंच पानी भी नहीं गिरा है।

कोटे से 4.4 इंच ज्यादा बारिश- प्रदेश में 16 जून को मानसून ने आमद दी थी। तब से अब तक औसत 41.9 इंच बारिश हो चुकी है। अब तक 34.5 इंच पानी गिरना था। इस हिसाब से 7.4 इंच पानी ज्यादा गिर चुका है। प्रदेश की सामान्य बारिश औसत 37 इंच है। यह कोटा पिछले सप्ताह ही पूरा हो गया है। 4.9 इंच पानी ज्यादा गिर गया है।

30 जिले-भोपाल, राजगढ़, रायसेन, विदिशा, अलीराजपुर, बड़वानी, कटनी, नरसिंहपुर, सिवनी, मंडला, ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, दतिया, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, रतलाम, मंदसौर, नीमच, आगर-मालवा, भिंड, मुरैना, श्योपुर, सिंगरौली, सीधी, सतना और उमरिया में बारिश का कोटा फुल हो चुका है। कई जिले ऐसे हैं, जहां आंकड़ा डेढ़ सौ प्रतिशत के पार है।

फलों पर नमक डालकर खाना किडनी के लिए घातक

इंदौर में नेफ्रोलॉजी कॉन्फ्रेंस में डॉक्टर्स बोले- नमक, चीनी और मैदा सेहत के बड़े दुश्मन

इंदौर (नप्र)। इंदौर इंडियन सोसाइटी ऑफ नेफ्रोलॉजी, वेस्ट जोन चैप्टर (आईएसएनडब्ल्यूजेड) एनुअल साइंटिफिक कॉन्फ्रेंस का दूसरा दिन ज्ञान, नवाचार और अनुभव से भरपूर रहा। कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन की शुरुआत के सत्र में देशभर से आए विशेषज्ञों ने आधुनिक इलाज और तकनीकों पर विचार साझा किए। इंटरेक्टिव लेक्चर्स और हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग से युवा किडनी रोग विशेषज्ञों को वास्तविक अनुभव मिला

दिनभर चले अलग-अलग सेशन्स में किडनी से जुड़ी बीमारियों के अहम विषयों पर गहन चर्चा हुई। कॉन्फ्रेंस हॉल्स में संवाद और विचारों का आदान-प्रदान लगातार चलता रहा। किडनी के उपचारों के साथ-साथ प्रतिभागियों को रिसर्च के नवीनतम ट्रेंड्स से भी रूबरू कराया गया। मुंबई से आईं डॉ. श्रुति टापियावाला ने कहा कि नई दवाएं मरीजों के लिए लाभदायक हैं। कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली कई दवाएं किडनी पर असर डालती हैं।

ब्लड प्रेशर मरीजों को खान-पान में बदलाव जरूरी

मुंबई से आए डॉ. भरत शाह ने कहा कि बाजार में कई कंपनियां हैं, जो नमक को लेकर सतर्कता का संदेश देती हैं कि 100 ग्राम में कितना नमक और पोटैशियम रहता है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि सोडियम का प्रमाण कम हो। अगर आप ब्लड प्रेशर के मरीज हैं तो एक गोली से इसे नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन लोग ऐसा नहीं करते। वे अपने खान-पान में बदलाव नहीं करना चाहते, तो कैसे काम चलेगा?

अगर आप ब्लड प्रेशर के मरीज हैं तो फलों के सेवन के दौरान ऊपर से नमक छिड़ककर खाना और भी ज्यादा घातक है। हाई ब्लड प्रेशर केवल हार्ट ही नहीं, बल्कि किडनी को भी नुकसान पहुंचाता है।

दूषित पानी और कीटनाशक भी किडनी को पहुंचाते हैं नुकसान

डॉ. भरत शाह ने कहा कि लाइफस्टाइल और खानपान के अलावा कई अन्य कारण भी किडनी पर असर डालते हैं। कुछ राज्यों में दूषित पानी या फसलों पर छिड़के जाने वाले कीटनाशक भी लोगों की किडनी को नुकसान पहुंचाते हैं। यदि हम बेहतर खानपान और संतुलित जीवनशैली अपनाएं, तो किडनी की बीमारियों से बचा जा सकता है और एक सामान्य जीवन जिया जा सकता है।

अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ाना बेहद जरूरी

तमिलनाडु से आए डॉ. गोपाल कृष्णन ने कहा कि किडनी की बीमारियों में सबसे अहम है, समय पर इलाज मिलना और जिन मरीजों को प्रत्यारोपण की जरूरत होती है, उन्हें समय पर किडनी उपलब्ध होना। इसके लिए अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ाना बेहद जरूरी है, क्योंकि आज भी देश में कई मरीज अंगदान के इंतजार में अपनी बीमारियों से जूझते रहते हैं। हमें सिर्फ किडनी ही नहीं, बल्कि अन्य अंगदान की दिशा में भी कदम बढ़ाने चाहिए। इस काम में सरकार, लोग, सिस्टम और डॉक्टर्स का भी समान योगदान है।

कॉन्फ्रेंस का दूसरा दिन नई खोजों को समर्पित रहा

ऑर्गनाइजिंग चेयरमैन डॉ. प्रदीप सालगिया ने कहा कि कॉन्फ्रेंस का दूसरा दिन नई खोजों को समर्पित रहा। विशेषज्ञों ने जटिल बीमारियों और उनके आधुनिक उपचार पर उपयोगी जानकारी साझा की, जिससे प्रतिभागियों को लाभ हुआ।

ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. राजेश भराणी ने बताया कि अलग-अलग सत्रों ने यह स्पष्ट किया कि किडनी से जुड़ी बीमारियों में समय पर पहचान और नई दवाओं का सही उपयोग बेहद अहम है। आने वाले समय में इस तरह के संवाद मरीजों के बेहतर इलाज की राह खोलेंगे।

16 साल के लड़के की पीट-पीटकर हत्या

घर से बुलाकर ले गए थे; आरोपी बोले- मेरी बेटी को छेड़ने की कोशिश की थी

खजुराहो (नप्र)। छतरपुर जिले के खजुराहो में 16 साल के लड़के की लाठी-डंडों से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। वारदात राजनगर थाना क्षेत्र के खजवा गांव में शनिवार देर रात की है। आरोप है कि नाबालिग ने बच्ची के साथ छेड़छाड़ की थी। इसके बाद आरोपी नाबालिग को घर से बुलाकर ले गया। फिर तीन लोगों ने उसे कमरे में

बंद कर जमकर पीटा। पुलिस ने मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि दो अन्य आरोपी फरार हैं।

खजवा गांव के रहने वाले अनिल पटेल (22) ने थाने में शिकायत की है कि शनिवार 13 सितंबर की शाम करीब 6 बजे वह खेत से घर लौटकर आया था। पिता से छोटे भाई रोहित (16) के बारे में पूछ तो उन्होंने बताया कि दोपहर करीब 12:30 बजे गांव में रहने वाला महेश पटेल अपने यहां मजदूरी के लिए साथ ले गया था। देर शाम तक रोहित घर नहीं लौटा, तो अनिल और उसका भाई अंकित उसे देखने महेश पटेल के यहां पहुंचे।

अंदर से आ रही थी मारपीट और चीखने की आवाज- मृतक के भाई अनिल के अनुसार आरोपी के घर के अंदर से मारपीट और चीखने की आवाजें आ रही थीं। जब दोनों भाई अंदर गए, तो देखा कि महेश पटेल, सुनील पटेल और रामकुमार पटेल छोटे भाई रोहित को डंडों से पीट रहे थे।

मृतक के चाचा बोले- आरोपियों ने अंदर जाने से रोका

रोहित के चाचा दीपू पटेल ने बताया कि महेश पटेल ने दोपहर में रोहित को काम के बहाने बुलाया था। शाम को जब दोनों भाई महेश के घर पहुंचे, आरोपियों ने उन्हें अंदर नहीं जाने दिया। थोड़ी देर बाद वे रोहित को अधमरी हालत में इलाज के बहाने गाड़ी में डालकर ले जाने लगे। परिजन ने पहले थाने चलने के लिए कहा, लेकिन वे छतरपुर ले गए। बाद में कॉल आया कि रोहित की मौत हो गई है। दीपू के मुताबिक रोहित के हाथ-पैर में सूजन और डंडे मारने के निशान हैं।

शराब की पेटी उठाने से मना किया, तो पीटा

रोहित के दूसरे चाचा देशराज पटेल ने बताया कि रात करीब 1 बजे राजनगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई। उनका कहना है कि तीनों आरोपी शराब का काम करते हैं। शक है कि आरोपियों ने रोहित को शराब की पेटी उठवाने बुलाया था। जब रोहित ने मना किया, तो उसकी पिटाई कर दी। देशराज का कहना है कि बच्ची के साथ छेड़छाड़ का आरोप झूठा है।

खजुराहो एसडीओपी मनमोहन सिंह बघेल ने बताया कि मामले में मुख्य आरोपी महेश पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया है। बाकी दो आरोपी सुनील और रामकुमार पटेल फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है।

बस ने मारी टक्कर, 30 फीट तक घिसटा टीचर, मौत

धार में हादसे का वीडियो; बस बेकाबू होकर दूसरी लेन में घुसी

चरणजीत सिंह मोंगा

धार (नप्र)। धार में एक यात्री बस ने सड़क पार कर रहे बाइकसवार टीचर को टक्कर मार दी। बस की रफ्तार इतनी थी कि टक्कर के बाद टीचर करीब 30 फीट तक घिसटते हुए आगे फिंका गया। वहीं बस भी डिवाइडर पर उछलते हुए दूसरी लेन में जा घुसी। हादसे का वीडियो भी सामने आया है।

लबरावदा फाटे पर इंदौर-अहमदाबाद फोरलेन पर हुई। टीचर को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। यहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान चरणजीत सिंह मोंगा के रूप में हुई। वह लाड़गली गांव के रहने वाले थे। वे धार की ओर जा रहे थे।

भारत-पाक मैच पर सिंघार बोले- बीजेपी पाकिस्तान प्रेमी

पैसा कमाने के लिए खेलना चाहते, पटवारी ने कहा- 26 शहीदों के बाद बहस जायज

भोपाल (नप्र)। रविवार को दुबई में भारत-पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच पर एमपी कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने बीजेपी और मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि कभी उनके संगठन पाकिस्तान के साथ मैच को लेकर देश में नफरत फैलाते थे।

वहीं, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने जबलपुर में कहा कि भाजपा देशभक्ति और पाकिस्तान विरोध की बातें करती है, लेकिन दुबई में पाकिस्तान के साथ मैच पर उनके दोहरे मापदंड सामने आ रहे हैं। उन्होंने सवाल किया कि क्या अब वे पाकिस्तान प्रेमी बन गए हैं और खेल के लिए ब्रांडिंग और पैसा कमाने की नीति देशभक्ति से ऊपर है।

बीजेपी और संगठन पर निशाना- पटवारी ने कहा कि एक समय बीजेपी और उससे जुड़े संगठन पाकिस्तान के साथ होने वाले मैच पर पिच जांचते थे और देश में नफरत फैलाते थे। उस समय वे मैच को लेकर उत्तेजना फैला देते थे। आज वे चुप क्यों हैं, यह सोचने की बात है।

साप्ताहिक निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता के दौरान नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार बच्चों के साथ।

सिंघार बोले- आप पाकिस्तान प्रेमी हो गए- विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय पर आधारित एक कार्यक्रम में जबलपुर में शामिल हुए। उन्होंने बच्चों को पुरस्कार वितरित किए। इस दौरान उन्होंने केंद्र सरकार और भाजपा पर हमला करते हुए कहा कि भाजपा देशभक्ति और पाकिस्तान विरोध की बातें करती है, लेकिन दुबई में पाकिस्तान के साथ होने वाले क्रिकेट मैच पर उनके दोहरे मापदंड सामने आते हैं।

उन्होंने कहा, आप पाकिस्तान से व्यापार नहीं करना चाहते, चर्चा नहीं करना चाहते, लेकिन खेल के मैदान में ब्रांडिंग और पैसा कमाने के लिए उनकी क्रिकेट टीम के साथ खेलना चाहते हैं। क्या दुबई में होने वाले मैच में आपकी भावनाएं देश की भावनाओं से अलग हैं? क्या आप पाकिस्तान प्रेमी हो गए हैं।

खेल देश सेवा का जरिया- पटवारी ने कहा, मैं आज खेल के महत्व पर आपसे रूबरू हुआ हूं। जैसे सैनिक देश की सेवा में अपनी जान देता है, वैसे ही खिलाड़ी खेल के माध्यम से देश की सेवा करता है। खेल के जरिए लाखों-करोड़ों बच्चे अपना करियर चुनते हैं और देश की सेवा करना चाहते हैं।

पीएम के बयान का हवाला

पटवारी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने कहा था कि टेरर और टॉक एक साथ नहीं हो सकते। उन्होंने याद दिलाया कि देश के 26 भाई-बहनों की शहादत के बाद पाकिस्तान के साथ मैच पर बहस होना स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि जो लोग पहले अलग बात करते थे, अब अलग बात कर रहे हैं, उन्हें पहचानना जरूरी है।

पाकिस्तान नफरत का सामना खुद कर रहा

पटवारी ने कहा कि पाकिस्तान नफरत का सामना खुद कर रहा है। हम प्रेम, प्यार और सभ्यता वाले लोग हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को खेलों में शामिल करना देश सेवा है और यह परिवार के लिए भी शिक्षा का माध्यम है।

खेल की आज़ादी मिलनी चाहिए

पटवारी ने बताया कि जब वह मंत्री थे, उन्होंने हर विभाग में खेलों के लिए ढाई प्रतिशत कोटा सुनिश्चित किया। इससे खेल में जाने वाले खिलाड़ियों को रोजगार सुरक्षा मिलती है। उन्होंने कहा कि बच्चे जिस टीम के लिए खेलना चाहते हैं, उन्हें खेल की आज़ादी मिलनी चाहिए।पटवारी ने कहा, मैं उस बहन का सम्मान करता हूं, जिसने कहा कि पाकिस्तान से मैच मेरी शहादत का अपमान है। मैं उसे मोरल सपोर्ट देना चाहता हूं।

संपादकीय

सुशीला कार्की के समक्ष कई चुनौतियां

नेपाल में जेन जी द्वारा किए गए तख्ता पलट के बाद चली लंबी चर्चा के पश्चात न्यायविद सुशीला कार्की देश की अंतरिम प्रधानमंत्री बन गई हैं। राष्ट्रपति राम चंद्र पौडेल ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। भारत ने उन्हें यह जिम्मेदारी संभालने के लिए बधाई दी है और भारत नेपाल रिश्ते और मजबूत होने की कामना की है। हालांकि सुशीला का आंदोलनकारियों के एक धड़े द्वारा यह कहकर विरोध किया जा रहा था कि वे भारत समर्थक हैं, लेकिन नेपाल की जनता देख चुकी है कि चीन समर्थकों ने नेपाल का क्या हाल कर दिया है। भारत के लिए राहत की बात यह है कि सुशीला भारत में बनारस हिंदू विवि की पूर्व छात्रा हैं और भारत को अच्छी तरह से जानती समझती हैं। नेपाल की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश रहीं हैं। पूर्व में सुशीला कार्की को अपने सख्त रवैये के कारण महाभियोग का सामना कर पद से त्याग पत्र देना पड़ा था। वर्तमान में सुशीला कार्की ने केपी शर्मा ओली की जगह ली है, जिन्होंने भ्रष्टाचार के आरोपों और सोशल मीडिया बैन के खिलाफ़ युवाओं के भारी विरोध के बीच मंगलवार को इस्तीफ़ा दे दिया था। 73 वर्षीय सुशीला कार्की को ईमानदार छवि वाले नेता के रूप में जाना जाता है। उन्हें अंतरिम सरकार का नेतृत्व करने के लिए युवा प्रदर्शनकारियों के एक वर्ग का समर्थन प्राप्त था। सुशीला कार्की ने जिन परिस्थितियों में नेपाल की कमान संभाली है, वह देश के अब तक की सर्वाधिक चुनौती भरी परिस्थितियाँ हैं। हालांकि पद संभालने के बाद कार्की ने कहा कि युवाओं का विश्वास उन पर है और वे चाहते हैं कि चुनाव कराए जाएँ और देश को अराजकता से निकाला जाए। मैं एक छोटे समय के लिए सरकार चला सकती हूँ, ताकि चुनाव कराए जा सकें। उन्होंने कहा कि मेरा पहला ध्यान उन लड़कों और लड़कियों पर होगा, जो आंदोलन में मारे गए। अगली मांग देश से भ्रष्टाचार हटाने की है। उनके शब्दों में, बाक़ी माँगें तभी पूरी हो सकती हैं, जब सरकार बनेगी। एक साक्षात्कार में नेपाल को भारत से उम्मीदों पर सुशीला कार्की ने कहा कि भारत और नेपाल के रिश्ते बहुत पुराने हैं। सरकारें अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन जनता का रिश्ता बहुत गहरा है। मेरे बहुत से रिश्तेदार और परिचित भारत में हैं। अगर उन्हें कुछ होता है, तो हमें भी आँसू आते हैं। हमारे बीच गहरी आत्मीयता और प्रेम है। भारत ने हमेशा नेपाल की मदद की है। हम बेहद क़रीबी हैं, जैसे रसोई में बर्तन एक साथ हों तो कभी-कभी आवाज़ होती है, वैसे ही छोटे-मोटे मतभेद हो सकते हैं, लेकिन रिश्ता मज़बूत है। लेकिन जिन हालात में सुशीला कार्की ने अंतरिम सरकार की जिम्मेदारी संभाली है, वह बहुत नाजुक दौर है। उनके सामने लोगों का लोकतंत्र में भरोसा कायम रखने की बड़ी चुनौती है। हालांकि उन्होंने पद से संभालते ही ऐलान कर दिया था कि वे तो केवल अंतरिम प्रधानमंत्री हैं। देश में 5 मार्च को आम चुनाव कराए जाएंगे और नई चुनी हुई सरकार सत्ता संभालेगी। इसका अर्थ यही है कि सुशीला की अपनी कोई सत्ताकांक्षा नहीं है। नई सरकार कैसी बनती है, किसकी बनती है, यह आगे की बात है। सुशीला कार्की ने आंदोलनकारी की एक मांग मानते हुए पूर्व प्रधानमंत्री के.पी.शर्मा ओली के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवा दी है। ओली पर आंदोलनकारी छात्रों की हत्या का मुकदमा चलेगा। ओली सरकार जाने से देश के वामपंथी खेमे में चिंता है। दूसरी तरफ राजशाही चाहने वाले भी सक्रिय हैं। हालांकि लगता है कि नेपाल अभी संवैधानिक लोकतंत्र की राह पर ही चलेगा। फिलहाल नेपाल जिस उथल-पुथल से गुजर रहा है, वह बेहद चुनौतीपूर्ण है।

न्याय और कानून

विनय झैलावत
(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

कर्मचारियों और नियोक्ताओं के पक्ष में अदालत का फैसला

यह निर्णय उस न्यायिक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है जो रोजगार संबंधों में संविदात्मक प्रतिबद्धताओं की प्रवर्तनीयता का पक्षधर है। खासकर जब वे प्रशासनिक और संस्थागत औचित्य पर आधारित हों। न्यायालय ने दो लाख रुपये की निश्चित क्षतिपूर्ति को उचित पाया। प्रतिवादी की वरिष्ठता, नौकरी की आकर्षक प्रकृति और भर्ती प्रक्रिया में शामिल लागतों को ध्यान में रखते हुए, यह खंड उचित ठहराया गया। यह राशि इतनी अधिक नहीं थी कि इस्तीफे के लिए बाधा बने। यह नियोक्ता को समय से पहले नौकरी छूटने से होने वाले वास्तविक नुकसान के समानुपाती थी।

'लॉक-इन क्लॉज' का प्रभाव कर्मचारियों और नियोक्ताओं, दोनों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। नियोक्ता के दृष्टिकोण से न्यूनतम सेवा क्लॉज प्रभावी कर्मचारी प्रतिधारण के रूप में काम कर सकता है। यह कर्मचारियों की छंटनी को कम कर सकता है, दक्षता में सुधार कर सकता है और कर्मचारी की भर्ती और प्रशिक्षण से जुड़ी लागतों की भरपाई कर सकता है। हालांकि, एक कर्मचारी के दृष्टिकोण से ऐसी न्यूनतम सेवा आवष्यकताएं नौकरी छोड़ने के लचीलेपन को कम करती है। साथ ही ऐसे संगठन में शामिल होने में एक बड़ी बाधा बन सकती है, जहां इस तरह के अनिवार्य कार्यकाल लंबे होते हैं। इसका संभावित रूप से यह भी अर्थ हो सकता है कि अधिक कर्मचारी सेवा अनुबंधों में न्यूनतम सेवा अवधि का विकल्प चुनेंगे।

इसी संबंध में विजया बैंक बनाम प्रशांत बी नारनवारे के मामले में दिया गया एक महत्वपूर्ण फैसला है। इसमें भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के रोजगार अनुबंध में निहित न्यूनतम सेवा खंड की परिवर्तनीयता को बरकरार रखा गया है। यह विवाद प्रशांत को बैंक में वरिष्ठ प्रबंधक के रूप में चयनित होने पर जारी नियुक्ति पत्र के एक खंड को लेकर था। यह निर्णय रोजगार में क्षतिपूर्ति बांड की प्रवर्तनीयता, भारतीय संविदा अधिनियम, 1872 की धारा 27 के अंतर्गत व्यापार प्रतिबंध के दायरे और धारा 23 के अंतर्गत लोक नीति सिद्धांतों के अनुप्रयोग पर विचार करता है।

प्रशांत बी नारनवारे, 1999 में विजया बैंक में प्रोबेशनरी असिस्टेंट मैनेजर के रूप में शामिल हुए और बाद में पदोन्नत हुए। सन् 2006 में, विजया बैंक ने अधिकारी पदों के लिए एक भर्ती अधिसूचना जारी की, जिसमें क्लॉज 9 (डब्ल्यू) शामिल था, जिसमें चयनित उम्मीदवारों को दो लाख रुपये का क्षतिपूर्ति बांड निष्पादित करने की आवश्यकता थी।

यह राशि तीन साल पूरे करने से पहले सेवा छोड़ने पर देय थी। 7 अगस्त, 2007 (क्लॉज 11 (के) के प्रतिवादी के नियुक्ति पत्र में इसी तरह की शर्त दोहराई गई थी, जब उन्हें वरिष्ठ प्रबंधक-लागत लेखाकार के रूप में नियुक्त किया गया था। इस प्रस्ताव को स्वीकार करने और क्षतिपूर्ति बांड को निष्पादित करने पर, नारनवारे ने अपनी पिछली भूमिका से इस्तीफा दे दिया और विजया बैंक में शामिल हो गए। हालांकि, उन्होंने उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर कर धारा 9 (डब्ल्यू) और 11 (के) को असंवैधानिक और अनुबंध अधिनियम की धारा 23 और 27 के विपरीत बताते हुए चुनौती दी। उच्च न्यायालय ने बीईएमएल लिमिटेड बनाम सत्य नारायण पांडे मामले में दिए गए एक पूर्व निर्णय का हवाला देते हुए धारा 11 (के) को रद्द कर दिया और राशि वापस करने का आदेश दिया। उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश के विरूद्ध विजया बैंक ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की।

अपील स्वीकार करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय के फैसले को उलट दिया और धारा 11 (के) की प्रवर्तनीयता को बरकरार रखा। न्यायालय ने फैसला सुनाया कि धारा 11 (के) धारा 27 के तहत व्यापार पर प्रतिबंधक के दायरे में नहीं आता। यह प्रतिबंध केवल रोजगार के बने रहने तक ही लागू रहेगा, इस विशेष मामले में समाप्ति के बाद नहीं। न्यायालय ने कहा कि रोजगार की अवधि के दौरान नकारात्मक अनुबंध आमतौर पर प्रवर्तनीय होते हैं, जब तक कि वे अनुचित या अत्यधिक कठोर न हों। चूंकि यह खंड केवल न्यूनतम कार्यकाल सुनिश्चित करने का प्रयास करता था और भविष्य में रोजगार को प्रतिबंधित नहीं करता था, इसलिए इसे व्यापार पर प्रतिबंध नहीं माना जा सकता था। न्यायालय ने मानक प्रारूप अनुबंधों से जुड़ी चिंताओं को भी स्वीकार किया, जिसमें असमान सौदेबाजी शक्ति का मुद्दा भी शामिल है।

न्यायालय ने रोजगार संबंधों और प्रचलित उद्योग गतिशीलता के संदर्भ में ऐसे खंडों की जांच करने की आवश्यकता पर बल दिया। उदार और प्रतिस्पर्धी माहौल में दुर्लभ विशेषज्ञ प्रतिभाओं को बनाए रखने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए, न्यायालय ने माना कि धारा 11 (के) सार्वजनिक नीति के विरुद्ध नहीं हे। यह शर्त वैध व्यावसायिक हित को पूरा करती थी तथा कर्मचारी पर कोई असंगत बोझ नहीं डालती थी। न्यायालय ने दो लाख रुपये की निश्चित क्षतिपूर्ति को उचित पाया। प्रतिवादी की वरिष्ठता, नौकरी की आकर्षक प्रकृति और भर्ती प्रक्रिया में शामिल लागतों को ध्यान में रखते हुए, यह खंड उचित ठहराया गया। यह राशि इतनी अधिक नहीं थी कि इस्तीफे के लिए बाधा बने। यह नियोक्ता को समय से पहले नौकरी छूटने से होने वाले वास्तविक नुकसान के समानुपाती थी।

सर्वोच्च न्यायालय ने बीईएमएल मामले को इस प्रकार अलग किया कि उस मामले में, यह प्रतिबंध भविष्य के रोजगार पर भी लागू था, जबकि खंड 11 (के) केवल रोजगार अवधि के दौरान ही लागू होता था। इसके अतिरिक्त, बीईएमएल मामले में उच्च न्यायालय ने नियोक्ता के वित्तीय और परिचालन घाटे पर विचार नहीं किया, जो वर्तमान मामले में प्रासंगिक थे। यह निर्णय उस न्यायिक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है जो रोजगार संबंधों में संविदात्मक प्रतिबद्धताओं की परिवर्तनीयता का पक्षधर है। खासकर जब वे प्रशासनिक और संस्थागत औचित्य पर आधारित हों। यह न्यायालय द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के नियोक्ताओं द्वारा परिचालन निरंतरता सुनिश्चित करने और कर्मचारियों की संख्या में कमी को रोकने में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों की व्यापक चुनौतियों की व्यापक मान्यता को दर्शाता है।

यह दृष्टिकोण संविदात्मक स्वतंत्रता और कर्मचारी सुरक्षा के बीच संतुलन के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है। धारा 11 (के) को बरकरार रखते हुए, जो एक मानक प्रपत्र शर्त है जिसमें बातचीत की गुंजाइश नहीं है। न्यायालय ने कार्यकाल आधारित सेवा बांडों की परिवर्तनीयता की सीमा को शिथिल कर दिया है। खासकर जहां कर्मचारी उसी संगठन में स्थानांतरित हो रहा हो। इस निर्णय को नियोक्ताओं के लिए निश्चित अवधि के रोजगार दायित्व का मसौदा तैयार करने में उपलब्धता स्वतंत्रता को संभावित रूप से व्यापक बनाने के रूप में भी देखा जा सकता है। बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी और विमानन जैसे उच्च गतिशीलता वाले क्षेत्रों में यह चिंता बनी हुई है कि ऐसे खंडों का कठोर प्रवर्तन श्रम बाजार में कर्मचारी की तरलता और प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित कर सकता है, खासकर जब नियोक्ता के लिए वास्तविक लागत सीमांत या अपर्याप्त हो। फिर भी, निर्णय में नियुक्ति या आंतरिक पदोन्नति के स्तर पर कर्मचारियों द्वारा सावधानी बरतने की आवश्यकता की पुन: पुष्टि की गई है।साथ ही नियोक्ताओं को ऐसे प्रावधानों को तर्कसंगत, परिचालनात्मक औचित्य के साथ समर्थन देने के लिए प्रोत्साहित किया गया है, जो न्यायिक जांच का सामना कर सकें। यह किसी भी तरह से कर्मचारी की कंपनी छोड़ने के बाद अन्य करियर के अवसरों को तलाषने की स्वतंत्रता में आधा नहीं डालता। इस मामले में, सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि वसूले गए दो लाख रूपये कोई जुर्माना नहीं थे, बल्कि विजया बैंक के लिए क्षतिपूर्ति राषि थी, जिसने उस समय तक मध्य-प्रबंधन कर्मचारी नरवरणे के प्रशिक्षण में निवेष किया था। इससे कर्मचारी को भविष्य में नौकरी करने से नहीं रोका गया और न ही उनकी व्यावसायिक संभावनाओं पर कोई असर पड़ा।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अनुबंध अधिनियम की धारा 27 के प्रयोजनार्थ रोजगार के दौरान और उसके बाद लागू होने वाले प्रतिबंधात्मक अनुबंधों के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है। यह प्रतिस्पर्धी बाजार में कुशल कर्मचारियों को बनाए रखने की आवश्यकता वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के संदर्भ में रोजगार अनुबंधों पर सार्वजनिक नीति की अवधारणा को लागू करने का एक सूक्ष्म दृष्टिकोण भी प्रदान करता है। यह निर्णय इस बात पर जोर देता है कि परिनिर्धारित क्षतिपूर्ति की तर्कसंगतता का आकलन नियोक्ता के वास्तविक नुकसान और कर्मचारी की स्थिति एवं परिस्थितियों के आलोक में किया जाना चाहिए। यह निर्णय पूर्व न्यायिक निर्णयों को लागू करते समय प्रत्येक मामले के विशिष्ट तथ्यात्मक ढांचे पर विचार करने के महत्व पर भी प्रकाश डालता है।

उपलब्धि

डॉ. मयंक चतुर्वेदी
लेखक राष्ट्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड एडवाइजरी कमेटी के पूर्व सदस्य एवं पत्रकार हैं।

मप्र पर्यटन में संस्कृति, प्रकृति और नवाचार की संगति

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन कि मध्यप्रदेश पर्यटन भारत की अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार करेगा केवल एक औपचारिक प्रशंसा भर नहीं है, देखा जाए तो यह उस गहन परिवर्तन की ओर संकेत है जो राज्य ने पिछले कुछ वर्षों में पर्यटन के क्षेत्र में किया है। आज जब वैश्विक परिदृश्य में पर्यटन उद्योग अर्थव्यवस्था की धुरी, रोजगार का प्रमुख स्रोत और सांस्कृतिक कूटनीति का माध्यम बन चुका है, तब मप्र का यह उदय राष्ट्रीय ही नहीं, वैश्विक संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मप्र की धरती पर नजर डालें तो यह मानो भारत का एक सजीव मिनिएचर प्रतीत होती है। यहां की सांस्कृतिक विविधता, प्राचीन धरोहरें, प्राकृतिक सौंदर्य, जनजातीय जीवन और आध्यात्मिक वातावरण सभी मिलकर एक ऐसी समृद्ध विरासत का निर्माण करते हैं जो पर्यटकों को अद्भुत अनुभव प्रदान करती है। खजुराहो में बाहर से अंदर की यात्रा कराते कामुक शिल्प से लेकर भीमबेटका की गुफा चित्रकल, सांची के स्तूप, ग्वालियर-ओरछा के भव्य किले, सतपुड़ा की गहरी वादियों से लेकर बांधवगढ़ और कान्हा के बाघों तक यह प्रदेश पर्यटन के हर आयाम को अपने भीतर समेटे हुए है। किंतु इस विरासत को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य केवल प्राकृतिक उपहारों से नहीं हुआ है, उसके लिए दूरदृष्टि, प्रशासनिक इच्छाशक्ति और सतत प्रयास आवश्यक रहे हैं। अभी हाल ही में केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड (एमपीटीबी) को प्रतिष्ठित बेस्ट स्टेट टूरिज्म बोर्ड अवॉर्ड से सम्मानित किया है। इस राष्ट्रीय स्तर के सम्मान ने भारत के पर्यटन क्षेत्र में नवाचार, उत्कृष्टता और सतत विकास को लेकर मध्य प्रदेश की अग्रणी भूमिका को रेखांकित किया है। इस तरह के अनेक सम्मान एवं पुरस्कार लगातार मप्र को पर्यटन क्षेत्र में मिल रहे हैं। वास्तव में यही वह बिंदु है जहां राज्य के पर्यटन विभाग और विशेष रूप से अपर मुख्य सचिव पर्यटन, संस्कृति, गृह और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व तथा प्रबंध संचालक, मप्र टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला के नेतृत्व को रेखांकित करना जरूरी हो जाता है। प्रशासनिक सेवा में अपने व्यापक अनुभव और गहन समझ के कारण शुक्ल ने पर्यटन को केवल सरकारी विभाग की गतिविधि न मानकर इसे राज्य की अर्थव्यवस्था और समाज का केंद्रबिंदु बनाने का प्रयास किया। उनके प्रयासों ने यह सिद्ध किया कि यदि नियोजन और क्रियान्वयन में स्पष्टता हो तो किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन संभव है। सबसे पहले बात करें दृष्टिकोण की। शुक्ल ने पर्यटन को एक समग्र विकास उपकरण के रूप में देखने की सोच विकसित की। उनके लिए पर्यटन केवल होटल या गाइड तक सीमित नहीं था, बल्कि यह ग्रामीण आजीविका, महिला सशक्तिकरण, हस्तशिल्प संवर्द्धन और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा एक समग्र अभियान था। यही कारण है कि उन्होंने पर्यटन स्थलों को विकसित करते समय स्थानीय समुदाय को केंद्र में रखा। चाहे ओरछा में होमस्टे मॉडल की शुरुआत हो या भील व गोंड अंचलों में सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन, इन पहलों ने न केवल पर्यटकों को आकर्षित किया बल्कि स्थानीय लोगों के लिए स्थायी आजीविका भी सुनिश्चित की।

पर्यटन की आधुनिक अवधारणा में अनुभव आधारित यात्रा की बड़ी भूमिका है। शुक्ल ने इस प्रवृत्ति को भलीभांति समझा और राज्य में नाइट सफारी, हेरिटेज वॉक, एडवेंचर ट्रेल्स और कुलिनरी फेस्टिवल्स जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया। इससे एक ओर जहां पर्यटक केवल दर्शक न रहकर सहभागी बन पाए, वहीं दूसरी ओर राज्य ने खुद को एक ब्रांड के रूप में स्थापित किया। 'एमपी गजब है' जैसी टैगलाइन को नई ऊर्जा मिली और यह केवल एक विज्ञापन वाक्य नहीं रहा, बल्कि वास्तविक अनुभवों से जुड़कर पर्यटकों के मन में बसा।

आधुनिक तकनीक के प्रयोग में भी शिवशेखर शुक्ल ने खास पहल की। डिजिटलीकरण के युग में पर्यटन को यदि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे लाना है तो तकनीक का उपयोग अनिवार्य है। शुक्ल ने डिजिटल कैंपेन, वर्चुअल टूर और ऑनलाइन बुकिंग पोर्टल को बढ़ावा दिया। कोविड-19 महामारी के दौरान जब यात्रा ठप हो गई थी, तब मप्र पर्यटन विभाग ने वर्चुअल प्लेटफॉर्म के जरिए पर्यटकों से जुड़ाव बनाए रखा। यह दूरदृष्टि ही थी जिसने राज्य को महामारी के बाद तेजी से उबरने में मदद की। आज राज्य की पहचान ईको-टूरिज्म से भी है। सतपुड़ा, बांधवगढ़, कान्हा, पेंच जैसे राष्ट्रीय उद्यान विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं। किंतु चुनौती यह थी कि इन उद्यानों के विकास और संरक्षण के साथ-साथ वहां रहने वाले स्थानीय समुदायों को भी जोड़ा जाए। शुक्ल ने इस दिशा में ईको-टूरिज्म बोर्ड की गतिविधियों को मजबूती दी। अब गांवों में ईको हॉटल्स, गाइड प्रशिक्षण और स्थानीय हस्तशिल्प विपणन जैसी योजनाओं के जरिए वन्यजीव संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया जा रहा है।

इसी तरह से संस्कृति और पर्यटन का गहरा संबंध है। शुक्ल ने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए खजुराहो डांस फेस्टिवल, तांगा महोत्सव, ओरछा महोत्सव और मंडला आदिवासी उत्सव जैसे आयोजनों को नया आयाम दिया। इन आयोजनों ने एक ओर जहां देश-दुनिया के कलाकारों को मंच दिया, वहीं दूसरी ओर राज्य की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक आत्मा को वैश्विक पहचान दिलाई। इसके लिए विदेशों में रोड शो, अंतरराष्ट्रीय ट्रैवल मार्ट्स में भागीदारी और एमपी टूरिज्म की आक्रामक मार्केटिंग के माध्यम से राज्य की उपस्थिति को दर्ज कराया गया। परिणामस्वरूप मप्र न केवल घरेलू पर्यटकों का प्रिय गंतव्य बना है, बल्कि विदेशी पर्यटकों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है।आंकड़े बताते हैं कि 2024 में राज्य ने लगभग 13.41 करोड़ पर्यटकों का स्वागत किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में करीब 19.6 प्रतिशत अधिक है। इनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या लगभग 1.67 लाख रही। राज्य सरकार के अनुसार पर्यटन से प्राप्त राजस्व में वर्ष 2024-25 के दौरान 17 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई, और इसका योगदान प्रदेश की सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 3 से 3.5 प्रतिशत तक रहा है। अब लक्ष्य इसे आगामी वर्षों में 5 प्रतिशत तक पहुँचाने का है। अतः पर्यटन में बढ़ते निवेश का सीधा असर रोजगार पर दिखाई दे रहा है। वैश्विक निवेश सम्मेलन 2025 में पर्यटन क्षेत्र से जुड़े प्रस्तावों की राशि लगभग रू. 4,468 करोड़ रही। एक अध्ययन के अनुसार, पर्यटन क्षेत्र में प्रत्येक रू. 10 लाख का निवेश औसतन 90 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियाँ सृजित करता है। इस पैमाने पर देखें तो यदि घोषित निवेश पूरी तरह लागू होता है, तो लाखों नए रोजगार अवसर पैदा हो सकते हैं। इसी बीच, मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड ने कौशल विकास कार्यक्रमों पर भी जोर दिया है। अब तक 4000 से अधिक युवाओं को हॉस्पिटैलिटी, ट्रैवल मैनेजमेंट और सांस्कृतिक आयोजनों से जुड़े कौशलों का प्रशिक्षण दिया गया है। इनमें से लगभग 50 प्रतिशत युवा पूर्णकालिक पेशेवर के रूप में कार्यरत हो चुके हैं। यह संकेत है कि पर्यटन न केवल बड़े निवेश से बल्कि मानवीय संसाधन विकास से भी रोजगार का मजबूत आधार तैयार कर रहा है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि यह वही परिदृश्य है, जिसकी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संकेत करते हुए कहा था कि 'मध्यप्रदेश पर्यटन भारत की अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार करेगा।' वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा मध्यप्रदेश पर्यटन की प्रशंसा इसीलिए सार्थक है क्योंकि यह केवल प्राकृतिक सौंदर्य की देन नहीं, बल्कि योजनाबद्ध प्रशासनिक प्रयासों का परिणाम है। जिसमें शिवशेखर शुक्ल जैसे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका अग्रगण्य है। निश्चित ही आज शुक्ल के नेतृत्व में पर्यटन विभाग ने यह सिद्ध किया है कि यदि ईमानदारी और समर्पण से काम हो तो भारत के किसी भी राज्य को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया जा सकता है। अंततः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मध्यप्रदेश पर्यटन की इस नई उड़ान के केंद्र में शिवशेखर शुक्ल जैसे अधिकारी की दूरदृष्टि और समर्पण प्रमुख कारक है। उनका कार्य हमें यह विश्वास दिलाता है कि यदि नेतृत्व सही हो, दृष्टिकोण स्पष्ट हो और प्रयास निरंतर हों तो कोई भी राज्य अपनी सीमाओं से निकलकर वैश्विक क्षितिज पर चमक सकता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रभुनाथ शुक्ल
लेखक व्यंग्यकार हैं।

गजोधर जी ! हिंदी की खाइए और अंग्रेजी की गाइए

गजोधर भईया की रंगत सितंबर लगते ही बदल जाती है। क्योंकि सितंबर का पूरा पखवाड़ा हिंदी श्राद्ध के रूप में मनाया जाता है। जिस तरह पितृपक्ष में पितरों का तर्पण पखवाड़ा होता ठीक उसी तरह अपनी हिंदी को याद करने के लिए भी 14 सितंबर से श्राद्ध पखवारे की शुरुवात होती है। संयोग से पितृपक्ष का समय भी हिंदी श्राद्ध पखवाड़े के ठीक बाद आता है। कितना अच्छा संयोग है। बेचारी हिंदी को 365 दिन कोई नहीं पूछता, लेकिन 15 दिन बेचारी का श्राद्धकर्म मनाया जाता है।

हमारे गाजोधर भईया हिंदी के सबसे बड़े सेवक माने जाते हैं। मोहल्ले में उन्हें हिंदीसेवी के रूप में जाना जाता है। हिंदी पखवाड़े भर उन्हें फुर्सत नहीं मिलती है। हर जगह उन्हें सम्मानित किया जाता है। साल, नारियल, प्रशस्ति पत्र एवं अंगवस्त्र से उनका घर भर जाता है। लेकिन श्राद्ध पखवाड़ा बीतने के बाद उन्हें कोई घास नहीं डालता। गजोधर भईया जैसे हिंदीसेवी की दुर्गति उस समय और होती है जब रुकी हुई वृद्धा पेंशन चालू करवाने के लिए विभाग के उसी बाबू की जेब गर्म करनी पड़ती है जिसने हिंदी दिवस पर उन्हें अंगवस्त्र और श्रीफल भेंट किया था। उस समय उनकी हिंदीसेवा का त्याग अखाड़े में पटखनी खाए पहलवान की तरह होता है।

वैसे भी गाजोधर भईया हिंदी दिवस अंग्रेजी में मानते हैं। रात्रिभोज नहीं डिनर करते हैं। दोपहर को लंच और सुबह गुड़ मॉर्निंग करते है। सुबह टहलने नहीं वॉक पर जाते हैं। हिंदी के लिए जब मोबाइल कि की-पैड दबाते हैं तो अंग्रेजी में ही उन्हें हिंदी के लिए एक नहीं वन दबाते हैं। मोबाइल पर बातचीत शुरू करने के पूर्व हैलो करते हैं। उनका पोता नमस्ते नहीं गुड़ मॉर्निंग करता है। रात्रि में गुड़ नाईट और बाय-बाय बोलता है। जन्मदिवस की शुभकामना का संदेश वह हैप्पी बर्डे बोल कर देते हैं। फेसबुक पर वह नाइस, रिप और वेलकम बोलते हैं। पोते को पढ़ाते हैं तो ए फॉर एप्पल और बी फॉर बॉल बोलते हैं। एक -दो-तीन-चार, प्रेम से बोलो जै श्रीराम नहीं वन टू का फोर, फोर टू का वन, माई नेम इज लखन पढ़ाते हैं। फिर तुम्हीं बताओ गजोधर भईया खाओगे हिंदी का और गाओगे अंग्रेजी का। फिर क्या सिर्फ शाल ओढ़ने से हिंदी की लुटिया डूबने से बच जाएगी।

डीप टेक से सशक्त होता भारत

अभियंता दिवस पर विशेष

अतुल गोयल
लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं।

15 सितम्बर का दिन भारत में अभियंता दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो केवल इंजीनियरों के सम्मान का अवसर नहीं है बल्कि उन असंख्य विचारों, प्रयासों और तकनीकी नवाचारों का उत्सव है, जिन्होंने भारत को आधुनिकता की राह पर अग्रसर किया है। इस वर्ष अभियंता दिवस का विषय है 'डीप टेक और इंजीनियरिंग उत्कृष्टता: भारत के टेकएड को आगे बढ़ाना।' यह विषय विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि भारत आज तकनीकी नवाचार के नए युग में प्रवेश कर चुका है, जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, रोबोटिक्स, जैव-इंजीनियरिंग और नैनो टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में डीप टेक समाधान देश की आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान बन रहे हैं।

भारत की इंजीनियरिंग यात्रा की नींव उन दूरदर्शी अभियंताओं ने रखी थी, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद निर्माण, विकास और आत्मनिर्भरता का सपना देखा। इनमें सबसे प्रेरणादायी नाम है मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का, जिन्हें आधुनिक भारत का विश्वकर्मा कहा जाता है। 15 सितम्बर 1860 को कर्नाटक के मैसूर में जन्मे विश्वेश्वरैया ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह आज भी भारत की आधारशिला है। कृष्णाराज सागर बांध, खड़कवासला जलाशय, तिगरा बांध जैसी परियोजनाओं के माध्यम से उन्होंने जल संरक्षण और सिंचाई व्यवस्था को नई दिशा दी। बाढ़ प्रबंधन की आधुनिक प्रणालियों को लागू कर उन्होंने देशभर में इंजीनियरों के लिए आदर्श स्थापित किया। आज जब हम डीप टेक की बात करते हैं तो जल प्रबंधन, स्मार्ट सिटी निर्माण, ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरणीय संकटों का समाधान जैसे क्षेत्र उसी दूरदृष्टि की अगली कड़ी हैं, जिनकी शुरुआत विश्वेश्वरैया जैसे महान अभियंताओं ने की थी। विश्वेश्वरैया का योगदान केवल संरचनात्मक निर्माण तक सीमित नहीं था। उन्होंने उद्योग और शिक्षा के क्षेत्र में भी कई संस्थाओं की स्थापना कर तकनीकी कौशल को बढ़ावा दिया। मैसूर में उद्योगों की शुरुआत से लेकर विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग जैसी संस्थाओं की स्थापना तक, उन्होंने तकनीकी प्रतिभा को निखारने का सतत प्रयास किया। इंजीनियरिंग को जन-जन तक पहुंचाने की उनकी दृष्टि ने भारत को ऐसे अभियंता दिए, जो देश की आधारभूत संरचना से लेकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उच्चतम स्तर तक कार्य कर रहे हैं। आज भारत में स्टार्टअप संस्कृति, नवाचार और विज्ञान आधारित समाधान उसी विरासत का विस्तार हैं।

वर्तमान समय में डीप टेक उन समस्याओं के समाधान के लिए केंद्र बिंदु बन चुका है, जिनका सामना पारंपरिक तकनीकें नहीं कर पा रही थी। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, स्वास्थ्य सेवाओं में पहुंच, कृषि उत्पादकता में गिरावट, शहरीकरण और आपदा प्रबंधन जैसी समस्याएं अब तकनीकी रूप से जटिल लेकिन संभव समाधान की मांग करती हैं। भारत सरकार की नीति के तहत 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' और 'डिजिटल इंडिया' जैसे कार्यक्रम डीप टेक को अपनाकर नवाचार और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इंजीनियरों की भूमिका अब केवल मशीनें बनाने या संरचनाओं के निर्माण तक सीमित नहीं रही बल्कि वे डेटा विश्लेषण, स्वचालन, एआई आधारित निर्णय प्रणाली, स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और सटीक चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में नए समाधान विकसित कर रहे हैं। आज भारत के युवा अभियंता डीप टेक की दिशा में कई उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित स्वास्थ्य उपकरण, ड्रोन तकनीक से कृषि उत्पादकता में सुधार, स्मार्ट ग्रिड के जरिए ऊर्जा का बेहतर वितरण और 3डी प्रिंटिंग से निर्माण सामग्री का नवाचार, ये सभी पहल तकनीकी उत्कृष्टता का प्रमाण हैं। न केवल बड़े शहरों में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंजीनियर नई तकनीकों का उपयोग कर जल संरक्षण, सौर ऊर्जा और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं। तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में भारत की प्रतिस्पर्धा अब वैश्विक मंच पर स्थापित हो रही है और इंजीनियरों की विशेषज्ञता उसे नए आयाम प्रदान कर रही है। डीप टेक का अर्थ केवल जटिल एल्गोरिदम या बड़े उपकरण नहीं है बल्कि यह ज्ञान, अनुसंधान, वैज्ञानिक सोच, प्रयोग और व्यावहारिक कार्यान्वयन का संयोजन है। विज्ञान का उद्देश्य जानना है जबकि इंजीनियरिंग का उद्देश्य करना, यही बात अमेरिकी इंजीनियर हेनरी पेट्रोस्की ने कही थी। भारत में इंजीनियर इसी सिद्धांत पर काम करते हुए वैज्ञानिक खोजों को व्यावहारिक समाधान में बदल रहे हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में बायोटेक्नोलॉजी और मेडिकल डिवाइसेज, ऊर्जा क्षेत्र में ग्रीन हाइड्रोजन और बैटरी तकनीक तथा परिवहन क्षेत्र में विद्युत वाहन जैसे नवाचार इंजीनियरों की अनथक मेहनत का परिणाम हैं। भारत के तकनीकी विकास की नींव में शिक्षा का विशेष योगदान है। देश में इंजीनियरिंग कॉलेजों, आईआईटी, एनआईटी और अनुसंधान संस्थानों ने तकनीकी उत्कृष्टता का मजबूत ढांचा खड़ा किया है। अब इन संस्थानों में डीप टेक आधारित पाठ्यक्रमों, नवाचार प्रयोगशालाओं और स्टार्टअप इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना की जा रही है ताकि युवा अभियंता भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान विकसित कर सकें। उच्च शिक्षा में डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा, रोबोटिक्स और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे पाठ्यक्रमों को शामिल कर छात्रों को नई तकनीकों की दिशा में प्रशिक्षित किया जा रहा है। यही प्रयास भारत को वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में आगे ले जा रहे हैं।विश्वेश्वरैया की जीवन यात्रा हमें सिखाती है कि अनुशासन, मेहनत और दूरदृष्टि से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि इंजीनियर केवल तकनीकी समस्याओं का समाधान नहीं करते बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए बेहतर जीवन की व्यवस्था बनाने में योगदान देते हैं। उन्होंने जल आपूर्ति, बाढ़ नियंत्रण, सड़क निर्माण, उद्योग स्थापना और शिक्षा प्रसार जैसे क्षेत्रों में जो कार्य किए, वे आज भी इंजीनियरों के लिए प्रेरणा हैं। उनके विचारों से स्पष्ट होता है कि तकनीकी उत्कृष्टता तभी संभव है, जब ज्ञान, सेवा और नवाचार का समन्वय हो। आज जब हम डीप टेक की ओर बढ़ रहे हैं तो विश्वेश्वरैया की परंपरा को आगे बढ़ाना आवश्यक है। नई तकनीकें तभी सफल होंगी, जब उनमें समाज की आवश्यकताओं का समावेश हो। उदाहरण के लिए, जल संकट का समाधान तभी संभव है, जब जल संरक्षण की पारंपरिक विधियों को आधुनिक सेंसर तकनीक से जोड़ा जाए। चिकित्सा सेवाओं में पहुंच तभी बढ़ेगी, जब टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म और डेटा एनालिटिक्स ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचे। स्मार्ट कृषि तभी प्रभावी होगी, जब किसानों को डेटा आधारित सलाह और उपकरण समय पर मिलें। इसलिए डीप टेक का उद्देश्य केवल नवाचार नहीं बल्कि समावेशी विकास है। भारत में तकनीकी उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और निजी क्षेत्र मिलकर कार्य कर रहे हैं। स्टार्टअप इंडिया योजना के तहत लाखों युवा उद्यमियों को वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन और वैश्विक बाजार तकपहुंच प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही उद्योगों में रिसर्च और डवलपमेंट पर ध्यान देकर नई तकनीकों का विकास किया जा रहा है। ऑटोमेशन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ब्लॉकचेन, क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकें इंजीनियरों को नई संभावनाओं की दिशा में प्रेरित कर रही हैं। इस दिशा में नीतिगत समर्थन, कौशल विकास कार्यक्रम और उद्योग-अकादमिक सहयोग का माहौल बनाना आवश्यक है। भूमिका आपदा प्रबंधन में भी इंजीनियरों की अत्यंत महत्वपूर्ण है। भूकंप, बाढ़, चक्रवात और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए डीप टेक आधारित पूर्वानुमान प्रणाली, उपग्रह डेटा विश्लेषण, और आपातकालीन सहायता प्रणाली विकसित की जा रही हैं। इसके अलावा शहरी क्षेत्रों में ट्रैफिक प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण और जल निकासी जैसी समस्याओं के समाधान के लिए सेंसर आधारित स्मार्ट तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। ये सभी प्रयास इंजीनियरिंग उत्कृष्टता के उदाहरण हैं, जो समाज को सुरक्षित और सतत विकास की दिशा में ले जा रहे हैं।

भारत की इंजीनियरिंग यात्रा में महिलाओं का योगदान भी लगातार बढ़ रहा है। आज कई महिला अभियंता डीप टेक आधारित परियोजनाओं में नेतृत्व कर रही हैं। विज्ञान, रोबोटिक्स, एआई, पर्यावरण इंजीनियरिंग और बायोटेक में महिलाएं नए मानक स्थापित कर रही हैं। यह बदलाव न केवल सामाजिक समावेशन को बढ़ावा दे रहा है बल्कि तकनीकी क्षेत्र में विविधता और नवाचार का वातावरण भी निर्मित कर रहा है। इंजीनियरिंग केवल तकनीकी दक्षता नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण का महायज्ञ है। डीप टेक और इंजीनियरिंग उत्कृष्टता का उद्देश्य यही है कि हम विज्ञान की गहराईयों तक जाकर ऐसे समाधान विकसित करें, जो समाज की वास्तविक समस्याओं का उत्तर बनें। विश्वेश्वरैया जैसे महान अभियंताओं की प्रेरणा से आज के युवा इंजीनियर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। उन्हें चाहिए ज्ञान, अनुशासन, नवाचार और सेवा का समन्वय ताकि भारत तकनीकी विकास की नई ऊंचाइयों को छू सके। डीप टेक की राह में चलकर इंजीनियर न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं बल्कि वैश्विक स्तर पर एक नई तकनीकी शक्ति के रूप में देश की पहचान स्थापित कर रहे हैं। यही इस दिवस का संदेश है, ज्ञान से नवाचार, नवाचार से सेवा और सेवा से समृद्ध भारत।

पुस्तक समीक्षा

डॉ. सुधीर सक्सेना

घटित होते इतिहास का आईना

अजय बोकिल की एक किताब आई है - 'लाजवाब शख्सियतें : कुछ लाइक्स।' यह उनकी दूसरी किताब है। इसके पहले उनकी एक किताब आई थी- 'कोरोना काल की दंश कथायें।' इस दूसरी किताब में उनके विभिन्न सेलेब्रिटीज, व्यक्तियों, चरित्रों और स्मारकों पर लिखे लेखों का संकलन है। इसमें उनके मन की बातें है; सीधी निर्भीक और बेलाग। पौने तीन सौ पन्नों की इस किताब की शुरूआत पिक बैनी लता मंगेशकर से होती है, जिसे वह 'सुस्वरा' कहते हैं और मानते हैं कि उसमें पराकाष्ठा के शिखरों को वामन बना देने की शक्ति है। उसके सप्त सुरों में नवरसों की परिपूर्णता है और उसका गायन चित्त को चित्त से जोड़ता है। वह लिखते हैं कि लता आत्मा से गाती है। सुरों की कोई ममी नहीं होती और लता दीदी के स्वर श्रोता की आत्मा से एकाकार हो जाते हैं।

अजय बोकिल पत्रकार-लेखक हैं, लिहाजा हम समानधर्मा या हमबिरादर या एक ही वृहत्तर कुल के सदस्य हैं। वह मुझसे कुछ कनिष्ठ हैं; कुछ साल छोटे। उन्हें पत्रकारिता में करीब चार दशक होने को आये। इधर करीब दो दहाइयों से मैं उनके लेखन को बारीकी से देखता आया हूँ और उनके लिखे को पसंद करता हूं। पसंद इसलिये नहीं कि उन्होंने बड़ी ऊंचाइयां छुई हैं, बल्कि इसलिये कि एक तो वह ऊर्जावान हैं, चेतस हैं, पूर्वाग्रह और दुराग्रह से परे हैं, खूब पढ़ते हैं और अपने को निरंतर माँजते रहे हैं। वह फौरी फतवे नहीं देते, आक्रामक या तल्ख नहीं होते, सन्दर्भों में गहरे धँसते हैं और सरल-सहज तरीके से कथ्य को प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा अलंकृत, कृत्रिम या किताबी नहीं है, बल्कि उसमें रवानी है, वह बहते नीर की मानिंद है। उसमें लोल लहरें हैं, प्रवाह है, स्निग्धता है। वह तटबंधों को तोड़ती नहीं, बल्कि उससे अठखेलियां करती और नयी ऊर्मियां रचती है। बाज वक्त वह उसमें त्वरा से चमक पैदा करते हैं। भाषा को लेकर वह शुद्धतावादी या रूढ़िप्रिय नहीं हैं उनमें किंचित टकसाली वृत्ति भी है। मराठी भाषी होना उनकी भाषा को अलग रंगत देता है।

इन्हीं अजय बोकिल की एक किताब आई है – 'लाजवाब शख्सियतें : कुछ लाइक्स।' यह उनकी दूसरी किताब है। इसके पहले उनकी एक किताब आई थी – 'कोरोना काल की दंश कथायें।' इस दूसरी किताब में उनके विभिन्न सेलेब्रिटीज, व्यक्तियों, चरित्रों और स्मारकों पर लिखे लेखों का संकलन है। इसमें उनके मन की बातें है; सीधी निर्भीक और बेलाग। पौने तीन सौ पन्नों की इस किताब की शुरूआत पिक बैनी लता मंगेशकर से होती है, जिसे वह 'सुस्वरा' कहते हैं और मानते हैं कि उसमें पराकाष्ठा के शिखरों को वामन बना देने की शक्ति है। उसके सप्त सुरों में नवरसों की परिपूर्णता है और उसका गायन चित्त को चित्त से जोड़ता है। वह लिखते हैं कि लता आत्मा से गाती है। सुरों की कोई ममी नहीं होती और लता दीदी के स्वर श्रोता की आत्मा से एकाकार हो जाते हैं। उनके स्वर वह रस पैदा करते हैं; जिससे पूरी दुनिया समरस हो सके। यह उद्धरण इसलिये कि आप अजय के लेखन की तासीर बूझ सकें ओर उसके अंदाजे-बयां को जान सकें। इससे अगला ही लेख अभिनय सम्राट दिलीप कुमार पर है। शीर्षक है : युग पुरूष के नाभि चक्र में अद्वितीय दिलीप कुमार। पहले नाभि चक्र और फिर अद्वितीय। शब्द नया चाक्षुष बिंब रचते हैं। यह वही दिलीप साहब हैं, जो बालीवुड के इतिहास को दो भागों में बांट देते हैं : दिलीप पूर्व और दिलीप पश्चात। दिलीप एक्टिंग के वो आचार्य हैं, जिनके सबक बार-बार दोहराये जाते हैं और आगे भी दोहराये जाते रहेंगे। .... बाजार उनके कॅरियर को डिक्टेट नहीं करता। उलटे उन्होंने बाजार को डिक्टेट किया। अजय मानते हैं कि दिलीप साहब अभिनय के साथ आकाशीय ऊंचाई भी है। उनके स्कूल के सबक सोने से खरे हैं और जो अपने समय में खरा है, वह हर युग में खरा रहेगा। तो यह है एथिक्स और एस्थेटिक्स का परिपाक। अजय बिग बी पर लिखते हैं। भूपिंदर सिंह पर लिखते हैं। मोहम्मद रफी, टॉम आल्टर, बाला सुब्रमण्यम, रजनीकांत, ओमपुरी, श्रीदेवी, इरफान खान, सलमान खान पर लिखते हैं। और तो और वह सिने गीतकार अभिलाष पर भी लिखते हैं, जिसने 'इतनी शक्ति हमें देना दाता' जैसा प्रार्थना गीत लिखा। वह राहुल बजाज, स्टीफन हाकिंग, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, एमएस धोनी, सनी लियोन, जसदेव सिंह, करूणानिधि, कल्याण सिंह, एलके अडवाणी, मायावती, राहुल गांधी, रॉबर्ट वाड्रा, श्रीधरन, शरद यादव, जसवंत सिंह, मुलायम सिंह आदि पर लिखते हैं, लेकिन तब ज्यादा अच्छा लगता है और उनकी खोजी वृत्ति और दृष्टिकोण का पता चलता है। जब वह योग शिक्षिका राफिया नाज, असाध्य रोगी अर्पण सरकार, जूतों के अस्पताल के मालिक नरसीराम, वृक्ष-सखी इलांगबाम बेलेंतीना, त्रिवेंद्रम की युवतम महापौर आर्या राजेन्द्रन, रेडियो आरजे मलिष्का, उड़नपरी हिमा दास, दुनिया में विशालतम परिवार के मुखिया जिओन चाना, छत्तीसगढ़ की लोक गायिका पूनम तिवारी, ग्रेटा थनबर्ग या सायबोर्ग के बारे में लिखते हैं। उनके ये सूचनाप्रद लेख हमारे ज्ञानकोष को समृद्ध करते हैं। उनके ये लेख सतही या हवा-हवाई न होकर व्यापक संदर्भों की पर्तें उघाड़ते हैं। वह जब गंगा की शुद्धता पर लिखते हैं तो

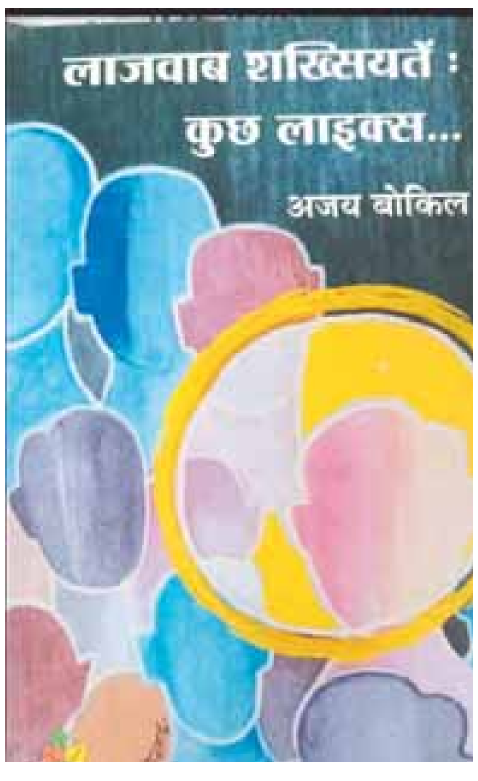

सम्राट अकबर की बात करते हैं, जब किन्नरों पर लिखते हैं, तो मलिक काफूर का जिक्र करते हैं और हिन्दु बनाम हिंदुत्व की बात करते हैं, तो भारत को पुण्यभूमि और पितृभूमि मानने वाले सावरकर की ही बात नहीं करते, करन उन चंद्रनाथ वसु की भी बात करते हैं; जिन्होंने सन 1892में पहले पहल 'हिन्दुत्व : हिन्दू पत्रिका इतिहास में हिंदुत्व शब्द का प्रयोग किया था। अपने कतिपय लेखों में अजय दीवार पर लिखी इबारतों को पढ़ते नजर आते हैं और अपने निष्कर्षों को भी परोसते हैं, लेकिन ऐसा वह तभी करते हैं, जब वह स्वयं 'कन्विंस' या आश्वस्त होते हैं। 94वें ऑस्कर समारोह में जब वह बिल स्मिथ और क्रिस रॉक के अप्रिय प्रसंग के बहाने कॉमेडी कला की बात करते हैं, तो धार्मिक-राजनीतिक कॉमेडी पर संकट की भी बात करते हैं। वह कुणाल कामरा और मुनब्बर फारूकी का जिक्र करते हैं और कहते हैं कि कॉमेडी का जवाब कॉमेडी हो सकता है, थप्पड़ नहीं।

किताब में संकलित कुछ लेख अलहदा किस्म के हैं और उन्हें वर्गीकृत करना कठिन है। उनसे अजय के पत्रकारीय या लेखकीय व्यक्तित्व का पता चलता है। ऐसा ही एक लेख है 'माणिक से काफी पहले लीलाधर जोशी ने लिखी थी सादगी की स्क्रिप्ट यह दस्तावेजी लेख है। मीडिया पर एक-दो आलेखों के अलावा एक लेख है: एक लोकतंत्रवादी अखबार की मौत पर दो आंसू। यह हांगकांग के 'एप्पल डेली' पर एकाग्र है और 2015 में सुश्री चान पुई मान के पहली महिला प्रधान संपादक बनने के बाद की अभिव्यक्ति की निर्भीक शोकांतिका की गाथा है। यह लेख समकाल में मीडिया की दशा और दिशा की बात करता है। अजय दमन के लिए दक्षिण और वाम की यकसां लानत मलामत करते हैं। लोकशाही और राजशाही की तर्ज पर वह नया शब्द गढ़ते हैं 'ठोकशाही।' मुर्गे की अभिव्यक्ति की आजादी के हक में एक न्यायोचित मांग दिलचस्प है। इसमें और अन्यत्र भी। चुहल है और तंज भी। मुर्गा फ्रांस का राष्ट्रीय पक्ष है। उसे कोर्ट में घसीटने पर अदालत फैसला सुनाती है कि मुर्गे को बांग देने का नैसर्गिक आधार है। सुबह-सुबह मुर्गे की बांग में रूमानियत नजर आना एक नया रूपक गढ़ता है।

किताब में कुछ ऐसे लेख उन लोगों के बारे में हैं, जिन्होंने अजय के पत्रकारीय व लेखकीय व्यक्तित्व की रचना में बड़ी भूमिका निभाई है। अभय छजलानी, प्रभु जोशी, अजय यादव और महेंद्र सेठिया के बारे में आलेख ऐसे ही आलेख हैं। ये आलेख हमारे वक्त का रोजनामचा भी हैं। ये हमें शब्द-संसार के अंतर्लोक की सैर कराते हैं और बीते कालखंड के व्यक्तित्वों के बहाने मानवीय भावनाओं की सुरभि का एहसास कराते हैं। अजय ने प्रभुदा की यह सीख गांठ बांध ली कि आपका दृष्टिकोण आपके लेखन की विश्वसनीयता को स्थापित करता है। उन्होंने उनकी यह बात भी मानी कि किताब घटित होते इतिहास का आईना है। बड़े लोगों की संगत का असर अजय पर पड़ा। उन्होंने निकष निर्मित किये और उन पर खरा उतरने की कोशिश की। इसी की बदौलत वह 'बेशक राजनीतिक लड़ाइयां हमेशा लंबी होती है, लेकिन उसे लड़ने के तरीके समय सापेक्ष होने चाहिये जैसे निष्कर्ष प्रस्तुत कर सके।

किताब में काव्योपम उक्तियों की कमी नहीं है। पृष्ठ 64 पर लेख का शीर्षक है –'मनुष्यता की वो तस्वीरें जिनसे गांधीवाद का कोलाज़ बनता है पठनीय है। युवा कलेक्टर प्रीति मैथिल, आईएएस स्वरोचित सोमवंशी, कोटा की कलेक्टर रूक्मणि रियार, मेघालय के राम सिंह धर, त्रिशूर की अपर्णा लव कुमार, मणिपुर के आर्मस्ट्रांग, बलरामपुर के अवनीश शरण का नजीरों के सहारे अजय कहते हैं –गांधी आज भी जिंदा हैं और समाज की किसी न किसी खिड़की से झांक रहे हैं। बेशक समाज और मानवता की सेवा ही गांधी दर्शन का व्यावहारिक और सगुण स्वरूप है। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने की पूर्वपीठिका में भारतीय राजनीति में मुलायम सिंह और लालू यादव की भूमिका का आकलन अजय की काबिले गौर निष्पत्ति है। कुल जमा यह किताब उनसे बड़े फलक के दस्तावेजी लेखन की उम्मीदें जगाता है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।)

सच्ची अपराध कथा पर एक रोचक फिल्म

मनोज बाजपेयी का अभिनय इस फिल्म का सबसे मजबूत पक्ष है, उन्होंने इंस्पेक्टर जेंडे के चरित्र को बड़ी कुशलता से निभाया है। मनोज के अभिनय में गंभीरता भी है और हल्के-फुल्के मज़ाक़ से भरी सहजता भी। सबसे अच्छी बात यह है कि उनकी कॉमिक टाइमिंग बिल्कुल नैसर्गिक लगती है, कहीं भी ओवरएक्टिंग महसूस नहीं होती है। कई जगह उनका अंदाज़ क्लासिक कॉमेडीज की याद दिलाता है। कार्ल भोजराज की भूमिका में जिम सर्भ जबरदस्त हैं। उनका करिश्मा और चालाकी दोनों स्क्रीन पर साफ झलकती हैं। हर सीन में वह दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं और एक असली - स्मार्ट क्रिमिनल की इमेज बना देते हैं। मनोज बाजपेयी और जिम सर्भ की टक्कर ही इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत है।

नेटफ्लिक्स पर रिलीज-' इंस्पेक्टर जेंडे ' इस सप्ताह की सबसे चर्चित फिल्म है। इसे अभिनेता चिन्मय माण्डलेकर ने निर्देशित किया है और बतौर निर्देशक यह उनकी पहली फिल्म है। फिल्म मुम्बई पुलिस के ऑफिसर मधुकर जेंडे की सच्ची कहानी पर आधारित है। जेंडे वही अफसर हैं जिन्होंने अपराधी चार्ल्स शोभराज को दो बार पकड़ा था । पहली बार वर्ष 1971 में और फिर वर्ष 1986 में गोवा में, जब वह तिहाड़ जेल से फरार हुआ था। हिन्दी व मराठी फिल्मों के अभिनेता चिन्मय डी मंडलेकर की बतौर निर्देशक यह भले ही पहली फिल्म है, लेकिन कहीं से भी इसका अहसास इसलिए नहीं होता है, क्योंकि तकनीकी तौर पर वह फ्रेम को बांधे रखते हैं। हालांकि उनकी लिखी फिल्म की कहानी बेहद धीमी और लम्बी है। कॉमेडी के पंचेस भी जब तक समझ आते हैं, सीन आगे निकल चुका होता है। साल 1986 की मुंबई केवल बोतल में दूध लेकर जाने और लैंडलाइन वाले सीन में ही दिखती है। चार्ल्स शोभराज बेहद की खतरनाक अपराधी था, लेकिन फिल्म में वह अंत तक मामूली चोर ही नजर आता है। झेंडे और कार्ल दोनों ही पात्रों को चिन्मय को मजबूत बनाने की जरुरत थी, फिर भले ही उन्होंने इसके जोनर को कॉमेडी रखा है।

कहानी में रोमांच भी है और मज़ेदार मोड़ भी । फिल्म की शुरुआत ही कार्ल शोभराज के अपराध और उसके करिश्माई अंदाज़ से होती है। यह शख्स इतना चालाक और स्मार्ट दिखाया गया है कि लोग उसकी बातों में आसानी से आ जाते हैं। लेकिन फिर आते हैं इंस्पेक्टर जेंडे , जो हैं तो सीधे-सादे मगर बेहद तेज दिमाग वाले पुलिस अफसर । इंस्पेक्टर जेंडे और अपराधी शोभराज के बीच जो पीछा करने और बच निकलने का खेल शुरु होता है उसमें कई मजेदार मोड़ आते हैं । फिल्म में 70 और 80 के दशक का दौर बखूबी दिखाया गया है , जब अपराध और पुलिस की दुनिया का अंदाज़ बिल्कुल अलग हुआ करता था। इस फिल्म में असल घटनाओं से जुड़े कुछ सुराग भी दिखाए गए हैं, जैसे अपराधी की मोटरसाइकिल के बारे में मिली टिप और एक लोकल शख्स का यह कहना कि बाइक चलाने वाला गोरे रंग का यूरोपियन था। यही चीज कहानी को और दिलचस्प बनाती है ।मनोज बाजपेयी का अभिनय इस फिल्म का सबसे मजबूत पक्ष है, उन्होंने इंस्पेक्टर जेंडे के चरित्र को बड़ी कुशलता से निभाया है। मनोज के अभिनय में गँभीरता भी है और हल्के-फुल्के मज़ाक़ से भरी सहजता

भी। सबसे अच्छी बात यह है कि उनकी कॉमिक टाइमिंग बिल्कुल नैसर्गिक लगती है, कहीं भी ओवरएक्टिंग महसूस नहीं होती है। कई जगह उनका अंदाज़ क्लासिक कॉमेडीज की याद दिलाता है ।कार्ल भोजराज की भूमिका में जिम सर्भ जबरदस्त हैं। उनका करिश्मा और चालाकी दोनों स्क्रीन पर साफ झलकती हैं। हर सीन में वह दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं और एक असली -' स्मार्ट क्रिमिनल ' की इमेज बना देते हैं। मनोज बाजपेयी और जिम सर्भ की टक्कर ही इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत है।

फिल्म में सह कलाकारों का योगदान भी कम करके नहीं आँका जा सकता है । सचिन खेडेकर पुलिस डिपार्टमेंट के सीनियर अफसर के रूप में अपने रोल को मजबूती देते हैं। वे मँजे हुए अभिनेता हैं और उन्हें जितना फुटेज मिला है वो उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। गिरिजा ओक, जो जेंडे की पत्नी का किरदार निभा रही हैं, कहानी को घरेलू और इमोशनल टच देती हैं। एक पुलिस अफसर की पत्नी को कैसे अपने पति को घर में सहज बनाये रखकर उसे अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद बने रहने को प्रेरित किया जाता है ,उस भूमिका में वे एकदम परिपूर्ण नज़र आती है भालचंद्र कदम अपने हल्के-फुल्के अंदाज़ से कॉमेडी का मजा बढ़ा देते हैं। उन्हें थोड़ी बड़ी भूमिका मिलनी चाहिए थी ।

फिल्म देखने में मजेदार जरूर है लेकिन इसकी कुछ कमजोरियां भी साफ नजर आती हैं। सबसे बड़ी कमी इसकी रफ्तार है। कई जगह कहानी इतनी धीमी हो जाती है दर्शकों को थोड़ी बोरियत महसूस होती है। कुछ सीन लम्बे खिंचते हैं, जिन्हें आसानी से छोटा किया जा सकता था। एडिटिंग और टाइट होनी चाहिए थी, जिससे फिल्म ज्यादा क्रिस्प लगती। इसके अलावा बैकग्राउंड म्यूजिक भी हर जगह असरदार नहीं है। खासकर सस्पेंस वाले सीन्स में म्यूजिक का असर उतना गहरा नहीं पड़ता, जितनी उम्मीद की जाती है।

हिन्दी दिवस

दिनेश पाठक

(वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार)

साहित्य सदैव समकालीन और पाठकों के अनुरूप

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री और साहित्यकार श्रीधर पराड़कर का मानना है कि साहित्य सदैव समकालीन परिस्थितियों और पाठकों के अनुरूप ही रचा जाता है। इसी तरह उपन्यास का उद्देश्य, मात्र कथाकथन नहीं, बल्कि प्रामाणिक अंतर साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर विचारधारा और कार्य पद्धति को समझना भी है। जहां तक सवाल साहित्य के वामपंथी या दक्षिणपंथी होने का है, तो लेखक वामपंथी या दक्षिणपंथी हो सकता है, उसके अपने विचार वामपंथी या दक्षिणपंथी हो सकते हैं। अगर वह साहित्य की रचना में इन्हें घुसाता है, तो साहित्य के साथ अनुचित कृत्य है।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री और साहित्यकार श्रीधर पराड़कर का मानना है कि साहित्य सदैव समकालीन परिस्थितियों और पाठकों के अनुरूप ही रचा जाता है। इसी तरह उपन्यास का उद्देश्य, मात्र कथाकथन नहीं, बल्कि प्रामाणिक अंतर साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर विचारधारा और कार्य पद्धति को समझना भी है। जहां तक सवाल साहित्य के वामपंथी या दक्षिणपंथी होने का है, तो लेखक वामपंथी या दक्षिणपंथी हो सकता है, उसके अपने विचार वामपंथी या दक्षिणपंथी हो सकते हैं। अगर वह साहित्य की रचना में इन्हें घुसाता है, तो साहित्य के साथ अनुचित कृत्य है।

देखने में आता है कि समकालीन साहित्य तत्कालीन राजनीति या सत्तात्मक विचारधारा के आसपास केंद्रित रहता है, आप क्या सोचते हैं ? देखिए साहित्य सदैव समकालीन ही होता है। प्राचीन काल में वेद समकालीन थे, लोगों को क्लिष्ट लगने लगे तो उपनिषद बना दिए, फिर कठिनाई हुई तो पुराण बना दिए, फिर समय बदला तो कथा रूप में रामायण, श्रीमद् भागवत बन गए। तात्पर्य यह है कि साहित्य सदैव समकालीन परिस्थितियों और पाठकों के अनुरूप ही रचा जाता है। वर्तमान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता और कार्य पद्धति के प्रति आम लोगों की जिज्ञासा बढ़ी है, इसलिए संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ की कार्य पद्धति को वर्तमान पीढ़ी तक रोचक तरीके से पहुंचाने के उद्देश्य से मैंने कथा कथन की शैली में उपन्यास 'तत्वमसि' लिखा है।

इस उपन्यास की कथावस्तु किस विषय पर केंद्रित है?

'तत्तवमसि' के कथानक में एक वरिष्ठ प्रचारक के माध्यम से संघ विचारधारा एवं कार्य पद्धति से संबंधित समस्त आयामों को किसी न किसी रूपक स्वरूप में सम्मिलित किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य, मात्र कथा-कथन नहीं, बल्कि एक प्रचारक के जीवन को प्रामाणिक अंतर साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा और कार्य पद्धति को समझाना है। इस उपन्यास के शत प्रतिशत पात्र वास्तविक हैं और कथानक में ऐसी एक भी काल्पनिक घटना नहीं जोड़ी है जो अनुभव सिद्ध न हो। यह उपन्यास न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि वैचारिक संचार का एक माध्यम भी है, जो संघ के जीवन-दर्शन को आम जनता के लिए सुलभ और आकर्षक बनाता है।

– आपकी दृष्टि में साहित्य को पंथ विशेष अर्थात् वाम या दक्षिण पंथी जैसे आवरण में समेटना कहां तक उचित है। क्या यह उस विचार के वृहद प्रसार में बाधक नहीं बनता?

अगर हम उसका विश्लेषण करें तो पाएंगे कि साहित्य, साहित्य होता है, वामपंथी या दक्षिणपंथी नहीं होता। लेखक वामपंथी या दक्षिणपंथी हो सकता है, उसके अपने विचार वामपंथी या दक्षिणपंथी हो सकते हैं। अगर वह साहित्य की रचना में इन्हें घुसाता है, तो साहित्य के साथ दुष्कर्म करता है। तब वो साहित्य नहीं लिख रहा, बल्कि वैचारिक घोषणापत्र बना रहा है, अपने विचार को संप्रेषित कर रहा है। साहित्य का संबंध पहले मानवीय संवेदना से होता है-विचार की बात बाद की है।

– रचनाओं के अनुवाद से कई बार मूल लेखक असंतुष्ट रहते हैं, आपने भी कई श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद किया है, आपकी दृष्टि में किसी अनुवादक को अनुवाद कार्य में किस सीमा तक शाब्दिक एवं वर्णनात्मक छूट लेना चाहिए ताकि कृति की मूल भावना अनुवाद में भी दृष्टिगत हो?

अनुवाद करते समय दो बातें सामने होती हैं एक तो होता है शब्द अनुवाद और दूसरा होता है भाव अनुवाद। अगर शब्द अनुवाद किया जाता है तो उस कृति के प्राण निकल जाते हैं और भाव अनुवाद अगर किया जाता है तो उसमें इस बात का ध्यान रखना होता है कि मूल लेखक, पाठक तक अपनी जो बात पहुंचाना चाहता है वह वैसे कि वैसे

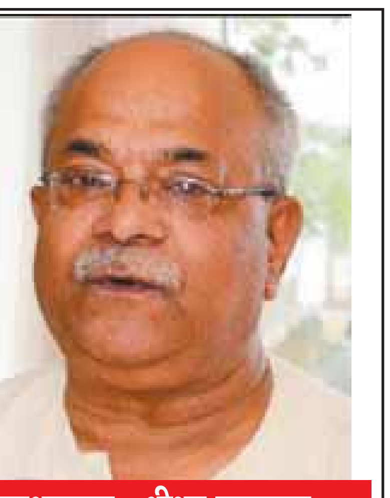

साक्षात्कार -श्रीधर पराड़कर

पहुंच जाए। साहित्य रुचिकर बना रहे और उसकी विषय वस्तु में भी कहीं अंतर नहीं आए। शब्दों के ऊपर बहुत ज्यादा आग्रह नहीं होना चाहिए। कुछ समय पूर्व मैंने मराठी की पुस्तक 'पालवरचं जिणं ' का हिन्दी अनुवाद 'तिरपाल की जिंदगी' शीर्षक से किया तो उसे पढ़कर उसके मूल लेखक ने लिखा कि, मुझे लगता है यह अनुवाद मूल से अधिक अच्छा बन पड़ा है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब आप किसी रचना के मूल भाव को आत्मसात करके उसका अनुवाद करते हैं तो वह निश्चित तौर पर अच्छा होता है और इसके लिए अनुवादक की पकड़ भाषा के साथ साथ वर्णित कथ्य और उसकी परंपरा पर भी होना चाहिए।

– अखिल भारतीय साहित्य परिषद के महत्वपूर्ण दायित्व के चलते विविध राष्ट्रव्यापी गतिविधियों में आपकी प्रतिभागिता, विमर्श एवं प्रवास के साथ साथ आप चिंतन,मनन और उसपर आधारित वैचारिक लेखन के लिए एकांत को कैसे समायोजित करते हैं?

ईमानदारी की बात तो यह है कि मैं पेशेवर साहित्यकार नहीं हूं और साहित्य लिखना मेरा काम भी नहीं है। मैं संगठन की आवश्यकता और उसके आदेश पर लिखता हूं तो फिर मुझे उसके लिए समुचित समय भी दिया जाता है। वैसे भी मेरा मानना है कि जो काम करने की मनुष्य ठान ले उसके लिए किसी चीज का कोई अभाव नहीं रहता है, ना समय का, न धन का और न किसी सुविधा का।

– साहित्य सृजन स्वस्फूर्त होता है या इसे विकसित भी किया जा सकता है?

* साहित्य सृजन तो स्वस्फूर्त ही होता है, लेकिन अगर यह इच्छा आप में है तो उसकी तैयारी आपके हाथ में है। आप बहुत अध्ययन करें, अपना भाषा का ज्ञान बढायें, शब्द सामर्थ्य बढ़ाएं, शब्दों के अर्थ के साथ ही उनके मर्म को भी समझें, यह सब तो आपको करना ही होगा लेकिन साहित्य ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा के बिना साकार नहीं होता।

– साहित्यकारों के बीच गुटबाजी बहुत देखने में आती है, इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

वास्तविक साहित्यकार अपने आप में डूबा रहता है, वो समाज को देखता तो है, लेकिन समाज में नहीं होता है। वो साक्षी भाव से समाज में रहता है, उसका भाग नहीं बन पाता है। अगर आप देखेंगे तो पाएंगे की अधिकांश साहित्यिक संस्थाएं भी व्यक्तिगत होती हैं, कोई एक साहित्यकार और उसके चेले चपाटे ही अपने हिसाब से उसे चलाते रहते हैं।

प्रमुख रचनाएं

1857 के प्रतिसाद, अद्भुत संत स्वामी रामतीर्थ, अप्रतिम क्रांतिद्रष्टा भगतसिंह, राष्ट्रसंत तुकड़ोंजी, राष्ट्रनिष्ठ खण्डोबल्ला, सिद्धयोगी उत्तम स्वामी, कर्मयोगी बाबासाहेब आपटे, शारदा देवी, रानी दुर्गावती, बाला साहब देवरस और तत्वमसि।

संपादन –'देशान्तर' (श्रीलंका व इंग्लैण्ड यात्रा वृत्तांत), अंडमान तथा हाफलांग यात्रावृत्त, हमारे साहित्यकार (वाल्मीकि से वर्तमान तक के साहित्यकार), साहित्य संवर्धन यात्रा-4 (जौनसार-उत्तराखंड तथा झाबुआ वनांचल की साहित्यिक यात्रा वृतांत) और आलेख संग्रह 'पथिका'

अनुवाद – दत्तोपंत ठेंगड़ी की पुस्तक 'सामाजिक क्रांति की यात्रा और डॉक्टर अंबेडकर' गिरीश प्रभुणे की कृति। 'पालवरचं जिणं' का हिंदी अनुवाद 'तिरपाल की जिंदगी'

सम्मान – केंद्रीय हिंदी शिक्षण संस्थान,आगरा द्वारा हिंदी सेवी योजना के अंतर्गत वर्ष 2015 के लिए भारत विद्या के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा पांच लाख रुपए के विवेकानंद राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित।

धैर्य, परिश्रम, सतत प्रयास मंत्र को सफलता का आधार बना डाला हर्षिता दवे ने...

.. मध्यप्रदेश की प्रतिष्ठित राज्य सेवा परीक्षा (पीएससी- 2024) में महिलाओं में टाप रह कर डिप्टी कलेक्टर बनी हर्षिता से राजेश शर्मा की खास बातचीत

राजेश शर्मा

महज ढाई बरस की उम्र में मंच पर पहली बार प्रस्तुति देकर अपनी प्रतिभा का परिचय करा कर सबको अचंभित कर दिया था ... हिन्दी भाषा पर गहरी पकड़ और राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी डिबेट और भाषण शैली से गहरी छाप छोड़ इस युवा प्रतिभा ने अपनी प्रतिभा और संभावनाओं के दर्शन करा दिए थे कि एक दिन यह प्रतिभा अपनी उजास की चमक बिखेरेंगी कुछ इस तरह

'गर स्वप्न आसमां की तरह बड़े हो , तो उड़ान भी उतनी ही ऊंची होगी'।

100 से अधिक राष्ट्रीय स्तर की डिबेट और भारत का प्रतिनिधित्व कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की डिबेट में चमक बिखेर इस प्रतिभा ने लोकमाता देवी अहिल्या की नगरी ही नही वरन् हृदय पदेश(मध्यप्रदेश) और देश को गौरवान्वित किया था... हम चर्चा कर रहे है स्वच्छता में देश में सिरमौर शिक्षा- संस्कृति और औद्योगिक नगरी इंदौर की प्रतिभावान- संभावनावान हर्षिता - विकास दवे की... जिन्होंने मध्यप्रदेश की प्रतिष्ठित राज्य सेवा परीक्षा (पीएससी- 2024) में महिलाओं में टापर रह कर डिप्टी कलेक्टर बन देवी अहिल्या की नगरी को गौरवान्वित किया है।

हिन्दी भाषा से गहरा अनुराग रखने वाली हर्षिता ने हिन्दी पर अपनी पकड़ को सफलता का आधार बना डाला। श्री माधव विद्यापीठ इंदौर से स्कूली शिक्षा ग्रहण कर देवी अहिल्या विवि इंदौर की समाज विज्ञान अध्ययनशाला से इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र विषयों से स्नातक कर पीएससी- 2024 में सफलता का परचम फहराया। दवे परिवार कला , शिक्षा और साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। पिता श्री विकास दवे जी मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक है। माताजी श्रीमती सुनिता दवे शिक्षाविद् है वही भैया देश के दिल दिल्ली में मीडिया जगत में प्रतिष्ठित नाम है।

डिप्टी कलेक्टर बनी हर्षिता दवे से राजेश शर्मा की खास बातचीत...

प्रश्न- सिविल सर्विसेज में जाने की प्रेरणा कब मिली ?

हर्षिता- स्कूली शिक्षा के दौरान जब 11 वी में पढ़ती थी। उस समय सिविल सर्विसेज में जाने की प्रेरणा मिली।

प्रश्न- यह सफलता आपको कितने प्रयासों में मिली ?

हर्षिता- 2023 में पहले प्रयास में प्रीलिम्स क्रेक मेन्स तक पहुंची थी.. दूसरे प्रयास में 2024 में लड़कियों में टाप कर, डिप्टी कलेक्टर बनने में सफलता हासिल हुई।

प्रश्न - सफलता का श्रेय किसे देना चाहेंगी ?

हर्षिता- ईश्वर की असीम कृपा, दादा- दादी, मम्मी पापा, गुरुजनों का आशीर्वाद और भैया की प्रेरणा से मुझे यह सफलता हासिल हुई।

प्रश्न - सफलता का मूल मंत्र क्या देना चाहेंगी ?

हर्षिता- मध्यप्रदेश राज्य सेवा परीक्षा (पीएससी) स्टेट लेवल की सर्वोच्च और प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षा है। सफलता कब और कैसे मिलेगी कोई समय तय नही है। यूथ को यही संदेश देना चाहुंगी कि धैर्य , परिश्रम, सतत प्रयास सफलता के मूल मंत्र है।

प्रश्न- आपका साक्षात्कार कैसा रहा ?

हर्षिता- इंटरव्यू बोर्ड ने मेरी रूचि भाषण और वाद-विवाद पर काफी प्रश्न किए। इंटरव्यू बोर्ड ने मुझसे भाषण देने को कहा था। उस दौरान मैने अपनी स्वरचित कविता सुनाई

'जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा भारत में अनेक है ।
इस अनेकता में भी हम भारतवासी एक है।
इसी एकता के कारण ही भारत सबमें ज्येष्ठ है।
और भारत की यही ज्येष्ठता बनाती उसे श्रेष्ठ है।
और ज्येष्ठ भारत- श्रेष्ठ भारत विश्व में सर्वश्रेष्ठ है।'

सीएमओ के ऐक्शन पर बकायेदारों का रिऐक्शन

नेशनल लोक अदालत में पहली बार टैक्स भरने में बकायेदारों की बढ़ी रुचि , 12 लाख से ज्यादा आए सरकारी खजाने में

आमला। बीते कई वर्षों से खस्ताहाल माली हालत से जूझ रही नगर पालिका आमला के लिए यह खुशी की बात है, जब यहां बीते शनिवार को आयोजित नेशनल लोक अदालत में 12 लाख से ज्यादा की राशि नपा के खजाने में बकायादारों के द्वारा जमा की गई है। ऐसा पहली बार देखा गया कि टैक्स चुकाने के लिए लोक अदालत में लोगों की लंबी लाइन लगी रही और यह सब संभव हो सका है, नपा के नवागत सीएमओ नितिन बिंजवे के प्रयासों से। बीते माह जब यहां उन्होंने कार्यभार संभाला था, तब नपा की खराब वित्तीय स्थिति को देखते हुए सीएमओ ने सबसे पहले नपा के खाली खजाने को भरने के लिए एक विशेष टीम का गठन किया और शहर के तमाम बकायादारों को, जो नपा में किसी भी तरह का कोई टैक्स जमा नहीं कर रहे थे, इस ओर सबसे ज्यादा ध्यान दिया गया और सीएमओ के इन प्रयासों का सुखद परिणाम भी यह निकला कि महज एक पखवाड़े के अंदर नपा के राजस्व में दो गुनी वृद्धि दर्ज की गई है, जो नपा की खस्ताहाल हो रही माली हालत के लिए एक अच्छा संकेत है। नपा के राजस्व प्रभारी अखिलेश राजनेगी ने बताया है कि नपा में शनिवार को आयोजित नेशनल लोक अदालत में 12 लाख रुपए से ज्यादा का टैक्स जनता के द्वारा जमा किया गया है। जबकि इससे पहले के शिविरों में अमूमन 5 लाख से ज्यादा की राशि कभी भी जमा नहीं की गई, हालांकि अभी भी लगभग आधा करोड़ से ज्यादा की राशि पूरे शहर में लोगों से कर के रूप में लिया जाना बाकी है।

नपा अधिकारी के फ्लेक्स, बैनर प्लान से बढ़ी जागरूकता- इधर पिछले दिनों सीएमओ द्वारा बकायादारों के नाम सार्वजनिक किए जाने के लिए शहर में मात्र एक फ्लेक्स लगाया गया था, जिसे महज कुछ घंटों में ही नपाध्यक्ष नितिन गाडरे ने निकलवा दिया था, किंतु सीएमओ का यह प्लान बेहद कारगर साबित हुआ है और बकायादारों ने खुद ही अपने तमाम टैक्स की राशि नगर पालिका में जमा कर दी, हालांकि शहर में फ्लेक्स-बैनर पॉलिटिक्स पर खूब चर्चा भी हुई। और यह सोशल मीडिया पर भी खूब वायरल हुआ। किंतु बुद्धिजीवियों का कहना है कि नागरिकों को अपने अधिकारों के साथ-साथ उनके दायित्वों के लिए भी जागरूक करना प्रशासन का ही काम है।

लोगों ने कहा कि अर्धवार्षिक टैक्स भी जमा करें नपा- इस मौके पर यहां नेशनल लोक अदालत शिविर में पहुंचे नागरिक कोमल राठौर, गुंताबाई, राम पवार, राजेश कुमार आदि लोगों ने कहा कि नगरपालिका को वार्षिक कर जमा करने के साथ-साथ सभी तरह के करो को अर्धवार्षिक फार्मूले से भी जमा करना चाहिए, जिससे लोगों को ज्यादा सुविधा होगी। इसके अलावा यदि नगर पालिका घर-घर जाकर भी टैक्स जमा करे, तो इससे भी जनता को सुविधा मिलेगी। वहीं नपा के राजस्व प्रभारी का कहना है कि नपा के मुख्य अधिकारी के प्रयासों से पहली बार नपा के करदाताओं में जागरूकता बढ़ी है और इससे नगर पालिका के खजाने में भी इजाफा देखा जा रहा है।

बद से बदतर हो गई ग्राम देव भिलाई से बगोड़ा सड़क के हालात

बैतूल/मुलताई। क्षेत्र में वर्षा काल प्रारंभ होते ही बदहाल सडक़े किसानों के लिए भारी कठिनाई का सबब बन जाती है। कुछ सडक़ों की स्थिति तो ऐसी है की पैदल चलना तक दुश्वार है इसका उदाहरण है ग्राम देव भिलाई से बगोड़ा सडक़। ग्राम भगोड़ा को पट्टन मूख्य मार्ग से जोडऩे वाली यह प्रमुख सडक़ है जो की वर्षा काल में पूरी तरह से गायब हो गई है और इसके स्थान पर सिर्फ दलदल ही दलदल दिखाई देता है जिसको लेकर ग्रामीणों में भारी रोष है। समाज सेवी जनार्दन पाटील, विनोद पाटिल एवं गांव के ग्रामीणो ने बताया कि ग्राम बगोड़ा से लेकर पट्टन तक दर्जनो ग्रामों को जोडऩे वाली यह मुख्य सडक़ की हालत बद से बदतर होती जा रही है जिससे किसानों को मजदूरों को खेतों में जाने के लिए परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई किसानों का कहना है कि खेतों से अपने फसल को भी निकालने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। क्षेत्र के किसानों ने सडक़ निर्माण को लेकर ग्राम पंचायत से लेकर जनपद पट्टन तहसील प्रभात पट्टन और अधिकारियों तक आवेदन निवेदन किया गया परंतु ग्रामीणों की परेशानियों का समाधान नहीं हो रहा ग्राम बघोडा और ग्राम देव भिलाई के ग्रामीण शासन से नाराज है। शासन द्वारा तत्काल संज्ञान लेना चाहिए जिससे ग्रामीणों को हो रही असविधा का समाधान हो सके।

सूर्यवंशी ढोलेवार कुनबी समाज के परगना स्तरीय सम्मेलन में 11 गांवों से जुटे युवा

समाज की आर्थिक मजबूती और संगठन के विस्तार पर हुई चर्चा

बैतूल। युवा शक्ति को संगठित करने और समाज की आर्थिक एवं सामाजिक मजबूती के उद्देश्य से सूर्यवंशी ढोलेवार कुनबी समाज बैतूल के तत्वावधान में ग्राम खेड़ी सांवलीगढ़ परगना के ग्राम रातामाटी बुजुर्ग में परगना स्तरीय युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन समाज की एकता, जागरूकता और संगठन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता परगना मुखिया अरविंद घंगारे ने की। सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि युवा संगठन के जिला अध्यक्ष राकेश घंगारे, पूर्व जिला अध्यक्ष रेवती प्रसाद सरले, पूर्व जिला अध्यक्ष एवं समाजसेवी नारायण सरले, समाजसेवी उमाशंकर छेरकी (नीतू पटेल), जिला वरिष्ठ संगठन उपाध्यक्ष उमाकांत वानखेडे, पूर्व युवा जिला अध्यक्ष अजय घंगारे, पूर्व युवा जिला उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सरले, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष प्रीतेश घंगारे उपस्थित रहे। ग्राम रातामाटी बुजुर्ग के वरिष्ठ समाजसेवियों में लखनलाल खोबरे, साहबलाल घंगारे, शोभाराम गावंडे और कलीराम चिमटे की उपस्थिति भी रही। इस अवसर पर नवनियुक्त ब्लॉक अध्यक्ष अनिल रावते, संजय चिमटे और विवेक बोखारे को उपस्थितजनों द्वारा सम्मानित किया गया।

ठेकेदार और अधिकारियों की भेंट चढ़ गई पारसडोह सिंचाई परियोजना

बैतूल/मुलताई। ताप्ती पर बनी मुलताई क्षेत्र की महत्वाकांक्षी पारसडोह सिंचाई परियोजना जो 382.29 करोड़ लागत से बांध कार्य 1 वर्ष में एवं नहर कार्य 3 वर्ष में पूर्ण होना था, आज 9 वर्ष पूर्ण होने के बावजूद भी किसानों के खेतों में पानी नहीं पहुंच सका है। जिसको लेकर क्षेत्र के किसानों में भारी रोष है। पारसडोह बांध के ठेकेदार एवं अधिकारियों की मिलीभगत के चलते यह महत्वाकांक्षी परियोजना बंटाधार योजना बनकर रह गई है। जिसको लेकर हाल ही में स्थानीय भाजपा विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने क्षेत्र के किसानों के साथ सिंचाई अधिकारियों से मिलकर अपना विरोध जताया है। जानकार बताते हैं कि जो योजना लगभग 3 वर्ष में पूर्ण होकर किसानों के लिए वरदान साबित होना था, ठेकेदारों से मिलकर अधिकारी शासन को गलत जानकारी देकर बगैर पेनल्टी के ठेकेदार को लाभ पहुंचाने के लिए बांध निर्माण की समय सीमा बढ़ा रहे थे और यहां तक की समय सीमा बढ़ाने को लेकर विधानसभा तक में गलत जानकारी दे रहे थे। क्या इस मामले की निष्पक्ष जांच होकर ठेकेदार और अधिकारियों पर कार्रवाई हो पाएगी। और यह स्थिति मात्रा पारसडोह सिंचाई परियोजना की नहीं है, बल्कि क्षेत्र की दूसरी बड़ी परियोजना वर्धा भी अधिकारी और ठेकेदारों की मनमानी की भेंट चढ़ रही है। वर्धा में भी दशकों से मुलताई सिंचाई विभाग में जमे एसडीओ कार्य पूर्ण करने के बजाय समय अवधि बढ़ा रहे हैं।

पारसडोह बांध को जनवरी 2016 में मिली थी वित्तीय स्वीकृति- ताप्ती नदी पर पारसडोह बांध निर्माण की वित्तीय स्वीकृति शासन द्वारा 12 जनवरी 2016 को दी गई थी। सिंचाई अधिकारियों ने 14 जनवरी 2016 को कार्य प्रारंभ होना बताया। बांध निर्माण की समय अवधि एक वर्ष थी जबकी पारसडोह बांध 7 सितंबर 2018 को पूर्ण होना बताया गया। नहर कार्य को 10 जून 2020 को संपूर्ण कार्य पूर्ण होने की जानकारी दे दी गई। इधर विभाग कार्य पूर्ण होने की बात कह रहा है और दूसरी ओर किसान कार्य को अपूर्ण बताकर अपने खेतों में पानी पहुंचने की बाट जोह रहे हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि विधानसभा में एक प्रश्न के उत्तर में सिंचाई मंत्री तुलसी सिलावट ने कोरोना काल के कारण बगैर पेनल्टी के समय सीमा बड़ा जाने की जानकारी दी थी यहां उल्लेखनीय है जिस बांध का संपूर्ण कार्य 2019 तक पूर्ण होना था उस कार्य की समय अवधि कोरोना के चलते 2020 मे बढ़ाई गई । भारत में कोरोना का पहला मरीज 30 जनवरी 2020 मिला था और 30 जनवरी 2022 तक 107 बिलियन लोगों को कोरोना टीका लगा चुका था। आज भी पारस जो नहर का कार्य किसानों के अनुसार अपूर्ण है और सिंचाई विभाग कार्य को पूर्ण बताकर अपूर्ण कार्यों का दोष किसानों को दे रहे हैं।

बांध बना लेकिन पानी किसानों तक नहीं पहुंचा: विधायक देशमुख- पारसडोह बांध बनेगा तो खेतों में पानी होगा, फसल लहलहाएगी। लेकिन बांध तो बना, किसानों के खेतों में पानी नहीं पहुंचा। इसकी पूरी बुराई मुझे झेलना पड़ रहा है। ऐसा लगता है यह योजना क्षेत्र के लिए बेकार हो गई। ठेकेदार की लापरवाही के कारण इतने किसान परेशान है और इसके लिए विभाग की भी जवाबदारी है। विभाग क्यों सोया रहा, अधिकारी क्यों डरते रहे यह उनकी भी जवाबदारी थी।

इनका कहना है -

मैं मौके पर जाकर देखूंगा। अभी मैं किसी को दोषी नहीं ठहरा सकता। सारी लड़ाई खेतों में पानी पहुंचाने की है। मैं जाकर देखूंगा और कागजों पर नहीं, बल्कि मौके पर सुधार के प्रयास करूंगा।

- सीएल मरकाम,
कार्यपालन यंत्री, जल संसाधन विभाग मुलताई

युवाओं के लिए हर क्षेत्र में हैं अवसर और संभावनाएं : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

पूर्व सांसद -अभिनेत्री श्रीमती जयाप्रदा ने इंदौर की स्व स्वच्छता को सराहा

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। आज हर क्षेत्र में संभावनाएं हैं, अवसर हैं। इन अवसरों का लाभ लेने के लिए आवश्यक है कि युवा सजग हों और मनोयोग से मेहनत करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विशेष रूप से युवा पीढ़ी से नशे से दूर रहने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास का सुनहरा फल युवाओं को मिले, इसके लिए आवश्यक है कि वे नशे से दूरी बनाकर अपनी ऊर्जा सकारात्मक दिशा में लगाएँ। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मीडिया से आग्रह किया कि नशे के दुष्परिणामों पर जनजागरूकता अभियान चलाएँ। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल आनंद मोहन माथुर सभागृह, इंदौर में निजी मीडिया समूह के 12वें नेशन बिल्डर अवॉर्ड 2025 समारोह में शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। राज्य को कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त होना इसका प्रमाण है। सिंचाई के क्षेत्र में भी लगातार वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि इंदौर की स्वच्छता पूरे देश के लिए एक मिसाल बन चुकी है और प्रदेश विकास की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने शिक्षा, प्रशासनिक सेवा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को सम्मानित किया। महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, सुप्रसिद्ध सिने तारिका एवं पूर्व सांसद श्रीमती जया प्रदा, आयोजक श्री वीरेंद्र मिश्रा सहित नागरिक उपस्थित रहे। श्रीमती जया प्रदा ने इंदौर की स्वच्छता की सराहना की।

राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारा स्वाभिमान है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सभी प्रदेशवासियों को राष्ट्रीय हिन्दी दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारी पहचान है। हिन्दी हमारा स्वाभिमान है और हिन्दी से ही हमारा मान-सम्मान है। हिन्दी में आनन्द है, ज्ञान है, विज्ञान है और संस्कार है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से अपील करते हुए कहा कि आइए, हम सभी अपनी राष्ट्रभाषा भाषा हिन्दी के प्रति सम्मान प्रकट करें और सदैव हिन्दी हैं हम की गर्वोक्ति का उद्घोष करें।

खून से लथपथ मिला कारोबारी और पत्नी का शव

बालाघाट में घर में बेडरूम में पड़ी थी दोनों की लाश ; पुलिस को हत्या की आशंका

बालाघाट (नप्र)। बालाघाट में हार्डवेयर कारोबारी और उनकी पत्नी का शव बेडरूम में खून से लथपथ मिला। घटना रविवार सुबह करीब 8 बजे नादी गांव की है।

कटंगी पुलिस के मुताबिक, मृतकों की पहचान हेमेंद्र बिसेन और उनकी पत्नी योगिता बिसेन के रूप में हुई। हेमेंद्र का शव बिस्तर के पास पड़ा हुआ था, जबकि उनकी पत्नी का शव बिस्तर पर मिला। पुलिस को इस मामले में हत्या की आशंका है, जिसके बाद उन्होंने तुरंत घटना स्थल को सील कर दिया।

घटना की जानकारी मिलते ही एसपी सहित पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी और एफएसएल टीम मौके पर पहुंची। एसडीओपी विवेक शर्मा ने बताया कि फिलहाल जांच जारी है और इस समय कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। बताया जा रहा है कि हेमेंद्र बिसेन की नादी में हार्डवेयर की दुकान थी।

घर में बेटा था, दूसरे नंबर के भाई ने देखा था शव

ग्रामीण गुणेश कटरे ने बताया कि घर में बेटा वशिष्ट बिसेन था। बेटी प्रज्ञा बिसेन नागपुर में जेईई की तैयारी कर रही है। परिवार व्यावसायिक रूप से मजबूत था। बड़े भाई ईश्वरी बिसेन कृषि उपज मंडी अध्यक्ष रहे हैं, जबकि दूसरे नंबर के भाई करण बिसेन का किराना का बड़ा कारोबार है, तीसरे नंबर के शैलेंद्र का अपना काम है। हेमेंद्र सबसे छोटे थे।

सबसे पहले दोनों के शव भाई करण ने देखा। हेमेंद्र और उनकी पत्नी जब नहीं दिखीं तो करण उनके कमरे में देखने गए। फिलहाल, परिवार के लोग घटना के बाद से बदहवास हैं।

प्रधानमंत्री मित्रा पार्क से मालवा का समूचा क्षेत्र समृद्धशाली बनेगा

सेवा परमो धर्मः और नागरिक देवो भव के मूलमंत्र के साथ जनता के बीच जाएं कार्यकर्ता: डॉ. महेन्द्र सिंह

इंदौर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने रविवार को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के पीएम मित्रा पार्क के भूमिपूजन में आगमन एवं 17 सितंबर से शुरू हो रहे 'सेवा पखवाड़े' को लेकर श्रीराम तलावली स्थित सुख समृद्धि गार्डन में इंदौर ग्रामीण जिले की बैठक को संबोधित किया। भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री मित्रा पार्क के निर्माण से मालवा का समूचा क्षेत्र और समृद्धशाली बनेगा। पीएम मित्रा पार्क धार जिले के बदनावर विधानसभा के भैंसोला में बन रहा है, लेकिन इसका फायदा मालवा के साथ पूरे मध्यप्रदेश को मिलेगा। पार्टी के सभी कार्यकर्ता सेवा पखवाड़े में सेवा परमो धर्मः और नागरिक देवो भव के मूलमंत्र के साथ जनता के बीच जाए और सेवा कार्य में जुट जाएं। बैठक को केंद्रीय मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर, प्रदेश शासन के मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री जीतू जिराती, प्रदेश महामंत्री व सांसद सुश्री कविता पाटीदार, सांसद शंकर लालवानी, इंदौर ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्री श्रवण सिंह चावड़ा एवं विधायक श्री मधु वर्मा ने भी संबोधित किया।

मध्यप्रदेश बहुत जल्दी ही देश के अग्रणी राज्यों में शामिल होगा - भाजपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जब आते हैं तो खाली हाथ नहीं आते कुछ न कुछ देकर जाते हैं। मध्यप्रदेश की धरती पर आ रहे तो पीएम मित्रा पार्क की सौगात लेकर आ रहे हैं। आप कल्पना कीजिए 2158 एकड़ में इंटीग्रेटेड पार्क बनेगा और दो हजार करोड़ से इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार हो रहा है। पीएम मित्रा पार्क में निवेश के लिए कई कंपनियां इच्छुक हैं। यह टेक्सटाइल क्षेत्र का हब बनेगा और यह आदिवासी क्षेत्र एक समृद्धशाली और विकसित क्षेत्र बनकर उभरेगा। पीएम मित्रा पार्क से पूरे मालवा क्षेत्र में रोजगार सृजन होंगे।

जनता को बताएं 2014 से पहले भारत कैसा था, प्रधानमंत्री जी क्या बदलाव लाए

भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि 17 सितंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन के अवसर पर सेवा पखवाड़े का शुभारंभ हो रहा है जो महात्मा गांधी जी की जयंती 2 अक्टूबर तक पूरे मध्यप्रदेश में चलेगा। सेवा पखवाड़े में पार्टी द्वारा विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य किए जाएंगे। सेवा पखवाड़े के दौरान बस्तियों में सेवा कार्यों के साथ आम जनता को बताएं कि 2014 से पहले का भारत कैसा था और 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री पद का दायित्व संभालने के लिए देश के विकास में किस तरह अभूतवूर्प प्रगति हो रही है। प्रधानमंत्री जी भारत को स्वर्णिम भारत, अद्भुत भारत, दिव्य भारत, विकसित भारत बनाने के लिए जो एक-एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। हमें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार के कार्यों को सेवा पखवाड़े के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाना है। इस दौरान मंच पर संभाग प्रभारी श्री राघवेन्द्र गौतम, विधायक सुश्री उषा ठाकुर, श्री मनोज पटेल, पूर्व जिला अध्यक्ष श्री चिंटू वर्मा, पूर्व विधायक श्री अंतर सिंह दरबार, श्री विशाल पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीना सतीश मालवीय सहित पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कलेक्टर अंशुल गुप्ता ने राजस्व कार्यों की समीक्षा की

संपादित होने वाले कार्यों की मानिटरिंग व्यवस्था क्रियान्वित करें: कलेक्टर

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने शनिवार को राजस्व कार्यो की समीक्षा की। उन्होंने समस्त एसडीएम सहित अन्य राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि कार्य क्षेत्रो में अन्य विभागो के माध्यम से संपादित होने वाले कार्यो की मानिटरिंग व्यवस्था क्रियान्वित करें। उन्होंने कहा कि समय पर सेवाएं पात्रताधारको को मिले इसके लिए स्थानीय भौगोलिक संरचनाओं के आधार पर नवाचार कर सेवा प्रदाय के क्षेत्र में अग्रणी बनें। उन्होंने कार्यक्षेत्रो के स्कूलो, छात्रावासो, उचित मूल्य दुकानो के साथ-साथ ज्वंलत समस्याओं के निदान हेतु सतत मानिटरिंग कर पहल करने पर बल दिया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में विवादित, अविवादित नामांतरण, विवादित, अविवादित बंटवारा, नक्शा तरमीम, पीएम किसान ई-केवायसी, डिजिटल क्राप सर्वेक्षण, भूमि आवंटन प्रकरणों की समीक्षा सहित अन्य राजस्व से संबंधित कार्यो की समीक्षा की है। उन्होंने आरबीसी 64 के तहत सर्पदंश प्रकरणों के भुगतान की समीक्षा की तथा प्रकरणों में किसी भी प्रकार की विलंबता भुगतान में ना हो के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए एसडीएमो को निर्देशित किया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में राजस्व वसूली के कार्यों की समीक्षा के साथ-साथ बैंको के आरआरसी प्रकरणो में वसूली में तेजी लाने के निर्देश दिए है। उन्होंने सायबर तहसील के अंतर्गत नामांतरण तामीली, पटवारी रिपोर्ट इत्यादि के कार्य शीघ्रता से संपादित कराएं ताकि सायबर तहसील की उपयोगिता और महत्वता प्रतिपादित हो। कलेक्टर श्री गुप्ता ने राजस्व न्यायालयीन प्रकरणो के कार्यो की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि अनावश्यक रूप से विलम्बता ना हो का पूरा ध्यान रखा जाए। समय पर निर्णय प्राप्त होने पर आवेदको को अनेक प्रकार की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहूलियते होती है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने वर्षाकाल के दौरान हुई क्षति के राहत प्रकरणो की स्वीकृति की भी अपडेट जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि धान की फसल समर्थन मूल्य पर विक्रय करने हेतु उपार्जन केन्द्र बनाए गए है। इन केन्द्रो पर किसी भी प्रकार की अव्यवस्था ना हो। उपार्जन कार्य सहज रूप से संचालित हो इसके लिए प्रबंध सुनिश्चित कराए जा रहे है राजस्व अधिकारी इन केन्द्रो का अनिवार्यतः निरीक्षण करते रहें। समीक्षा बैठक में भू-राजस्व, उपकर, शाला उपकर, प्रीमीयम भू-भाटक, अन्य मदो की वसूली, लक्ष्य प्राप्ति के लिए तहसीलवार कार्ययोजना, राहत राशि का वितरण इत्यादि के अलावा क्रियान्वित विभिन्न अभियानो के अंतर्गत स्वामित्व योजना, फार्मर रजिस्ट्रेशन फसल गिरदावरी, आयोग, जन शिकायत, जन सुनवाई तथा सीएम हेल्पलाइन, समाधान ऑन लाइन कार्यक्रम के लंबित प्रकरणो के निराकरणो पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए है। इसी प्रकार के निर्देश सीएम मानिट के आवेदनो के संबंध में कहा गया है। विभिन्न विभागो को आवंटित होने वाली भूमि, राजस्व अभिलेखो में दर्ज कराने के साथ-साथ, वन विस्थापन, कर्मयोगी प्रशिक्षण, फर्टिलायजर की उपलब्धता, नगर हेतु वन भूमि का चयन इत्यादि बिन्दुओं की भी समीक्षा की गई है।

बैतूल के मंच पर होगी महिला क्रिकेट जगत की ख्यातिनाम बेटियां

डॉटर्स डे पर देश की यंगेस्ट क्रिकेट अम्पायर शुभदा और ब्लाइंड वीकेट कीपर दुर्गा को मिलेगा मणिकर्णिका सम्मान

बैतूल। जिले के प्रतिष्ठित मणिकर्णिका सम्मान समारोह में एक बार फिर विविधताओं का अनूठा संगम देखने मिलेगा। आगामी 28 सितंबर को देश की सबसे कम उम्र की महिला अम्पायर शुभदा भोसले और बैतूल की बेटी दुर्गा जो हाल ही में ब्लाइंट वूमन क्रिकेट टीम इंडिया के लिए विकेटकीपर के रूप में चयनित हुई है, सम्मान किया जाएगा। कोविड-19 के बाद जिले के प्रतिष्ठित नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ वसंत श्रीवास्तव एवं एडवोकेट नीरजा श्रीवास्तव की दिवंगत बेटी स्व. नेहा अभिषेक श्रीवास्तव की स्मृति में बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति द्वारा मणिकर्णिका सम्मान को समर्पित किया गया है। यह लगातार पांचवा आयोजन है जो बैतूल की बेटी नेहा की स्मृति में आयोजित हो रहा है। मणिकर्णिका सम्मान समारोह में प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली बेटियों एवं महिलाओं को सम्मानित किया जाता है।

देश की सबसे यंग अंपायर शुभदा भोसले ....

मध्यप्रदेश के झाबुआ थादला कॉलेज में खेल अधिकारी रही शुभदा ने 20 जनवरी 2022 को ओमान में आयोजित लीजेंट क्रिकेट लीग मैच की अंपायरिंग कर देश की सबसे यंग अंपायर होने की उपलब्धि हासिल की है। इस क्रिकेट टूर्नामेंट में पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका और हांगकांग की सभी महिला अंपायर में शुभदा ने सबसे कम उम्र की अंपायर के रुप में अपनी पहचान बनाई। शुभदा ने लीजेंट क्रिकेट लीग के 20 जनवरी 2022 को खेले गए इंडिया महाराजा और एशिया लॉयन मैच के दौरान अंपायरिंग की थी। इस टूर्नामेंट में महिला सशक्तिकरण का संदेश देने के लिए चार महिला अंपायर ने अंपायरिंग की थी। वर्तमान में वे शासकीय होल्कर विज्ञान कॉलेज इंदौर में पदस्थ है।

बैतूल की बेटी के हौसले को मिली उड़ान ....

जिले की बेटी दुर्गा येवले इंडियन ब्लाइंट क्रिकेट के पहले टी-20 वर्ल्ड कप टीम के लिए चुनी गई है। दुर्गा पिता झब्बू येवले भैंसदेही विकासखंड के ग्राम राक्सी की रहने वाली है, जिनकी प्राथमिक शिकक्षा गोलीढाना में हुई। जब पिता को बैतूल के ब्लाइंड स्कूल के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने दुर्गा को कक्षा 6वीं से ब्लाइंड छात्रावास में दाखिला दिलाया। 9वीं एवं 10वी की शिक्षा दुर्गा ने पाढर ब्लाइंड स्कूल से की और इसके बाद अपनी सहेली के साथ दुर्गा ने महेश दृष्टिहीन कल्याण संघ छात्रावास में प्रवेश लिया और 11वीं से स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। इसी दौरान नवंबर 2022 में छात्रावास में ब्लाइंट क्रिकेट कैम्प हुआ जिसमें क्रिकेट एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड इन मध्यप्रदेश के अध्यक्ष सोनू गोलकर ने दुर्गा का चयन जिला स्तर के लिए किया। दिसंबर 2022 में दुर्गा ने इंदौर जिले के लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और इसी आधार पर दुर्गा को मप्र ब्लाइंड क्रिकेट टीम के लिए चुना गया।

संक्षिप्त समाचार

ग्राम खरबई में एक बगिया माँ के नाम परियोजना के तहत रोपित किए फलदार पौधे

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले के सांची जनपद पंचायत के ग्राम खरबई में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा एक बगिया माँ के नाम परियोजना के तहत फलदार पौधे रोपित किए गए। इस दौरान कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने स्व-सहायता समूह की हितग्राही सदस्यों से संवाद किया तथा उनके द्वारा संचालित की जा रहीं गतिविधियों की जानकारी ली। इस अवसर पर श्री राकेश शर्मा भी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि प्रदेश सरकार द्वारा स्व-सहायता समूह की महिलाओं को समृद्ध बनाने के लिए महात्मा गांधी नरेगा अंतर्गत एक बगिया माँ के नाम परियोजना शुरू की गई है जिसमें स्व-सहायता समूह की महिलाओं की निजी भूमि पर फलोद्यान की बगिया लगाई जा रही है। जिले में स्व-सहायता समूहों की 700 दीदियों की निजी कृषि भूमि पर फलोद्यान की बगिया लगाने का लक्ष्य प्राप्त हुआ है, जिसके विरूद्ध अभी 768 दीदियों की निजी कृषि भूमि पर फलोद्यान की बगिया लगाई जा रही है। परियोजना के तहत शासन द्वारा हितग्राहियों को पौधे, खाद, गड्ढे खोदने के साथ ही पौधों की सुरक्षा के लिए कटीले तार की फेंसिंग और सिंचाई के लिए जल कुंड निर्माण हेतु राशि प्रदान की जा रही है।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने ग्राम खरबई में आंगनवाड़ी केन्द्र और शासकीय स्कूल का किया निरीक्षण

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा गुरूवार को सांची जनपद पंचायत के ग्राम खरबई में आंगनवाड़ी केन्द्र और शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल का निरीक्षण किया गया। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने आंगनवाड़ी केन्द्र के निरीक्षण के दौरान यहां दर्ज बच्चों की संख्या तथा आंगनवाड़ी केन्द्र आने वाले बच्चों की संख्या, गर्भवती और धात्री महिलाओं की संख्या तथा टीकाकरण की स्थिति आदि की जानकारी लेते हुए उपस्थिति पंजी का भी अवलोकन किया। उन्होंने सभी बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने के निर्देश देते हुए कहा कि जो बच्चें आंगनवाड़ी केन्द्र नहीं आ रहे हैं, उनके माता-पिता से संवाद कर बच्चों को आंगनवाड़ी केन्द्र भेजने के लिए प्रेरित करें। साथ ही आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियों के बारे में भी पूछा। इसके उपरांत कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने शासकीय स्कूल भवन का निरीक्षण किया। उन्होंने स्कूल में पदस्थ शिक्षकों की संख्या तथा उनकी उपस्थिति, विद्यार्थियों की संख्या, शैक्षणिक कार्य आदि की जानकारी लेते हुए जिला शिक्षा अधिकारी और विद्यालय की प्राचार्य को दिशा-निर्देश दिए।

अमानक खाद्य सामग्री विक्रय करने पर रेस्टोरेंट संचालक पर बीस हजार रू जुर्माना

रायसेन (निप्र)। न्यायालय न्याय निर्णायक अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी श्री मनोज कुमार उपाध्याय द्वारा बेगमगंज में नगर पालिका कार्यालय के पीछे स्थित जम जम रेस्टोरेंट के संचालक श्री शाहिद खान को अमानक खाद्य सामग्री विक्रय करने पर बीस हजार रूपए की शास्ति से दंडित किया गया है। उल्लेखनीय है कि खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्रीमती कल्पना आरसिया द्वारा 21 फरवरी 2024 को जम जम रेस्टोरेंट बेगमगंज की जांच की गई थी। इस दौरान रेस्टोरेंट में बना हुआ चिकन ग्रेवी सहित, बिरयानी एवं फ्रिज में तलने के लिए तैयार चिकन कबाव संग्रहित पाया गया, जो कि ग्राहकों को परोसा जाता है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा उक्त खाद्य सामग्री बनाने में उपयोग किए जा रहे बेसन एवं सपरेटा दही का विधिवत नमूने लेकर जांच हेतु खाद्य विश्लेषक राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे गए। जांच में बेसन लूज का नमूना मानक स्तर का पाया गया तथा सपरेटा दही लूज का नमूना अमानक स्तर का पाया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा प्रकरण न्यायालय न्याय निर्णायक अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

आपदा से निपटने नगर परिषद में गठित किए दल

आपदा प्रबंधन पर जागरूकता बैठक

बैतूल/भौंरा। सतपुड़ा जनजागृति समिति के तत्वावधान में आपदा प्रबंधन संस्थान भोपाल के सहयोग से नगर परिषद शाहपुर में आपदा प्रबंध जागरूकता अभियान की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता नगर परिषद के अध्यक्ष रोहित विक्की नायक द्वारा की गई। इस दौरान समिति अध्यक्ष विजय राम में आपदा प्रबंधन की आवश्यकता और इसकी सामाजिक महत्व पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़, आंधी, भूकंप, अग्निकांड आदि अचानक घटित होती है। उन्होंने ग्रामीणों को बताया कि यदि

समय रहते प्रशिक्षण प्राप्त दल तैयार किए जाएं, तो किसी भी आपदा के दौरान नगर स्वयं अपनी-अपनी रक्षा कर सकता है। कार्यक्रम के सहयोगी आशुतोष कैप्स ने बताया कि संस्था द्वारा ग्राम स्तर पर विशेष दलों को गठन किया जाएगा। इसमें चेतावनी दल, खोज दल एवं बचाव दल, प्राथमिकता उपचार दल, राहत एवं पुनर्वास दल, सुरक्षा एवं समन्वय दल शामिल होंगे। प्रत्येक दल को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी जाएगी। दल समय पर सूचना प्रसारित करेगा। प्राथमिकता उपचार दल घायलों को तत्काल मदद देगा। खोज एवं बचाव दल प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने का काम करेगा। नगर परिषद उपाध्यक्ष श्रीमती पम्मी छोटे राठौर ने संस्था की पहल का स्वागत करते हुए कहा कि नगर स्तर पर ऐसे कार्यक्रमों के आयोजनों से नगरवासी और समाज अधिक से अधिक जागरूक एवं सक्षम बनेगा। पार्षद कमलेश प्रजापति ने कहा कि यह अभियान केवल जागरूकता तक सीमित नहीं रहेगा। नगरवासियों को व्यवहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, ताकि वास्तविक आपदाओं की स्थिति में नगर परिषद आत्मनिर्भर होकर प्रशासन की मदद से प्रभावी कार्य कर सके।

स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान का 17 सितम्बर को होगा शुभारंभ

मातृ एवं शिशु संबंधी सेवाएं प्रदान करना है अभियान का उद्देश्य

सीएमएचओ ने बैठक आयोजित कर दिए आवश्यक दिशा निर्देश

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर 17 सितंबर को प्रदेश में ÷स्वस्थ नारी सशक्त परिवार÷ अभियान का शुभारंभ किया जाएगा। यह अभियान 02 अक्टूबर 2025 तक चलेगा। इस अवसर पर जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। सीएम डॉ सुधीर कुमार डेहरिया ने विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित कर जिले के सभी संबंधित स्वास्थ्य अधिकारियों को अभियान के संचालन के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि अभियान के संचालन के लिए जिला कोर ग्रुप के नोडल अधिकारियों को नामांकित किया गया है।

इस अभियान का उद्देश्य मातृ एवं शिशु संबंधी सेवाएं प्रदान करना और मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाना है। अभियान के तहत महिलाओं एवं किशोरियों को स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़ी समस्याओं एवं गैर संचारी रोग जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मुख कैंसर, स्तन एवं गर्भाशय

कैंसर, एनीमिया सिकलसेल रोग, टीबी, कुष्ठरोग आदि बीमारियों से बचाव के लिए स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाएंगी। इसके साथ ही गर्भवती महिलाओं की गुणवत्तपूर्ण प्रसव पूर्व जांच, किशोरियों की एनीमिया स्क्रीनिंग एवं उपचार, उमंग क्लिनिक पर रेफर करना, बच्चों का टीकाकरण सहित अनेक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाएंगी। अभियान के तहत नागरिकों को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए भी प्रेरित किया जाएगा। इसके लिए 17 सितंबर को विशेष शिविरों में ई-रक्तकोष पोर्टल पर रक्तदाताओं का पंजीयन किया जाएगा। इस अभियान में पंचायत एवं ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास, खेल एवं युवा कल्याण विभाग सहित अनेक विभागों, जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी।

स्वास्थ्य सेवाओं के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं : कलेक्टर

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जिले में एक भी अवैध क्लिनिक संचालित ना हो पाए इसके लिए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रामहित कुमार को विशेष निर्देश दिए गए हैं। प्रशासन ने स्पष्ट संदेश दिया है कि स्वास्थ्य सेवाओं के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसी नीति के तहत शुक्रवार को विकासखंड विदिशा के ग्राम बर्रो में प्रशासनिक टीम ने कार्रवाई करते हुए एक अवैध प्राइवेट क्लीनिक को सील कर दिया गया है। नटेरन के खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ हेमंत पंचोली ने बताया कि निरीक्षण के दौरान पाया गया कि क्लीनिक का संचालन श्री निवारन विश्वास द्वारा किया जा रहा था, किंतु उनके पास न तो आवश्यक पंजीयन दस्तावेज थे और न ही वैध अनुमति। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मौके पर ही पंचनामा तैयार किया और तत्काल सील की कार्रवाई की। कलेक्टर के निर्देश पर की गई इस कार्रवाई में स्वास्थ्य विभाग, राजस्व अमला और पुलिस बल की संयुक्त उपस्थिति रही। अधिकारियों ने स्पष्ट कहा कि अवैध क्लीनिक सीधे-सीधे ग्रामीणों के जीवन से खिलवाड़ करते हैं, इसे किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

प्रशासन ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इलाज के लिए केवल पंजीकृत और अनुमोदित संस्थानों पर ही भरोसा करें, ताकि किसी भी प्रकार की लापरवाही से बचा जा सके। यह कार्रवाई न सिर्फ एक अवैध क्लीनिक पर रोक है, बल्कि यह संकेत भी है कि जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को सुरक्षित और पारदर्शी बनाए रखने के लिए प्रशासन पूरी सजगता और सख्ती से काम करेगा।

विस्फोटक सामग्री,निर्माण, परिवहन एवं पटाखे विकय के लिए पार्टल पर ऑनलाइन एनओसी दी जायेगी

सीहोर (निप्र)। मध्यप्रदेश में व्यवसाय को सुलभ बनाने के उद्देश्य से विस्फोटक अधिनियम 1884 एवं विस्फोटक नियम 2008 तथा विस्फोटक (संशोधन) नियम 2019 के नियमों एवं शर्तों के अंतर्गत कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री बालागुरू के. ने विस्फोटक सामग्री, निर्माण, संधारण, परिवहन, विक्रय एवं चोरसा पटाखे विकय के लिए एनओसी, अनुज्ञप्ति से संबंधित चिन्हित 19 सेवा का एमपी ई-सर्विस पार्टल~ द्धह्लह्लश्च~//ह्यद्गह्म1द्बष्द्गह्य.द्वश्च.द्द्य1.द्बठ्ठ के माध्यम से पूर्णत~ ऑनलाइन प्रदाय किये जाने के लिए नवीन व्यवस्था प्रारंभ की गई है। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री बालागुरू के. ने जिले में दीपावली त्योहार वर्ष 2025 के अवसर पर आतिशबाजी विक्रय के लिए अस्थाई लायसेंस प्राप्त करने के इच्छुक आवेदन कर्ताओं द्वारा पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन एवं निर्धारित शुल्क का भुगतान 15 सितम्बर से 04 अक्टूबर 2025 तक किया जायेगा। आवेदनकर्ता को ऑनलाइन आवेदन पत्र चाही गई जानकारी के साथ संबंधित दस्तावेजों की स्केन प्रति भी ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड करनी होगी तथा एनओसी, अनुज्ञति के लिए निर्धारित शुल्क 500 रूपये कोष एवं लेखा कार्यालय के लेखाशीर्ष 0070-अन्य प्रशानिक सेवाएं 060 अन्य सेवाएं-103 विस्फोटक अधिनियम में ऑनलाइन किया जायेगा। समयवधि उपरान्त प्राप्त आवेदनों पर विचार नही किया जायेगा। सेवा को प्राप्त करने के लिये पात्र व्यक्ति की आयु न्यूनतम 18 वर्ष पूर्ण होनी चाहिए, न्यायालय द्वारा आपराधिक मामलों में दोष सिद्ध नहीं होना चाहिए तथा जिन्हें भारतीय नागरिक सुरक्षां सहिता 2023 के प्रावधान अन्तर्गत परिशांति कायम रखने और सदाचार के लिये बंध पत्र निष्पादित करने के लिय आदेश न दिया गया हो।

कलेक्टर ने विभिन्न विभागीय गतिविधियों की समीक्षा कर दिए आवश्यक निर्देश

सभी पात्र नागरिकों को दिलाया जाए स्वरोजगार योजनाओं का लाभ - कलेक्टर

समय पर वितरित की जाए विधायक एवं सांसद निधि से स्वीकृत राशि - कलेक्टर

सीहोर (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर श्री बालागुरू के. की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने जिले में संचालित विकास एवं जनकल्याण से जुड़ी गतिविधियों की समीक्षा की और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने उद्यम विभाग, श्रम विभाग, शहरी विकास अभिकरण सहित अन्य विभागों की गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा की और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राहियों तक समय पर पहुँचे, इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। बैठक में उद्योग विभाग की समीक्षा के दौरान कलेक्टर श्री बालागुरू

के. ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले के अधिक से अधिक पात्र नागरिकों को स्वरोजगार योजनाओं का लाभ दिलाया जाए। उन्होंने कहा कि स्वरोजगार से जुड़कर लोग आत्मनिर्भर बनते हैं और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं। उन्होंने जिला योजना अधिकारी को निर्देशित किया कि विधायक एवं सांसद निधि से स्वीकृत राशि को समय पर वितरित किया जाए ताकि इस राशि से होने वाले विकास कार्य निर्धारित समय-सीमा में प्रारंभ और पूर्ण हो सकें। उन्होंने श्रम विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में कार्यरत श्रमिकों को श्रम कल्याण योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ दिलाया जाए। निर्माण श्रमिकों की पंजीयन प्रक्रिया में तेजी लाई जाए और उन्हें स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा संबंधी योजनाओं से जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि श्रमिक वर्ग समाज की महत्वपूर्ण नींव है, ऐसे में उनकी भलाई के लिए शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को गंभीरता से लागू किया जाए। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने अधिकारियों से कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और विकास कार्यों की गति को और तेज़ करें ताकि जिले के नागरिकों को शासन की योजनाओं का त्वरित लाभ मिल सके।

डॉ. यादव ने की कृषि विभाग की समीक्षा

कृषि आधारित उद्योगों के प्रोत्साहन के लिए लगाएं बहुउद्देशीय कृषि मेले: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषि आधारित उद्योगों के प्रचार-प्रसार के लिए कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्स्य पालन विभाग द्वारा आपसी तालमेल से बहुउद्देशीय कृषि मेले आयोजित किए जाएं। इन मेलों में किसानों को उनकी फसल सहित अन्य सहायक उत्पादों के लाभयुक्त विक्रय एवं मार्केटिंग की जानकारियां भी दी जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि धार जिले के भैंसोला गांव में निर्मित हो रहे पीएम मित्रा पार्क से प्रदेश के कपास और रेशम उत्पादक किसानों की जीवन रेखा बदल जाएगी। उन्होंने कहा कि पीएम मित्रा पार्क से प्रदेश के 6 लाख से अधिक कपास उत्पादक किसानों को लाभ मिलने के साथ 1 लाख लोगों को प्रत्यक्ष एवं 2 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि पीएम मित्रा पार्क में निवेश करने के लिए बड़ी-बड़ी कंपनियों ने रुचि व्यक्त की है। जिस तेजी से पीएम मित्रा पार्क में निवेश के लिए कंपनियां आ रही हैं, यह हमें और बेहतर करने के लिए उत्साहित करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार की देर रात मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग की गतिविधियों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क बनने से मालवा क्षेत्र के किसानों द्वारा उत्पादित कपास की खपत लोकल लेवल पर ही हो जाएगी। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा और रॉ-मैटेरियल सप्लाई की एक पूरी चैन तैयार होगी। पीएम मित्रा पार्क प्रदेश के किसानों के लिए वरदान की तरह है। प्रदेश में निवेश करने के इच्छुक सभी निवेशकों का सरकार पलक पावड़े बिछाकर स्वागत करेगी। हम निवेशकों को सभी जरूरी मदद और सहयोग भी उपलब्ध कराऐंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सार्वजनिक/लोक उपक्रमों में निजी भागीदारी से ही देश का विकास संभव है। पीएम मित्रा पार्क में निवेशकों द्वारा किए जाने वाले पूंजी निवेश से जितनी उच्च कोटि के परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं, हर संभव प्रयास कर हम यह करके दिखाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क का प्रचार-प्रसार इस तरह किया जाए कि प्रदेश में मौजूद सभी प्रकार के कृषि आधारित उद्योग को भी भरपूर प्रोत्साहन मिले।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में कुल 7 पीएम मित्रा पार्क मंजूर किए गए हैं। जहां दूसरे राज्य पीएम मित्रा पार्क की स्थापना के लिए प्राथमिक तैयारियां ही कर रहे हैं, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से हमारी सरकार 17 सितंबर को धार जिले के भैंसोला गांव में देश के पहले और सबसे बड़े पीएम मित्रा पार्क का भूमिपूजन कराने जा रही है। उन्होंने कहा कि हम इसे देश का मॉडल पीएम मित्रा पार्क बनायेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क प्रदेश की कॉटन इंडस्ट्री को पुनर्स्थापित करेगा। यहां कपास से धागा, धागे से कपड़ा और रेडीमेड गारमेंट्स, होजियरी आइटम्स सहित ऑल वेदर वियरिंग्स तैयार किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क की स्थापना के बारे में प्रदेश के किसानों को हर तरीके से जानकारी दी जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हर्ष व्यक्त करते हुए बताया कि देश के सबसे बड़े इंडस्ट्रियल पार्क (पीएम मित्रा पार्क) में भूमिपूजन होने से पहले ही लैंड एलॉटमेंट की कार्रवाई पूरी कर ली गई है। पीएम मित्रा पार्क में भूमि आवंटन के लिए 114 कंपनियों के आवेदन मिले थे। इन कंपनियों ने पीएम मित्रा पार्क में निवेश करने की प्रबल रुचि व्यक्त कर लैंड अलॉटमेंट के लिए के लिए आवेदन किया है। आवेदन करने वाली कंपनियों में से 91 कंपनियों के आवेदन मंजूर कर इन्हें लैंड एलॉटमेंट कर दिया गया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि पीएम मित्रा पार्क में लैंड अलॉटमेंट कमेटी द्वारा विभिन्न कंपनियों और निर्माण इकाइयों को कुल 1294.19 एकड़ भूमि आवंटित करने की अनुशंसा कर दी गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क में अधोसंरचना विकास के लिए सभी जरूरी निर्माण कार्य जारी हैं। इन निर्माण कार्यों के साथ लैंड अलॉटमेंट पाने वाली कंपनियों द्वारा अपने कारखाने और निर्माण इकाइयां भी समानांतर रूप से निर्मित की जाएंगी। इससे आने वाले एक से डेढ़ साल के दौरान ही निवेशक कंपनियों की निर्माण इकाइयों में उत्पादन भी प्रारंभ हो जाएगा।

बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव वन, पर्यावरण श्री अशोक वर्णवाल, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय एवं ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई, सचिव किसान कल्याण एवं कृषि विकास श्री निशांत बरवड़े, आयुक्त जनसंपर्क श्री दीपक कुमार सक्सेना सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

पुलिसकर्मी को कार से मारी टक्कर, उछलकर बोनट पर गिरा

ग्वालियर में नाबालिग ने दूर तक घसीटा, चेकिंग से बचने दौड़ा दी थी कार

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में पुलिस चेकिंग से बचने के लिए एक नाबालिग ने कई लोगों की जान खतरे में डाल दी। उसने पुलिस को देखकर अचानक कार दौड़ा दी। कार को रोकने की कोशिश कर रहे एक प्रधान आरक्षक उसकी चपेट में आ गए। वह कार की टक्कर से उछलकर बोनट पर आ गिरे। नाबालिग इसी हालत में कार भगाता रहा।

हालांकि कुछ ही दूर पर पुलिस ने उसे घेरकर कार रुकवाई और नाबालिग को हिरासत में ले लिया। ये घटना शनिवार रात करीब 9.30 बजे बहोड़ापुर चौराहे की है। इस घटना में घायल हेड कॉन्स्टेबल रामनिवास गुर्जर को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इधर, पुलिस ने नाबालिग कार चालक पर गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर लिया है। बता दें कि ग्वालियर में 3 दिन के अंदर इसी तरह की ये दूसरी घटना है। दो दिन पहले पड़ाव थाना स्थित रेसकोर्स रोड पर ऐसा ही हादसा हुआ था।

घायल हवलदार रामनिवास गुर्जर

टक्कर से हवा में उछला, फिर बोनट पर जा गिरा- कार रोकने के दौरान टक्कर लगते ही रामनिवास गुर्जर हवा में उछला और कार के बोनट पर आकर गिरा। इसके बाद कार चालक जवान को 25 से 30 फीट तक अपने साथ घसीटता हुआ ले गया। इस दौरान पुलिस जवानों ने उसे घेरा और पकड़ लिया, लेकिन कार रोकने पर हेड कॉन्स्टेबल झटके से सड़क पर गिरा और घायल हो गया।

घटना के समय कार को एक नाबालिग लड़का चला रहा था और उसके पास वाली सीट पर उसका हम उम्र बैठा था। बताया जा रहा है कि आरोपी नाबालिग ट्रांसपोर्ट नगर लक्ष्मीपुरम का निवासी है। उसकी उम्र 17 साल है। उसके दादा पुलिस विभाग से सेवानिवृत दरोगा हैं।

दो दिन पहले पड़ाव में सिपाही को बोनट पर लटकाकर घसीटा था- यह पहली घटना नहीं है जिसमें पुलिस वालों के साथ ऐसा हुआ है। अभी दो दिन पहले ही एक नाबालिग कार चालक ने पड़ाव इलाके में काली फिल्म की चेकिंग कर रहे पुलिस जवान को कार से टक्कर मारी और बोनट पर लटका कर दूर तक घसीटा था। इतना ही नहीं कार चालक ने आधा दर्जन से ज्यादा वाहनों को टक्कर मारी थी। जिसमें पुलिस जवान अतुल शर्मा समेत चार लोग घायल हुए थे। उस घटना के बाद अब बहोड़ापुर में यह घटना हुई है।

सर ! मेरा बॉयफ्रेंड फोन नहीं उठा रहा, युवती ने 112 डायल कर की शिकायत

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा जिले से ऐसा मामला सामने आया जिसने सभी को हैरान कर दिया। जुन्नारदेव थाने की डायल 112 टीम को बुधवार रात एक असामान्य कॉल आया। युवती ने पुलिस से शिकायत की थी। फोन पर युवती ने कहा, सर! मेरा बॉयफ्रेंड फोन नहीं उठा रहा। उसने आखिरी बार कहा था कि सुसाइड कर लूंगा। अब कॉल रिसीव ही नहीं कर रहा। इस कॉल के बाद पुलिसकर्मी सकते में आ गए और तत्काल पड़ताल में जुट गए।

पुलिस ने युवक के बारे में जानकारी जुटाई। तब इसमें और चौंकाने वाली बात सामने आई। जब पुलिस युवती के बताई जगह पर पहुंची तो पता चला कि गांव में उस नाम का कोई भी युवक नहीं रहता है। वहीं, युवक का मोबाइल नंबर ट्रेस करने की कोशिश की तो वह भी बंद आ रहा था। पुलिस को तब और हैरानी हुई जब उन्होंने शिकायत करने वाली युवती का नंबर डायल किया तो वह भी बंद आ रहा था। इससे पुलिस और उलझन में पड़ गई। टीआई राकेश बघेल ने बताया कि रात करीब 8 से 9 बजे के बीच कॉन्स्टेबल राजपाल के पास यह कॉल आया। कॉल करने वाली युवती ने खुद को जुन्नारदेव के कोटाखारी गांव की निवासी बताया।

दतिया में बेटे का शव देखकर पिता ने भी तोड़ा दम, गांव में पसरा मातम

दतिया (नप्र)। बेटे के शव को देखकर पिता ने भी दुनिया को अलविदा कह दिया। यह दर्दनाक घटना थरेट क्षेत्र के ग्राम सेंथरी में शनिवार को घटित हुई। जहां युवक आनंद पाल उर्फ दीपू का शव शनिवार शाम गांव सेंथरी लेकर स्वजन पहुंचे तो उसे देख पिता रामवरन पुत्र पंचम बघेल को गहरा सदमा लगा और उनकी तबीयत बिगड़ गई। घर के लोग उन्हें लेकर इंदरगढ़ अस्पताल दौड़े। जहां डॉक्टर ने रामवरन को मृत घोषित कर दिया। इस घटना के बाद पूरे गांव में मातम सा छा गया।

बिना पोस्टमार्ट्म कराए सीधे सेंथरी लेकर आ गए परिजन- पिता पुत्रों की अंतिम यात्रा को देखकर ग्रामीणों की आंखें भी नम हो गई। जानकारी के अनुसार सेंथरी के रोड मोहल्ला निवासी युवक आनंद पाल मुंबई में आयशर ट्रक पर ड्राइवरी करता था। जहां गत सात सितंबर को एक सड़क दुर्घटना में वह गंभीर रुप से घायल हो गया। स्वजन को जब खबर लगी तो वह उसे उपचार के लिए ग्वालियर अस्पताल लेकर आ गए। जहां युवक का उपचार चल रहा था। शनिवार सुबह उसने दम तोड़ दिया तो स्वजन आनंद का शव बिना पोस्टमार्ट्म कराए सीधे सेंथरी लेकर आ गए।

शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्ट्म करवाया

इधर घर से पिता-पुत्र के शवों को मुक्तिधाम ले जाकर अंतिम संस्कार की तैयारी की जा रही थी। तभी थरेट पुलिस मौके पर पहुंच गई। जिसने दुर्घटना में घायल हुए युवक आनंद की मौत के बाद ग्वालियर में पोस्टमार्ट्म न कराकर शव सीधे गांव लेकर आ जाने पर कार्रवाई करते हुए युवक के शव को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्ट्म के लिए इंदरगढ़ भिजवाया।

जबलपुर में पिता के सिर पर मारी हथौड़ी, काटा गला

बेटे को पसंद नहीं था काम पर जाना, बार-बार टोकने से नाराज होकर कर दी हत्या

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक 82 वर्षीय बुजुर्ग की उनके ही बेटे ने बेरहमी से हत्या कर दी। बुजुर्ग अपने बेरोजगार बेटे को बार-बार काम करने के लिए टोकते थे। इससे गुस्साए बेटे ने अपने पिता के सिर पर पहले हथौड़ी मारी। फिर उस्तरे से उनका गला काट दिया। घटना 11 सितंबर की रात की है।

पिता की मौत के बाद घर पर ताला लगाकर बेटा फरार हो गया। 2 दिन बाद 13 सितंबर को घर से बदबू आने लगी तो पड़ोसियों ने माढोताल पुलिस को सूचना दी।

मौके पर पहुंची पुलिस ने ताला तोड़कर देखा गया तो अंदर बुजुर्ग अजीत सिंह लाश पड़ी थी। बेटा अमरजीत सिंह गायब था।

14 सितंबर (रविवार) को उसे रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस का दावा है कि वह फरार होने की कोशिश में था। पुलिस ने आरोपी बेटे को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया है।

रात में पड़ोसी ने दी सूचना

दरअसल, 13 नवंबर की रात 2 बजे पड़ोस में रहने वाले मंगल सिंह ने माढोताल पुलिस को सूचना दी। उन्होंने बताया कि मदर टेरेसा नगर में शिव शक्ति हनुमान मंदिर के पास रहने वाले पड़ोसी अजीत सिंह के घर से बदबू आ रही है। उनका बेटा भी गायब है। सीएसपी भगत सिंह गठोरिया, टीआई नीलेश दोहरे और पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे, जहां देखा कि घर के बाहर ताला लगा हुआ है।

आसपास पूछताछ की तो पता चला कि 2 दिन से घर पर कोई हलचल नहीं हुई है। अभी बदबू आ रही है। पुलिस ने घर का ताला तोड़ा, तो देखा कि अंदर अजीत सिंह की लाश पड़ी हुई है, जिनके सिर और गले में निशान हैं। कार्यवाही कर अज्ञात के खिलाफ धारा 103 (1), 238 का प्रकरण पंजीबद्ध कर लिया।

दो बेटे हैं, 15 साल पहले पत्नी की मौत

माढ़ोताल थाना पुलिस ने मामले की जांच शुरू की तो आसपड़ोस के लोगों ने बताया कि अजीत सिंह के दो बेटे हैं। पत्नी की 15 साल पहले मौत हो गई। अजीत सिंह प्रवचन किया करते थे। उम्र अधिक होने के कारण कुछ सालों से घर पर ही रहते थे। बेटा अमरजीत सिंह पहले मेडिकल स्टोर में काम करता था। कुछ माह से वह कोई काम नहीं कर रहा था। जिसके चलते अकसर पिता और पुत्र के बीच विवाद होता था। 13 सितंबर की रात 2 बजे पड़ोस में रहने वाले मंगल सिंह ने सूचना दी कि पड़ोस के मकान से बदबू आ रही है। वहां अजीत सिंह अपने बेटे अमरजीत के साथ निवास करते हैं। उनसे फोन लगाकर संपर्क किया लेकिन फोन लगातार बंद आ रहा है।

गले, सिर और माथे पर चोट के निशान

पुलिस ने घर का दरवाजा तोड़कर देखा तो अजीत सिंह घर के सामने वाले ही कमरे में बेड पर मृत अवस्था में पड़े हुए थे। गले, सिर और माथे पर चोट का निशान थे। उनका खून निकला हुआ था। मौके पर आरोपी अमरजीत को गिरफ्तार कर हत्या में प्रयुक्त हथौड़ी, उस्तरा और मोबाइल जब्त कर लिया है। आरोपी ने इसे अपने घर में छिपाकर रखा था।

कही-सुनी

विकासशील होंगे छत्तीसगढ़ के नए मुख्य सचिव ?

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

चर्चा है कि 1994 बैच के आईएएस विकास शील छत्तीसगढ़ के नए मुख्य सचिव होंगे। बताते हैं सरकार ने विकास शील की राज्य में वापसी के लिए कदम उठाना शुरू कर दिया है। आईएएस विकास शील एशियाई विकास बैंक (ADB) के कार्यकारी निदेशक के रूप में मनीला में तैनात हैं। उन्हें 6 जनवरी 2024 को इस पद पर नियुक्त किया गया था। इससे पहले, वह जल शक्ति मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के पद पर थे। विकास शील छत्तीसगढ़ में स्कूल शिक्षा, खाद्य और सामान्य प्रशासन जैसे विभाग संभाल चुके हैं। वे कई जिले में कलेक्टर भी रहे हैं। विकास शील केंद्र सरकार में सचिव के पद के लिए इम्पैनल हो चुके हैं। विकास शील जून 2029 में रिटायर होंगे। एक अक्टूबर को चीफ सेक्रेटरी बनते हैं तो उन्हें करीब पौने चार साल का कार्यकाल मिलेगा। वर्तमान मुख्य सचिव अमिताभ जैन का सेवा विस्तार 30 सितंबर को समाप्त हो रहा है। अमिताभ जैन का कार्यकाल 30 जून को समाप्त हो गया था, उन्हें तीन महीने की सेवावृद्धि दी गई। बताते हैं विकास शील केंद्र सरकार की पसंद हैं। केंद्र सरकार ने भाजपा शासित राज्य ओड़िशा, राजस्थान और मध्यप्रदेश में भी अपनी पसंद के अफसर को चीफ सेक्रेटरी बनाकर भेजा। कहा जा रहा है कि विकास शील के चीफ सेक्रेटरी बनने के बाद 1991 बैच की आईएएस रेणु पिल्लै और 1992 बैच के सुब्रत साहू मंत्रालय से बाहर हो जाएंगे। वैसे भी अभी रेणु पिल्लै माध्यमिक शिक्षा मंडल और व्यापम की अध्यक्ष हैं। मंत्रालय में उनके पास साइंस एंड टैक्नालाजी विभाग है। सुब्रत साहू एसीएस सहकारिता के साथ प्रशासन अकादमी के महानिदेशक हैं। 1994 बैच की आईएएस ऋचा शर्मा वर्तमान में एसीएस वन एवं पर्यावरण और 1994 बैच के मनोज पिंगुआ एसीएस गृह और जेल हैं। माना जा रहा है कि विकास शील के मुख्य सचिव बनने के बाद उनकी पत्नी आईएएस निधि छिब्बर भी छत्तीसगढ़ आ सकती हैं। निधि छिब्बर 1994 बैच की आईएएस हैं।

एक आईएफएस नौकरी छोड़ने के मूड में

कहते हैं कि एक सीनियर आईएफएस अफसर इन दिनों बड़े खफा हैं और इस्तीफे के मूड में हैं। बताते हैं कि वे अपनी मनपसंद पोस्टिंग चाहते थे, पर ऐसा नहीं हुआ। वे जिस पोस्टिंग के इच्छुक थे, उस पद पर किसी दूसरे अफसर की पोस्टिंग कर दी। सीनियर आईएफएस उस पद के रिक्त होने का इंतजार कर रहे थे। खबर है कि मनपसंद पोस्टिंग नहीं मिलने पर आईएफएस ने एक वरिष्ठ आईएएस अफसर को अपने दुखड़े के साथ खरी-खरी कह दी। वरिष्ठ आईएएस अफसर ने आईएफएस को समझाइस दी और सांत्वना तो दिया है, पर आईएफएस अफसर के मन को तसल्ली नहीं मिली। माना जा रहा है कि काबिल होने के बाद भी राजनीतिक समीकरण के चलते आईएफएस को अपने पसंद की पोस्टिंग नहीं मिली।

आधे दर्जन से ज्यादा आईएएस ईडी के निशाने पर

कहते हैं कि डीएमएफ घोटाले और कृषि उपकरणों की सप्लाई के मामले में आधे दर्जन से ज्यादा आईएएस ईडी के निशाने पर हैं। ईडी ने भूपेश सरकार के जमाने में कृषि उपकरणों की सप्लाई के मामले में पिछले दिनों कुछ सप्लायरों के यहां छापा मारा था। बताते हैं ये आईएएस अफसर भूपेश सरकार के समय अलग-अलग जिलों की कमान संभाले हुए थे। चर्चा है कि भूपेश बघेल की सरकार के समय कांग्रेस नेता रामगोपाल अग्रवाल, अफसर अनिल टुटेजा और सौम्या चौरसिया से जुड़े लोग ही ज्यादा सप्लाई के धंधे में लगे थे। अभी अनिल टुटेजा जेल में हैं। सौम्या जमानत पर है और रामगोपाल लापता हैं, पर ईडी के निशाने पर हैं।

मंत्री और अध्यक्ष में टकराव

चर्चा है कि राज्य में एक मंत्री जी और उनके अधीन आने वाले एक निगम के अध्यक्ष के बीच आजकल जबर्दस्त जंग छिड़ी हुई है। बताते हैं जंग का कारण हिस्सा-बंटवारा को लेकर है। खबर है कि पहले फील्ड से सीधे मंत्री जी तक सब कुछ पहुंचता था। अब अध्यक्ष जी ने अपना हक जताना शुरू कर दिया है। सुनने में आ रहा है कि अध्यक्ष जी ने फील्ड के अफसरों के लिए टारगेट फिक्स कर दिया है। इससे फील्ड के अफसर भारी परेशान बताए जाते हैं। कहते हैं फील्ड के अफसर अपनी समस्या लेकर निगम के एक आला अफसर से मिले और मार्गदर्शन माँगा। आला अफसर ने मार्गदर्शन की जगह दोनों को साधने की सलाह दे दी। हवा है कि फील्ड के अफसर मंत्री और अध्यक्ष को खुश करने के लिए धंधा-पानी करने वालों पर भार डालने लगे हैं।

मंत्री जी के गड्ढे खोदने में लगे सांसद जी

कहते हैं एक सांसद जी राज्य के एक मंत्री के पीछे पड़ गए हैं और उनके पुराने मामले निकालने में लगे हुए हैं। वैसे राज्य में विष्णुदेव साय की सरकार बनने के बाद से दोनों नेताओं में छत्तीस का आंकड़ा है। दोनों एक-दूसरे को काटने में लगे रहते हैं। मंत्री जी नए - नवेले हैं, पर हाईकमान के समर्थन से सांसद के पर कतरने में लगे रहते हैं, तो सांसद जी अपने अनुभव और संपर्क से मंत्री जी की राह में रोड़ा बिछाने का काम कर देते हैं। वैसे कहा जाता है कि मंत्री सुपर वीआईपी बन गए हैं और भाजपा नेताओं के फोन तक नहीं उठाते। इसको लेकर नेता संगठन से कई बार शिकायत कर चुके हैं। इसके बाद भी नेताओं को अब तक कोई राहत नहीं मिल पाई है। मंत्री जी की कार्यशैली से कई नेता नाराज हैं, तो सांसद जी को मोर्चा खोलने का अवसर मिल गया। अब देखते हैं जंग कहा तक जाती है और पटाक्षेप कैसे होता है।

बिहार चुनाव के बाद कांग्रेस में फेरबदल

कहते हैं कि बिहार विधानसभा चुनाव के बाद छत्तीसगढ़ कांग्रेस में व्यापक फेरबदल होगा। कहा जा रहा है कि नए चेहरों को आगे लाया जाएगा। खबर है कि छत्तीसगढ़ कांग्रेस में इन दिनों नेताओं के बीच काफी खींचतान मची हुई है। नेता अपना अस्तित्व बचाने के लिए एक-दूसरे पर वार करने से भी नहीं चूक रहे हैं। कुछ नेता अपनी मर्जी चला रहे हैं । नेतागण जुबान में जो आ रहा है, बोल दे रहे हैं या बड़े नेता स्वयंभू हो गए हैं। चर्चा है कि नवंबर के बाद सर्जरी होगी। राहुल गांधी का पूरा ध्यान बिहार में होने से छत्तीसगढ़ उनकी प्राथमिकता में नहीं है, फिर यहाँ जल्दी चुनाव भी नहीं है। कहा जा रहा है कि राहुल गांधी की टीम छत्तीसगढ़ को आव्जर्व कर रही है। केवल समय का इंतजार है। समय आते ही व्यापक बदलाव हो जाएगा।

एक मंत्री सचिव से खफा

खबर है कि राज्य के एक पावरफुल मंत्री अपने एक विभागीय सचिव से खफा हैं। बताते हैं कि मंत्री को अपने विभागीय सचिव की कार्यशैली नहीं भा रही है। चर्चा है कि मंत्री जी ने इसकी शिकायत मुख्यमंत्री के साथ हाईकमान से भी की है। सुनने में आ रहा है कि सचिव महोदय को मंत्री जी की नाराजगी का अहसास हो गया है और वे खुद भी दूसरे विभाग में जाने के लिए प्रयासरत हैं। अब देखिए क्या होता है। वैसे पहले सचिव महोदय के पास दो महत्वपूर्ण विभाग थे। अब एक ही विभाग है। जनता से जुड़ा विभाग होने के कारण मंत्री जी और सचिव महोदय की लाइन-लेंथ नहीं मिल पा रही है।

छत्तीसगढ़ का कोई भाजपा नेता बनेगा राज्यपाल ?

महाराष्ट्र के राज्यपाल का पद खाली हो गया है। सीपी राधाकृष्णन ने उपराष्ट्रपति पद की शपथ ले ली है। सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बनाए जाने के बाद महाराष्ट्र के राज्यपाल के लिए डॉ रमन सिंह का नाम चर्चा में था। छत्तीसगढ़ के 15 साल के मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह अभी विधानसभा अध्यक्ष हैं। छत्तीसगढ़ के भाजपा नेता रमेश बैस महाराष्ट्र के राज्यपाल रह चुके हैं। ऐसे में आगे छत्तीसगढ़ भाजपा के किसी नेता को क्या संवैधानिक पद मिल सकता है, इसको लेकर सुगबुगाहट है। छत्तीसगढ़ के कई वरिष्ठ विधायक बिना ताज के हैं। मंत्री बनने की रेस से बाहर हो गए हैं। कुछ पुराने सांसद भी घर बैठे हैं। ऐसे में छत्तीसगढ़ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की नजरें इनायत हो पाएगी क्या, यह बड़ा सवाल है। प्रधानमंत्री 31 अक्टूबर और एक नवंबर को (दो दिन) छत्तीसगढ़ में ही रहने वाले हैं, अब देखते हैं आगे क्या होता है।

एसपी साहब के जलवे

कहते हैं छत्तीसगढ़ के एक एसपी साहब अपने रुतबे का इस्तेमाल कर अपने जिले के ही एक बड़ी कंपनी में अपनी पत्नी और साले साहब को मोटी तनख्वाह पर नौकरी दिलवा दी है। एसपी साहब का जिला गृह मंत्री जी के जिले से सटा हुआ है। अब एसपी साहब जिले में कितने दिन रहते हैं, यह शायद उन्हें भी नहीं पता, पर जब तक जिले में रहते हैं, तब तक बहती गंगा में हाथ तो धो ही सकते हैं। कहा जाता है कि जिले में भले उद्योग नहीं हैं, पर खनिज संसाधन तो भरपूर हैं। खबर है कि गौण खनिज से ही एसपी साहब लाल हैं। चर्चा है कि एसपी साहब की दसों अंगुली घी में होने के बाद पत्नी और साले को प्राइवेट कंपनी में नौकरी में रखवाने की क्या जरुरत पड़ गई ?